

Vol. II  
No. 14

Monday,  
6th September, 1954



# HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY DEBATES

## Official Report

### PART II—PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTIONS AND ANSWERS

#### CONTENTS

	PAGE
L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill, 1954—2nd reading concluded .. ..	655-698
L. A. Bill No. XXI of 1954, the Cotton Ginning and Pressing Factories (Hyderabad Amendment) Bill, 1954—1st reading not concluded .. ..	698-706
Announcements by the Chair .. ..	707

*Note.—\**at the commencement of the speech denotes confirmation not received.

2 -

# THE HYDERABAD LEGISLATIVE ASSEMBLY

*Monday, the 6th September, 1954*

The House met at Half Past Two of the Clock

[MR. SPEAKER IN THE CHAIR]

## QUESTIONS AND ANSWERS

(See Part I)

### L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill 1954.

श्री. माधवराव घोनसीकर (अुद्गीर-जनरल) :— अध्यक्ष महोदय, जेलखाने के संबंध में जो मसविदा हाआस के सामने पेश हुआ है असके बारे में अस तरफ के आनरेबल मेंबरों ने जो अतेराजात पेश किये हैं अनुसे वास्तव में ऐसा मालूम होता है कि अन्होनें इस मसविदे को अच्छी तरह से नहीं पढ़ा है। अन्सानियत के नाम पर गुनहगारों को सहूलतें मुहैया करके वे मेहमानदारी

[Shri Anna Rao Ganmukhi (Chairman) in the Chair]

पैदा करना चाहते हैं। न मालूम आनेवाले जमाने को वे किस तरफ ले जाना चाहते हैं। इस मसविदे को पूरी तरह पढ़ने के बाद मालूम होगा कि अन्सानियत के खिलाफ से दूर कैदियों के साथ कोओी सुलूक किया जायेगा औसी कोओी बात अंतके अंदर नमूद नहीं की गयी है। अलबत्ता एक चीज है जो ताजियाने की सजा के संबंध में कही जा सकती है। लेकिन असके बारे में अंश्र के मेंबरों ने भी अतेराज किया है और गवर्नरमेंट से अस्तदुआ की है कि असको इसमें से हजप किया जाय। में भी एक जमाने में परभनी जेल के अंदर रह चुका हूँ। वहां मैंने अनुभव किया है कि एक कैदी को १२ ताजियाने की सजा दी गयी थी। दूसरे दिन चार बजे असको ताजियाने मारे जानेवाले थे। असने पहले वहां के तमाम अफसरों और लोगों से यह दरखास्त की थी कि मुझे दो साल की सजा दीजिये लेकिन यह ताजियाने न मारे जायें। इससे मालूम होता है कि इस सजा से अन्सान कितना घबरा जाता है। १९२७ में सत्याग्रह के सिलसिले में कुछ सियासी कैदियों को भी ताजियाने लगाये बत्त मैंने सुद अपनी आंखों से देखा है। जिसको ताजियाने मारे जाते थे वह दो बेत खाते ही होश में नहीं रहता था। तीन कैदियों को जिनमें से मैं भी एक था, मैंने देखा कि बेत भारते ही वे बेहोश हो जाते थे। मैं मूँहर आफ दि बिल से कहूँगा कि इस सजा को इसके अंदर से निकाल दिया जाय। मुमकिन है कि मूँहर आफ दि बिल इस पर गौर करेंगे और इसको निकाल देंगे। इसके सिवा जो अतेराज अपोजिशन की तरफ से अठाये गये हैं मैं समझता हूँ कि वे महज अतेराज के लिये अतेराज हैं। एक सदस्य ने तो मजाक की बात कही। जेल के अंदर जो लोग कानून की खिलाफ वर्जी करते हैं अनुके लिये यहां सजावें रखी गयी हैं। इस सिलसिले में वहां के कैदियों को जो सजावें देनेवाले हैं वे वहां के ओहदेदार होते हैं जो जुल्म करते हैं। अन्हीं के हाथ में ये अधिकार दिये जायें तो वे गजब

ढायेंगे। आनरेवल में बरने सुझाया कि अिसके लिये वहाँ के कैदियों की ओक पंचायत मुकर्रर की जाय और असके सुपुर्द अधिकार किये जायें कि कौनसी सजा किस बक्त दी जानी चाहिये। यह तो एक मजाक सा हो गया। अिसका मतलब यह होगा कि कैदखाने में किसी की निगरानी की ज़रूरत नहीं है, औह देदारों की ज़रूरत नहीं है, रूल्स की ज़रूरत नहीं है और डिसिप्लिन की भी ज़रूरत नहीं है। जो लोग जुर्म करके पहले से वहाँ जाकर बैठे हैं औसे लोगों के हाथ में सजा का तसफिया करने के अधिकार दिये जायें तो वे अपने दोस्तों के साथ किस तरह का अिन्साक करेंगे अिसको सोचा जा सकता है और अिस तरह से अनुके हाथ में अधिकार देना भी किस तरह बाजी हो सकता है, यह भी एक सवाल है। गनीमत समझना चाहिये कि जो लोग बाहर रहकर चौरी करते हैं वे पकड़े जाने पर अनुको भी सजा देने के लिये यह नहीं सुझाया गया कि जितने औसे लोग चौरी या डकैती करनेवाले बाहर के हैं अनुकी ओक पंचायत मुकर्रर की जाय और अनुके सामने औसी चीजें फैसले के लिये रखी जायें। जहाँ तक कैदियों को अिन्सान बनाने का सवाल है वहाँ तक हम दोनों तरफ के में बरन मुत्तफिक हैं, लेकिन जो शख्स समाज में ओक नागरिक की हैसियत से न रहते हुए समाज को दरहम-बरहम कर देता है अुसको अिन्सान बनाने के लिये सीधा बनाना ज़रूरी हो जाता है और जिस हद तक अुसका गुनाह है अुस हद तक अुसको सजा भी देना लाजमी हो जाता है। अिन्सान के नाते अुसके साथ भी सुलूक करना चाहिये यह सही है। लेकिन जो अिन्सानियत से बहुत नीचे गिर गया है और अिन्सानियत की पर्वाह भी नहीं करता, अुसको सीधे रास्ते पर लाने के लिये साम, दाम, दंड और बेत का अपयोग करना ज़रूरी हो जाता है। अिसलिये जेल की डिसिप्लिन की खिलाफवर्जी करनेवालों के लिये जो सजाओं यहाँ रखी गयी हैं वह तो बहुत ही सहूलत की सजाओं रखी गयी हैं औसा में समझता हूँ। ताजियाने की ओक ही औसी सकत सजा है जिसको हम दोनों तरफ के लोग निकालने की कोशिश करेंगे। लेकिन जेल के अंदर हमें किसी हालत में डिसिप्लिन रखना चाहिये और जो लोग अनुकी खिलाफवर्जी करेंगे अनुको ये सजाओं भुगतानी पड़ेंगी। और अनुको अिन्सान बनकर बाहर आना चाहिये। जिन चंद अल्काज के साथ में अपनी तकरीर खत्म करता हूँ।

شُری آرٹिले - رائچندرा رीड़ी (रामानू जैन) :- مسٹر اسپिकर सर मैं प्रेर्णस ब्ल के बारे में तल्ली ज़ियान मैं बोलना चाहता था लेकिन ऐवान के بعض अरकान खास तरह पर म्बरांचार अफ दी ब्ल मिरी ज़ियान कोन्हीं जाते अस्थै मिन अर्दो ज़ियान मैं बोलून गा - मैं पहली मर तबे अस्पिली फ्लोर पर अर्दो मैं बोल रहाहून अस लैर ज़ियान को नह दिकहीं ब्लक्के मिर्हे खिलात पर गुर फ्रिमानीं - अस प्रेर्णस ब्ल को प्रेष करते हो थे म्बरांचार अफ दी ब्ल ने अस की बहत تعریف की और अन का कहना था के ये एक बहत प्रोग्रेसियो ब्ल हे और अस से قیدियों को बहत सी स्थेलतिन मन्त्र वाली हीं - मगर ये ब्ल फ़ि الحقیقت एसा नहीं हे - अस ब्ल पर تائید और ख़الफत मैं कहती हो से त्रियरी बन्चें और अप्रियेन पार्टी की तरफ से अन्विल म्बरास ने अनी राई का अध्यार किया हे - लेकिन मैं सब से प्ले म्बरांचार अफ दी ब्ल से बोचेहा चाहता हूँ के अस ब्ल की तियारी के وقت वह कॉन्सी ब्नियादिन तहीं जो अन के सामने तहीं - अन का نقطे नظر किया था - आया ये एक और बिजल ब्ल हे या चैले से जो ब्ल तहा अस की हो ज्हो लफ़ظ ब्लक्ट करके अस को एयान के सामने रक्हा गया हे - मैं सम्झेहा हूँ के ये स्ट्रैल प्रेर्णस एक्ट की पूरी पूरी तरफ़ है - ये स्ट्रैल एक्ट हारे बाप दादा के ज़ियाने का हे -

یہ اوس وقت کا ہے جب کہ گورنے حکمرانوں کی حکومت تھی۔ یہ بل مٹھی بھر سامراجیوں نے ہمروی جنگ آزادی کی تحریک کو دبانے کے لئے بنایا تھا۔ انگریزوں کے جو چائے والے غلامی ذہنیت رکھنے والوں سے تیار کردہ بل کو پیش کر کے ہمارے ممبرانچارج آف دی بل بڑی شان اور نصر کے ساتھ یہ کہتے ہیں کہ یہ ایک پروگریسیو بل ہے۔ میں اس کے خلاف کئی گھنٹے تک کہہ سکتا ہوں لیکن اب زیادہ زیادہ وقت نہ ہونے کی وجہ سے اس بل میں جو اہم کلائز ہیں ان پر ہی کچھ کہوں گا۔ اس میں کل ۶۱ کلائز ہیں لیکن ایک کلائز بھی مجھے ایسا نظر نہیں آیا جس سے جیل کے قیدیوں کو سہولتیں بھم پہنچتی ہوں۔ اس بل کو پیش کر کے ممبر انچارج آف دی بل ممبرس کو دھوکے میں رکھنا چاہتے ہیں لیکن اس ایوان میں کم از کم ۶۰۔۰۰ فیصد ایسے ممبرس ہیں جو گذشتہ جنگ آزادی میں حصہ لیکر جیل کی ہوا کھا چکے ہیں۔ ایسے لوگوں کو ممبر انچارج آف دی بل دھوکہ نہیں دے سکتے۔ میں سمجھتا ہوں کہ رضا کار پیریڈ میں ٹریپلری بنسچس کے ممبرس بھی جیل میں گئے۔ انہیں اس زمانہ میں جیل کی سختیوں کا تجربہ ہوا ہوگا جیل کے ظلم کے خلاف انہوں نے بیوک ہٹال کی ہو گئی۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے کہ ان سختیوں کے خلاف کانگریس کے بریسیڈنٹ سوامی رامانند تیرتھ نے ایک ۳۲ نکلی میمورنڈم حکومت کو پیش کیا تھا۔ اگر ممبر انچارج آف دی بل نے اب تک اس کا مطالعہ نہیں کیا ہے تو کم از کم اب مطالعہ کریں اور اون مطالبات کا لحاظ کریں۔ کیوں کہ اس بل میں علامانہ ذہنیت نظر آتی ہے۔ آپ نے اقتدار کی کرسی حاصل کرنے سے پہلے جمہوریت کا دعوی کرتے ہوئے جیلوں میں کیا کہا تھا اس کو نہ بھلانی۔ ورنہ آپ اور ہم جیلوں میں جا کر اس بل کو قیدیوں کے سامنے رکھیں گے اور ان کی رائے حاصل کریں گے۔ میں نہیں سمجھتا کہ آپ ۰۰ فیصد قیدیوں کو بھی اس بل سے کنونس (Convinced) کر سکیں گے۔ میرا دعوی ہے کہ اس سے کوئی نئی سہولتیں نہیں پہنچ رہی ہیں۔ میں اس وقت ایوان میں جو کچھ عرض کر رہا ہوں وہ سنی سنائی باتیں نہیں ہیں۔ میں ایسا کرنے ۵۰ سالہ سیاسی زندگی جس میں سے ساڑھے تین سال جیل میں گزرے ہیں اس کا تجربہ ہے۔ اعلحضرت بندگانیوالی کے دور میں جب نواب چہتاری کی حکومت تھی میں جیل کا مژہ چکھا ہوں۔ ملٹری گورنر کی حکومت میں کانسٹریشن کیمپ (Concentration camp) کی کیسی زندگی ہوتی تھی اس کا بھی منہ مجھے معلوم ہے۔ ولوڈی حکومت میں جب کہ کانگریس کے چار وزراء تھے اس وقت کی جیل کا بھی تجربہ رکھتا ہوں۔ آج کل کے جمہوری جیلوں میں کیا کیا سختیاں کی جاتی ہیں میں اس سے بخوبی واقف ہوں۔ اس لئے اس اسیبلی کے فلور سے بولتے ہوئے میں آنریل ممبر انچارج آف دی بل کی توجہ میں بعض چیزیں خاص طور پر لانا چاہتا ہوں۔ میں کہوں گا کہ سر سالار جنگ کے دور سے آج تک جتنے جیل مینویل (Jail Manual) اب تک بنائے گئے ہیں ان کو دیکھئے۔ رضا کار دور میں جو جیل مینویل تھا اس کو دیکھئے۔ اس کے لحاظ سے بھی مہینے میں زبردیافت قیدی کو چار مرتبہ ملاقات کا موقع دیا جاتا تھا اور سزا یاب کو بھی ایک مرتبہ ملاقات کا موقع دیا جاتا تھا۔

نواب چھتاری کے زمانہ میں لائق علی حکومت کے زمانہ میں رضاکاروں کے دور میں بھی ایسی پابندی سختیاں نہیں تھیں - اس وقت کے جیل مینویل پر اس کو چھوڑ دیا گیا تھا - جیل رولس کون بناتے ہیں - مسٹر بھونانی یا انکی جگہ میں جو کوئی عہدہ دار آتے تو تیار کر کے جب اس کو راج پرمکھ کے پاس بھیجنے ہیں تو دستخط ہو کر آتی ہے - اس لئے اس بل میں مہینے میں کتنی مرتبہ ملاقات ہوسکتی ہے اس کا رکھا جانا نہایت ضروری ہے - ایسی جیسا کہ میں نے عرض کیا جب میں نواب چھتاری یا لائق علی کے زمانہ میں بھی ساڑھے تین سال جیل میں تھا تو اوس وقت بھی ایسی کوئی پابندی نہ تھی - اب یہ حال ہے کہ کوئی مجرم اپنے عزیزو اور قرابنداروں سے ڈفنس (Defence) کے سلسہ میں بھی ملاقات کرنا چاہتا ہے تو ہوم منسٹر صاحب کو درخواست دینی پڑتی ہے ہوم منسٹر صاحب کبھی اجازت دیتے ہیں اور کبھی نہیں دیتے - اوس زمانہ میں انڈر ٹرائیل (Under-trial) قیدی سے ہفتہ میں چار مرتبہ ملاقات کرنے کی اجازت تھی - اب اس بل کے لحاظ سے سی۔ آئی - ڈی آفسر کی موجودگی میں ملاقات کرنا پڑیگا - جو انڈر ٹرائیل قیدی ہوتے ہیں انہیں اپنے مقدموں کی پیروی اور شہادت کے بارے میں جو کچھ باتیں معلوم کرنی ہوں، وہ آزادی سے معلوم نہیں کرسکتے - آج کے حکمران چانتے ہیں کہ جب وہ رضاکار زمانہ میں جیلوں میں تھے تو اون سے ان کی مائیں، بہنیں، بیویاں ملاقات کرسکتی تھیں - کیا اس وقت بھی انکے سامنے سی۔ آئی - ڈی آفسر رہتا تھا - لیکن اس بل کے ذریعہ ان دونوں کے درمیان ایک آہنی پرده رہتا ہے - میں آج ٹریزری بچپن پر بیٹھنے والوں سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ جب ان سے ان کی بیویاں - مائیں - بہنیں ملنے آتی تھیں تو کیا اوس وقت بھی آہنی پرده رہا کرتا تھا - اس طرح آج جمہوریت کا دعوی کرنے کے باوجود بھی ایک غلامانہ ذہنیت سے اس طرح کام کیا جاتا ہے جس طرح کی رضاکار حکومت بھی جراثت نہیں کرسکتی تھی جس چیز کے خلاف اوس زمانے میں آپ ہی نے جدو جہد کی بھی آج جمہوری حکومت آئنے کے بعد اسی چیز کو راجح کیا جا رہا ہے - اس بل کے تحت قیدی کے ہاتھوں میں ہتھکریاں اور ہاؤں میں اڑنڈے ڈالیے جا سکتے ہیں - وقت واحد میں دو سوائیں دی جا سکتی ہیں جس کے بعد قیدی دو قدم بھی نہیں چل سکتا - میں بیٹر میں بھونانی جیل میں اس طرح تین مہینے رہا ہوں - پھر تنہائی کی سزا بھی دی جاتی ہے - اس وقت آنریبل سبلرکشمی نرسہوان ریڈی اور شری گروا ریڈی بھی وہاں تھے ان سے بات کرنے کی تک اجازت نہیں دی جاتی تھی - اس بل میں گورے حکمرانوں کے پناہے ہوئے قوانین کی طرح نکتی کی سزا بھی رکھی جاتی ہے - ایک آنریبل سبلر جو اوس سائیڈ کے ہیں اور غالباً انہیں اس سزا کا تجربہ ہے انہوں نے اس کو اڑانے کے لئے کھا - رضاکار زمانہ میں پوشیا نامی ایک قیدی کو نکتی کی سزا دی گئی تھی جس کی تکلیف سے وہ مر گیا تھا اس ہرسوامی رامانند تیرتھ اور ان کے ساتھ اسوقت اس محبس میں رہنے والے ۱۰۰ اساتھیوں نے حکومت کے اس عمل کے خلاف ہڑتال کی تھی اور میمورنڈم پیش کیا تھا - آج وہی ہارٹی کریسیوں ہر بیٹھنے کے بعد قانون میں اسی قسم کی سزاوں کی تجویز کرتی ہے - اگر یہ عمل رہے تو ایوان اس کو ہرگز قبول نہ کریگا - عوام اس کو ہرگز قبول نہ کریں گے -

اس بل کے تحت سنگل گنج - ڈبل گنج - سالیٹری سیل ( Solitary cell ) کی سزاں بھی رکھی گئی ہیں۔ سنٹرل جیل یہاں زیادہ دور نہیں ہے وہاں جا کر دیکھ سکتے ہیں۔ ڈبل گنج میں اس بات کا تک پتہ نہیں چلتا کہ سورج کب طلوع ہوا اور کب غروب ہوا - اسی میں سونا - اسی میں پاخانہ کرنا - اسی میں پیشاب کرنا - میں اسی قسم کے گنج میں دو سال زندگی گزارا ہوں -

ہمارے باپ دادا کے زمانہ سے حیدرآباد کی حکومت نے آج تک کبھی پینل ڈائیٹ ( Penal diet ) کی سزا نہیں دی تھی - لیکن اس سزا کو مسٹر بھوفانی سنده جیل سے اپنے ساتھ لائے ہیں۔ اس کے تحت چار دن تک مہتمم جیل اپنی خاص غذا قیدی کو دے سکتا ہے جس میں کیا کیا شریک ہوتا ہے کسی کو علم نہیں ہوتا - محض ٹسپلن کے خلاف چلنے کا عذر لنک کر کے قیدی کو یہ سزا دی جاتی ہے۔

ایک اور سزا کمبل اور تھیلوں کا بنایا ہوا لباس قیدی کو پہنانا ہے جو اس بل میں رکھا گیا ہے۔ روٹی کے کپڑوں کی بجائے کمبل اور تھیلے کا لباس۔ یہ کس قدر تکلیف دہ سزا ہے۔ اس ۶۱ کلارز کے بل میں میں نے یہ کہیں نہیں دیکھا کہ جیل کے معاملوں سے متعلق آفیشیلس اور نان آفیشیلس کی کوئی کمیٰ رکھنے کی گنجائش رکھی گئی ہے۔ حیدرآباد اسٹیٹ میں ۱۸-۲۰ جیل ہیں۔ ہر جیل کے لئے آفیشیلس اور نان آفیشیلس کی ایک اڈوائیزری کمیٰ ہوئی ہے لیکن اس میں کہیں بھی اپوزیشن پارٹی کے ۲۰-۲۲ ممبروں میں سے کسی کو بھی نہیں لیا گیا۔ میں امید کر رہا تھا کہ جب اس بارے میں علحدہ بل ہی آرہا ہے تو اس میں اس کی گنجائش رہے گی۔ لیکن یہاں کچھ بھی نہیں ہے۔ ہمارے متصالہ صوبجات مدراس، آندھرا میں اس کی گنجائش ہے۔ اور وہاں جس کانسٹی ٹیونسی میں جیل ہوئے اس کانسٹی ٹیونسی کے رکن جس وقت چاہیں اس جیل کا معاہدہ کرو سکتے ہیں۔ اور جیل کے مشکلات کو حکومت کے سامنے پیش کرو سکتے ہیں اس کو بھی آریل ممبر انچارج آف دی بل نے یہاں ملحوظ نہیں رکھا ہے.....

مسٹر چیرمن :- کلاز ( ۲۰ ) میں رول میکنگ پاور کے تحت یہ چیز آتی ہے -

شری اے - رامچندر ریڈی :- یہ پاور تو ہے لیکن رولس ایسے بنائے جاتے ہیں جو کسی طرح مناسب نہیں ہوتے۔ اس میں لکشمی نواس گنیروال پنالال بٹی جو عوام کے نمائندے نہیں ہیں رکھئے جاتے ہیں۔ حالانکہ لکشمی نواس گنیروال جس کانسٹی ٹیونسی رامائن پیٹھ سے منتخب ہو کر آئئے تھے وہاں سے ہٹادئے گئے لیکن کمیٰ میں ان کی رکنیت برقرار ہے حالانکہ ان کی جگہ جو رکن منتخب ہو کر آئئے ہیں انہیں کمیٰ میں لیا جانا چاہئے تھا۔ رولس اس طرح کے بتتے ہیں کہ اس میں من مانے اپنے سر ہلانے والے و گلنے والوں کو اپنے پٹھووں کو کمیٰ میں لینے کی گنجائش رہے۔ اس لئے ضرورت اس بات کی ہے کہ بل ہی میں اس کا تذکرہ کر کے واضح کر دیا جانا ضروری ہے۔

قیدیوں کو جو غذا دی جاتی ہے اس کے بارے میں مجھے یہ کہنا ہے کہ وہ غذا

انہائی ناقص حقوق ہے - جیل مینوں کے لحاظ سے انہیں جو راشن ملتا چاہئے وہ نہیں ملتا قریب قریب آدھا راشن ہڑپ کرلیا جاتا ہے - میں بتلا سکتا ہوں کہ اس میں کون کون حصہ دار ہوتے ہیں لیکن یہ فلور آف دی ہاؤس پر بولنے کی باتیں نہیں ہیں - چاول - نمک - مرج - تیل یہ سب مار لیا جاتا ہے - اور جو چیزیں بچ رہتی ہیں ان سے ناقص روٹیاں پکا کر دی جاتی ہیں -

جیل میں جو باغیچے ہوتے ہیں وہاں قیمتی ترکاری آلو۔ اروی - گوبی - پیدا کی جاتی ہے - لیکن یہ جاتی کہاں ہے؟ جیل سپرنٹنٹ یا جیل آفیسرس کے مکانوں میں - اور قیدیوں کو گوبی کے پتھر کھلانے جاتے ہیں - میں یہ سب باتیں اپنے تجربہ کے لحاظ سے بول رہا ہوں - اور مختلف جیلوں کا یہی حال ہے -

کپڑوں کے بارے میں اس بل میں کوئی بات طے نہیں کی گئی ہے - اور اس کو ذیلی قواعد پر چھوڑ دیا گیا ہے - ممکن ہے کہ یہ مہتمم کی صوابدید پر چھوڑ دیا جائے - لیکن میں کہوں گا کہ یہ عمل ڈرست نہیں بل ہی میں اس بات کی صراحت کردی جانی چاہئے کہ قیدی کو سال میں اتنے کپڑے ملیں گے - جیل ادمینسٹریشن کے بارے میں میں اور بہت سی باتیں کہہ سکتا ہوں لیکن ایک دو باتیں کہکر اپنی تقریر قائم کروں گا -

ہم یہ بھی دیکھتے ہیں کہ آج کل جیل ادمینسٹریشن پر بار دن بدن بڑھتا ہی جا رہا ہے - میں آپ کے سامنے اعداد رکھ کر بتلاتا ہوں - گذشتہ رضا کار دور میں حیدر آباد اسٹیٹ کی مختلف جیلوں میں سالانہ اوسطاً ۱۱۳۶۲ قیدی تھے اوس وقت یعنی ۵۰-۵۱ میں جیل ادمینسٹریشن پر خرچہ ۲ لاکھ روپیہ ہوتا تھا - اور آج عوامی حکومت کے زمانہ میں ۵۳-۵۴ میں قیدخانوں میں ۹۱۹ قیدی ہیں اور ان پر ۲۶۲۲۰۰ روپیہ خرچ ہوتا ہے - آج اتنے کم قیدیوں پر ادمینسٹریشن کا خرچہ اتنا زیادہ کیا جاتا ہے - میں اس بارے میں بحث سشن میں بھی کہنے والا تھا لیکن مجھے موقع نہ مل سکا - اور آج اس طرح کا بل ہمارے سامنے پیش ہوا ہے - ممکن ہے آنریبل سمبر انچارج آف دی بل میجری کے زور پر اس بل کو منظور کروالیں لیکن یہ طریقہ نہیک نہ ہوگا - بلکہ اس بل کو سلکٹ کمیٹی کے حوالے کیا جانا چاہئے اور وہاں اس پر غور ہونے کے بعد اس سشن کے آخر میں ایک یا دونوں لیکر ہم اس پر یہاں غور کر سکتے ہیں - یا آئندہ سشن میں بھی اس کو منظور کر سکتے ہیں - مجھے کوئی اعتراض نہیں ہے -

ان چند الفاظ کے ساتھ میں اپنی تقریر ختم کرتا ہوں -

شری رام لنگا سوامی (کبیج) :- مسٹر اسپیکر سر - اپنکے مخالف سمبروں کی جانب سے جو تقریریں ہوئی ہیں وہ زیادہ تر جیل کے اندر وہی انتظامات سے متعلق کی گئی ہیں - اس بل کے کلائز سے متعلق کوئی تجاویز نہیں سو جھائے گئے ہیں - یہ بتایا گیا ہے سے کہناں آفیشلس کی کمیٹیاں نہیں ہیں لیکن اس بل میں یہ بتایا گیا ہے کہ اس

قانون کے تحت قواعد بنانے کا اختیار گورنمنٹ کو رہیگا۔ یہ ایسی چیزیں ہیں جو قواعد میں آسکتی ہیں۔ ایک اعتراض یہ کیا گیا ہے کہ قیدیوں کے موسومہ خطوط وقت پر انہیں نہیں دئے جاتے ہیں۔ یہ ایسی چھوٹی چھوٹی معمولی باتیں ہیں کہ مقامی عہدہداروں سے کہکھر ان کی اصلاح کی جاسکتی ہے۔ ایک اسی قسم کا اعتراض کیا گیا ہے کہ قیدیوں سے عہدہدار اپنے مکانوں پر کام لیتے ہیں۔ بہر حال یہ تمام چیزیں ایسی ہیں جو عہدہداروں سے کہکھر ٹھیک کی جاسکتی ہیں یا قواعد میں اسکے متعلق انسداد کے لئے رکھا جاسکتا ہے۔ یہ بھی اعتراض کیا گیا ہے کہ بعض عہدہدار قیدیوں کا راشن کھانا جانتے ہیں۔ اگر واقعی ایسی باتیں ہوتی ہیں تو آپ متعلقہ عہدہداروں کے علم میں ثبوت کے ساتھ لائے تو ایسے عہدہداروں کے متعلق تحقیقات کی جائیگی اور ضرور گورنمنٹ انکے خلاف کارروائی کریگی۔ بہر حال جیل کے اندر ورنی معاملات سے متعلق ساری شکایتیں کی گئی ہیں۔ اس قانون سے متعلق کچھ نہیں کہا گیا۔ میں یہ عرض کروں گا کہ پولس ایکشن سے پہلے لہساکوئی قانون نہیں تھا۔ جو قانون پیش کیا گیا ہے قانون محاسب کے نام سے وہ ایک معمولی سا قانون تھا۔ اب جو قانون پیش کیا گیا ہے اوسکی نسبت بہت پروگریسیو ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ جیل کے انتظامات کے متعلق جو شکایتیں کی گئی ہیں وہ بہت پرانی ہیں۔ اب تو انتظامات کے لئے نان آفیشل ممبروں کی کمیٹیاں بنائی گئی ہیں چنانچہ یہ ضلع میں بھی ایک کمیٹی ہے اس میں ایک ہریمن ممبر ہیں اور ایک لیڈی ممبر ہیں۔ اور آنریبل ممبر یہیں میں جب اورنگ آباد جیل میں تھا اوس وقت اس قسم کے کوئی انتظامات نہیں تھے۔ نہ غذا وقت پر دیجاتی تھی اور نہ خطوط۔ کمیٹی کے ممبرس نہ صرف مقررہ اوقات میں جیل کا معائنہ کرتے ہیں بلکہ اچانک جا کر بھی معائنہ کرتے ہیں۔ ایک آنریبل ممبر نے یہ اعتراض کیا کہ جوار میں کنکر ہوتے ہیں۔ جیسا کہ میں نے پہلے کہا ہے کہ یہ ایسی باتیں ہیں جنکے اصلاح مقامی عہدہداروں کو کہکھر کرائی جاسکتی ہے۔ اگر انکے پاس ریزیٹنیشن کیا جائے تو وہ ان ہی قیدیوں سے کنکر چنودیں گے۔ جیل میں ہاؤس کے کئی آنریبل ممبرس تھے۔ کسی زبانے میں بڑے بڑے لوگ جیل میں تھے۔ اپنے تحریبات کے تحت مناسب سمجھیش دئے جاسکتے ہیں۔ یہ کہا جاسکتا ہے کہ جیل میں تعلیم کا انتظام ہونا چاہئے۔ ان پڑھ اشخاص مثلاً سنار۔ لوہار وغیرہ اس قسم کے لوگ آئیں تو انہیں تعلیم دلائی جائے۔ ایسی چیزوں کی صراحة قانون نبیں ہونی چاہئے۔ بقیہ چھوٹی چھوٹی باتیں قواعد میں آسکتی ہیں۔ اگر جیل میں داخل ہونے کے بعد انکی اصلاح کی جانب توجہ نہ کی جائے تو وہی عادتیں ان میں جڑ پکڑ لیتی ہیں اور وہ عادی مجرم بن جاتے ہیں۔ کسی مجرم کو جیل میں کھانے پینے کی تو کوئی تکلیف نہیں ہوتی البتہ اسکو اپنے متعلقین کا خیال رہتا ہے۔ گھر کی فکر رہتی ہے۔ اس لئے خطوط کے وقت پر ملنے کا انتظام ہونا چاہئے۔ قیدخانوں میں قیدیوں کو کام نہیں ہوتا ہے بجز اون قیدیوں کے جنکو قید با مشقت کی مزا دیجاتی ہے۔ لہذا ایکار قیدیوں کے لئے بھی تعلیم کا انتظام مفید ہو گا۔ تاک آجھا اور مہاتما گاندھی جیسے لوگوں نے جیل میں بڑی بڑی کتابیں لکھی ہیں۔

میں عرض کروں گا کہ جو بل ہاؤس میں پیش ہوا ہے اسکو منظور کرنا چاہئے ۔  
ہو سکتا ہے کہ بعد میں ہم مناسب ترمیمات کریں ۔ اتنا کہتے ہوئے میں اپنی تقدیر ختم  
کرتا ہوں ۔

*Shri R. B. Deshpande (Pathri) :* Mr. Speaker, Sir, there have been several speeches on the present reforms in Jails and the different kinds of comforts and luxuries to be given to the prisoners. I must say that there are certain grades of enjoyment. These grades are, according to human understanding, necessities, comforts and luxuries. Most of the Members of the Opposition have insisted that all the convicts and prisoners inside the Jails should have comforts and luxuries to which I am entirely opposed. Of course, all of us are human beings, and the prisoners inside the Jails are also human beings, and as such it is the bounden duty of all the people and the Government to provide them with as many necessities as possible, e.g., food, clothing and shelter—and that too to a certain extent.

Whenever I hear the speeches of the hon. Members of the Opposition, I am now and then reminded of a beautiful poem 'skylark' written by P.B. Shelly. I do not wish to quote the poem from the beginning to the end, but I shall quote only a few relevant lines, just to show to the House the tone in which the hon. Members of the Opposition are speaking about comforts and luxuries of the prisoners. The lines are :—

“Like a high-born maiden  
In a Palace Tower,  
Soothing her love-laden  
Soul in secret hour  
With music sweet as love  
Which overflows her bower” .

What I mean to say is this : That when the Members of the Opposition speak about comforts and luxuries to the prisoners in the Jails, they are not living on the earth, but they are flying high up in the regions of theory and Romance ; they do not speak about theings which can be put into practice, but only of things which can never be put into practice. They must take into consideration the necessities and contingencies of each case and then only they must advise the authorities to give as many comforts and luxuries as possible.

I was in jail in Aurangabad, not for a month or two, but 14 long months and I was released just after the Police Action. I know there are certain offences which can never be excused under any circumstances. For that matter, I should like to divide the offences into three categories—(1) heinous offences like murder, culpable homicide amounting to murder, etc., (2) unnatural offences like Sodomy, Buggery and Bestiality and (3) grievous hurt. For such offences, if people are convicted and sent to jail, I have firm conviction that no sympathy or mercy should be shown to such people; rather there should be very strict rules for the treatment of such prisoners. But if there is a prisoner of another category, say, a person who commits a juvenile offence, e.g., boys who are minors or who do not exceed 18 years of age, if such people are sent to jail, it is the bounden duty of the Government and the people outside to show as much mercy as possible and provide all sorts of comforts and luxuries ; not only that, but provide for the education of such children. But if more sympathy than is necessary is shown, the result will be that they will become more offensive and more mischievous.

Nowadays, I find that there has been a wave of entirely fantastic suggestions, namely, that prisoners, even if they committed very heinous crimes, must be given weekly feasts, etc. What a fantastic idea ! Whenever people who have committed murders and other heinous crimes go to jail, nobody outside takes note whether the widow or the children and other dependants left behind the victim are able to get enough food, clothing and shelter. But the hon. Members of the Opposition are more particular about the comforts and luxuries of prisoners convicted of such crimes than those who have been rendered homeless and who have been rendered orphans by the murder of a person.

I am of the opinion that whatever provisions have been embodied in the present Bill are quite up-to-date and there is nothing to find fault with the Member-in-charge of the Bill. In short, I should like to say that the hon. Member-in-charge of the Bill should not take into consideration some of the fantastic and most theoretical suggestions put forward by the hon. Members of the Opposition but to stick to the provisions of the present Bill, which is really of a very ameliorative nature and will bring about good many reforms in Jail and remove some of the inconveniences to prisoners.

\* شری کے۔ انت رام راؤ (دیور کنڈہ) :— مسٹر اسپیکر سر۔ قانون محابس ایوان کے سامنے بیش ہوا ہے اور ایوان کے دونوں جانب سے بہت تفصیل سے مباحثت ہوئی ہیں۔ قانون کے مقاصد کی حد تک پورے ایوان کو اتفاق ہے۔ کسی کو اختلاف نہیں ہے۔ البتہ اپروج (Approach) کا جو طریقہ یا ان کیا جا رہا ہے اوس سے اختلاف ہے۔ اون کا خیال ہے کہ مجرمین کی اصلاح سزاوں کے ذریعہ ہو چاہئے۔ اس طرف کے اراکان کا خیال ہے کہ انکی ذہنیت کو تبدیل کر کے اصلاح کرنی چاہئے۔ تاریخ شاہد ہے کہ جب و تشدد کے ذریعے اصلاح کی کوشش کی جائے تو اصلاح نہیں ہو سکتی۔ کئی ایسی مثالیں ہمارے سامنے موجود ہیں کہ لوگوں کو سولی بر لشکایا گیا۔ پندوق کا نشانہ بنایا گیا لیکن اصلاح نہ ہو سکی۔ بات یہ ہے کہ جرائم مختلف وجوہات کے تحت سرزد ہوتے ہیں جن میں سب سے بڑی وجہ معاشی بدحالی ہے۔ جیتنک معاشی حالات کی اصلاح نہ ہو جرائم میں تخفیف کی امید کم ہوتی ہے۔ ایک بہت بڑے ماہر نے جرائم کی تحقیقات کی کہ یہ کیوں ہوتے ہیں۔ اوس نے تحقیقات کے بعد ایک کتاب لکھی ہے جسکا نام ہے ”سن اینڈ سائنس“ (Sin and Science) جرائم کے وجوہات اوس نے مجرمین سے دریافت کرنے کے بعد یہ کتاب لکھی ہے۔ وہ اپنی کتاب میں لکھتا ہے کہ کسی نے جرم کی وجہ یہ بتائی کہ اوسکے باپ کی کمائی ہوئی جائیداد اوس سے چھین لیکر تھی اس لئے اوس نے قتل کا ارتکاب کیا۔ کسی نے کہا کہ اقدام خود کشی کی وجہ یہ ہے کہ نوکری نہیں مل رہی تھی۔ کسی نے کہا کہ روزگار نہیں ملتا ہے جیل میں دو وقت روئی تو مل جاتی ہے اسلئے میں نے چوری کی ہے۔

هم نے بہت سادھی سیدھی مانگیں آنریبل مور آف دی بل کے سامنے رکھی ہیں لیکن افسوس کہ اوسکو بھی لگزو ریز (Luxuries) تصور کیا جا رہا ہے۔ جیسا کہ میرے ایک محترم دوست نے کہا۔ ہماری مانگیں سیدھی سادھی ہیں جو بطور تربیم بیش کی جائیں گی۔ وہ ترمیمات سعمولی ہیں۔ یہی کہ اون لوگوں کو ٹھاٹ پڑی نہ پہنائی جائے۔ بیڑیاں ہتکڑیاں نہ ڈالی جائیں۔ بلکہ اون کے ساتھ انسانی سلوک کیا جائے۔ اون کے لئے صنعتیں اور درسگاهیں فائم کی جائیں۔ اور ذہنی تربیت اونکو دیجائے لیکن اون خیالات کو توڑ مروڑ کر پیش کیا گیا اور اوسکا مذاق اڑایا گیا۔ میں اس پر زیادہ کہنا نہیں چاہتا۔ البتہ ایک چیز کہو ٹگا کہ سیاسی سلزمنی کے متعلق آپ نے اس میں کچھ نہیں رکھا ہے۔ سیاسی سلزمنی وہ ہوتے ہیں جو ملک کی بھلائی کے لئے لڑتے ہیں۔ اون کی نیت مجرمانہ نہیں ہوتی۔ ملک کے مفاد کو پیش نظر رکھ کر لڑتے ہیں۔ جمہوری دور میں بغاوت بھی عوام کا ایک مقدس فرض ہوتا ہے اون کے ساتھ رعایتیں ہون چاہئیں۔ چنانچہ ہم نے جو رعایتیں کی ہیں امید ہے کہ اونہیں قبول فرمالیا جائیں گا۔

شری کے۔ وینکٹ رام راؤ (چنا کنڈور) :— جو بل پیش کیا گیا یہ اوبھے تک پہنچنے والے اپوزیشن کی جانب ہے جو کچھ کہا گیا اوس کو اوس طرف کے سپرسن کی جانب

سے کمفرٹ ( Comfort ) اور لکھریز ( Luxuries ) سے تعبیر کیا جا رہا ہے - یہ غلط ہے - ہارا تجربہ کیا بتاتا ہے - اس سلسلہ میں ہارا نقطہ نظر کیا ہے صاف اور واضح ہو گیا ہے - ایک شخص کو قید خانہ میں ڈالا جاتا ہے - کیا اوس محبس کو اوس کے لئے سسرال کا گھر بنایا جائے - اس قسم کے سوالات اوس طرف کے آنریل ممبرس کی جانب سے کثرتبا رہے ہیں - اس امر سے ہی اون کی ذہیت کا پتہ چلتا ہے کہ پرزنس کے بارے میں آپ کا ایٹھیوڈ ( Attitude ) ریفارمیٹیو ( Reformatory ) ہے یا ڈیفارمیٹیو ( Deformative )

ہے - پرزنس جنہیں قید خانوں میں رکھا جاتا ہے اون کو آج کے حالات کے پیش نظر ریفارم کرتا ہے - اون کی خصلتیں درست کرنا ہے یا اون کو ڈیفارم کرنا ہے یہ دو سوالات آج آپ کے سامنے ہیں - اس بل کو پرائمافیسی ( Prima facie ) کے طور پر دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ سنہ ۱۹۰۰ع میں یعنی باوا آدم کے زمانہ میں جو قانون تھا وہی آج سنہ ۱۹۵۳ع میں ہم انٹراؤس ( Introduce ) کر رہے ہیں - یہ کہا جا رہا ہے کہ یہ ایک مکمل قانون ہے - غالباً اس کے متعلق مجھے ہی تسامح ہوا ہو - میں کہہ سکتا ہوں کہ یہ ایک مکمل قانون نہیں ہے - ایسی بہت سی چیزوں ہیں جو برائے نام ہیں - اور حقیقی واقعات کے منافی اور غیر مطابق ہے جو چیزوں ہیں وہ بھی اس قانون میں نہیں رکھی گئی ہیں - مثال کے طور پر میں ایک چیز ایوان کے سامنے لانا چاہتا ہوں - دفعہ ( ۲۰ ) وژس کے متعلق ہے - یعنی کونسے لوگ ہیں جن سے قیدی ملاقات کرسکیں گا - اس میں صرف سیول پرزنس ( Civil prisoners ) اور ان کنوکٹیڈ پرزنس ( Unconvicted prisoners ) کو لوگوں سے ملاقات کا موقع دیا گیا ہے - کنوکٹیڈ پرزنس کو اس کا حق نہیں دیا گیا ہے - حالانکہ حیدرآباد کے جیل خانوں میں کنوکٹیڈ پرزنس کو اپنے عزیز و اقارب سے ملاقات کی اجازت فی الحال دیجاتی ہے - وہ جزو اس قانون میں نہیں ہے - حالانکہ آپ کہتے ہیں کہ یہ مکمل قانون ہے - اس لئے ہماری جانب سے یہ کہا جارہا ہے کہ یہ قانون آج کے حالات - زمانہ کا تقاضا اور اوسکی مانگوں کو پورا نہیں کرتا - یہ قانون آپ ٹوڈیٹ ( Up-to-date ) نہیں ہے - اس لئے ہماری جانب سے بعض مطالبات کئے گئے جنکو سسرال کے گھر کی سہولتیں اور لکھریز کا نام دیا گیا ہے - اسکو آپ ڈو دی اکسٹٹ

( Up to the extent ) لیجنے کا کہاں جواز ہے - کوئی شخص جرم کیوں کرتا ہے - کبھی شخص کو جرم کرنے میں مزہ نہیں آتا - ممکن ہے اس طرح جرم کرنے کا عادی ہو جائے تو اسکو مزہ لگ جائے - لیکن ابتداء میں جو جرم کیا جاتا ہے وہ کسی مزے کے لئے نہیں کیا جاتا - سائکلو جوگسٹ ( Psychologist ) کا یہ مسلمہ نظریہ ہے کہ کسی شخص کو ابتدائی جرم کرنے میں مزہ نہیں آتا - بلکہ بعض سماجی اور معاشری حالات کی وجہ سے کوئی شخص مجبوراً جرم سرزد کر جاتا ہے - جب ان حالات میں کسی شخص سے کوئی جرم سرزد ہوتا ہے تو ہارا ایٹھیوڈ کیا ہونا چاہئے - حکومت ہی سماج کے اصولوں کو چلانے کے لئے قواعد اور قانون بناتی ہے اس لئے حکومت کا نظریہ کیا رہنا چاہئے -

ایک مریض کے ساتھ ڈاکٹر کا جو نقطہ نظر رہتا ہے اوسکو مریض سے جس طرح ہمدردی رہتی ہے وہی ہمدردانہ نقطہ نظر ہارا بھی قیدیوں کے ساتھ رہنا چاہئے - لیکن وہ نظریہ اس قانون میں جو کہ سنہ ۱۹۰۰ع کے قانون کے مطابق ہے ہرگز نہیں ہے - سنہ ۱۹۰۰ع سے لیکر سنہ ۵۲ع تک ہم نے اس میں جو اصول پوشیدہ تھے اون کا تجزیہ کیا - ہمارے سامنے اجی دوست بھی اس کا تجزیہ کرچکر ہیں لیکن نتیجہ کیا نکلا - یہ اصول تجزیہ میں بیکار ثابت ہوئے - مجرموں کی عادت اور اخلاق سنوارنے کی بجائے ہم اون لوگوں کو ہارڈنڈ کریمنلس ( Hardened criminals ) میں تبدیل کر رہے ہیں - یہ بہت گھبرا اور انٹرلائٹنگ پرنسپل ( Underlying principle ) ہے - چنانچہ اون ہی پرنسپل کی بنا پر ہم یہ مطالبہ کر رہے ہیں کہ اس قانون کے متعلق جو اپروچہ ( Approach ) کیا گیا ہے وہ غلط اپروچہ ہے - میرے اس آگر گیومنٹ کی تائید حیدرآباد کے انسٹیٹیشن کی رپورٹ بابتہ سنہ ۵۳-۵۲ع بھی کرسکیگی - اس رپورٹ کا صفحہ ( ۶۷ ) ملاحظہ فرمائیں اوس میں یہ لکھا ہوا ہے -

**“ Jail statistics show that 40.8% of the convicts during the year were between 22 and 30 years of age, 28.2 between 31 and 40 years and 14.35 between 19 and 21 years.”**

کویا ۱۹ سال سے ۲۱ سال کی عمر کے جو ملزمین ہیں اونکی تعداد ( ۱۳۵۳۵ ) ہے - ۳۰ سال کے درمیان قیدیوں کا پرسنٹیج ( ۴۸.۰ ) ہے - کوئی آدمی ۱۹ سال سے لیکر ۳ سال کی عمر تک نوجوان کی تعریف میں داخل ہو سکتا ہے - ان اعداد و شمار کے دیکھنے سے واضح ہوگا ( ۵۰ ) پرسنٹ اون ینگسٹریس کا ملیکا جو نوجوان ہیں - جن کے متعلق ہارا یہ تصور ہے کہ وہ سماج کو سدهارنے اور بگاڑنے والے ہیں - لیکن جیلوں میں ( ۵۰ ) فیصد آبادی انہیں کی ہے - اس لئے میں کہو تو گا کہ جو طریقے ہم سنہ ۱۹۰۰ع سے آج تک استعمال کرتے رہے وہ غیر موثر ثابت رہے - اون اصولوں کے ذریعہ ہم اون کریمنلس ( Criminals ) کو روکلیم ( Reclaim ) نہیں کر سکتے - بلکہ اس کے برعکس ہم نے اون کو ہارڈنڈ کریمنلس میں تبدیل کر دیا ہے - یہ ایک فنڈا میشن پرنسپل ہے جس کو ہم نے اپنے اعتراضات کے سلسلہ میں اپنی درشی میں رکھا ہے - آپ دوسرے اسٹیشن کی جیلوں کو ملاحظہ فرمائیں - وہپنگ ( Whipping ) یہ اڑڈنڈے - یہ ڈنڈے - ٹاٹ پتری پہنانے کی سزا وہاں عملاء نہیں دیجاتی - وہ براخاست کی جاچکی ہیں - مجھے مدرس کی دو تین جیلوں کا تجزیہ ہے اور حیدرآباد کی جیلوں میں بھی رہنے کا اتفاق ہوا ہے - میں وہاں کے پولیٹیکل پرزنریس یا ڈیٹینیوز کے متعلق نہیں کہہ رہا ہوں - بلکہ اون مجرمین کے متعلق کہہ رہا ہوں جو معمولی جرام کے تحت سزا پاریے ہیں - مدرس کی جیلوں میں پرزنریس کے لئے بہت سی سہولتیں موجود ہیں جو اپنے کے خیال کے مطابق لگزوڑیز کی تعریف میں داخل ہو سکتی ہیں - لیکن حیدرآباد کی جیلوں میں وہی پرانے زمانہ کی چیزیں ڈنڈے - ڈبل گنجی وغیرہ جاری ہے -

میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ اس بل کے ذریعہ آپ کو نسی نئی چیز لارہے ہیں جو پہلے نہیں تھی - بلکہ اون سے زیادہ سختی اس قانون کے ذریعہ لائی جا رہی ہے جو پہلے سے موجود تھی - میں اس کے متعلق چیلنج کرسکتا ہوں کہ آپ کوئی نئی چیز نہیں لارہے ہیں - یہ بھی کہہ سکتا ہوں اس بل کے پیش نہ ہونے کی وجہ سے کوئی چیز ایسی باقی نہیں رہ جاتی تھی - اس بل کے ذریعہ وہی مغلائی باجا بجائے کی کوشش کی جا رہی ہے جو صدیوں سے بجتا چلا آ رہا ہے - آج جبکہ پاپولر گورنمنٹ آگئی ہے تو وہ مغلائی باجا نہیں بجنا چاہئے - جو پرانی چیزیں جیلوں میں ہیں وہ نہیں رہنا چاہئے -

مسٹر چیرمن :- پارٹ اے اسٹیشن میں کونسا باجا بجتا ہے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- مختلف قسم کے باجی بھتے ہیں - لیکن ہمارے پاس تو وہی پرانا باجا بجتا ہے - اگر کانگریس کا باجا بھی بجتا تو بہت اچھا ہوتا - یہاں وہ بھی ہم نہیں بجارتے ہیں - اس قانون میں افعال منوعہ کے متعلق کہا گیا ہے - اس کے متعلق اس وقت بھی جو قانون ہے اوس پر کس حد تک اس سلسلہ میں عمل آوری ہو رہی ہے ہمارے اس جانب کے بہت سے دوستوں نے روشنی ڈالی ہے -

مسٹر چیرمن :- پارٹ اے اسٹیشن میں بھی کوئی علحدہ قانون ہے یا سٹرول ایکٹ ہی نافذ ہے -

شری کے - وینکٹ رام راؤ :- وہی سٹرول ایکٹ ہے لیکن مثال کے طور پر سکشن (۱۷) کا جو اے - بی - سی - اور ڈی سب سکشن ہیں اون کے الفاظ تبدیل کر لئے گئے ہیں - بعض سہولتیں دیکھی ہیں لیکن اوسکے تمام چیزیں ہم نہیں لے رہے ہیں صرف سٹرول ایکٹ کے چند دفعات ہی ہم نے لئے ہیں - دفعہ (۶۰) وہنگ کے سلسلہ میں ہے - میں یہ عرض کروں گا کہ جیل میں سزا دینے والا بھی وہی شخص رہتا ہے اور تحقیقات کرنے والا بھی وہی شخص رہتا ہے - میں مانتا ہوں کہ جیلوں میں ڈسپلن (Discipline) قائم کرنے کے لئے وہاں کے عملہداروں کو بعض اختیارات دیتا ضروری ہے - اس پر مجھے کوئی اعتراض نہیں ہے - لیکن یہ ایکٹ دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ سپرنٹنٹ کو ایک نیا مسٹریٹ توکیا راج پرمکھ بنادیا گیا ہے - وہ جو چاہے کرسکتا ہے - اس لئے اس قانون کو ایک کمپریہنسیو (Comprehensive) قانون بنانے کا ہم مطالبہ کر رہے ہیں - باہر کی دنیا میں قانون کے بدلتے کے لئے کچھ وقت درکار ہوتا ہے لیکن جیل کا قانون تو گہنٹہ گہنٹہ اور منٹ منٹ میں بدلتا رہتا ہے - جیلوں کے جو جی میں آئے وہی قانون - سپرنٹنٹ صاحب کے خیال مبارک میں جو آتا ہے وہی قانون - اور انکے دماغ میں جو جنوف آتا ہے وہ بھی قانون برجاتا ہے - ہمارا تجزیہ ہے اور ہم نے جیلوں سے جیل مینیوں کا مطالبہ کیا ہے اس سے پوچھا ہے کہ ہمارے حقوق کیا ہیں - گوکہ قانون میں ہے کہ مینیوں کو کانسپیکیوس (Conspicuous) جگہ پر رکھنا چاہئے تاکہ سب لوگ اسکو پڑھ سکیں - لیکن اکثر حکوموں کی طرح احکام کو ہم پر دہ رکھ کر جس طور پر فائدہ اٹھانے کی کوشش کی جاتی ہے اس سے پڑھ کر

جبلوں میں یہ کوشش ہوتی ہے - اس وجہ سے ہم نے یہ دو چیزیں رکھی ہیں - ایک سچھاٹ یہ رکھا گیا ہے کہ اس میں بعض ایسے اختیارات ہونا چاہئے جو مجسٹریٹ کے حوالے کشے جائیں کیونکہ جیل کی چار دیواری میں کوئی الزام عائد ہوتا ہے تو جیل صاحب ہی اسکی تحقیقات کرتے - وہی سزا کا تعین کرتے ہیں اور خود ہی سزا دیتے ہیں - اس لذکریشپ کو ختم کرنا چاہئے - مثال کے طور پر میں دفعہ ۱۱ ایوان کے ملاحظہ میں لاتا ہوں -

- 'Wilfully bringing a false application against any officer or prisoner.'

بعنی کسی کی شکایت کرنا بھی جرم ہے - گویا اب اسکی زبان بندی کر دیگئی ہے یہاں "گوئی مشکل نہ گوئی مشکل" کی مثل صادق آتی ہے - اور یہ (Insulting or threatening language) اسکا تعین کون کریگا کیونکہ ایک بات جیل کے دماغی تصویر کے لحاظ سے انسلنگ ہوسکتی ہے - میں تو یہ کہہ چکا ہوں کہ یہاں وہی مغلائی باجا جائے رہے ہیں - "میں یہ کہنا چاہتا ہوں" ، یہ الفاظ جیل کی ڈکشنری میں نہیں ہیں - "میں معروضہ کرنا چاہتا ہوں" ، وہاں اگر ایسا نہ کہا جائے تو شناوری نہیں ہوتی - پریڈ کے تعلق سے تو پرزنس بہت لڑچکے ہیں لیکن پریڈ کے وقت ایک چیزابسی کی طرح کمربستہ ہو کر اتنشن ہو ز (Attentive pose) میں کھڑے ہو جانا پڑتا ہے - کوئی شخص یہ سمجھتا ہے کہ ییٹھکر معروضہ کرے تو انسلنگ ہوتی ہے اور کوئی سمجھتا ہے کہ کھڑے ہو کر معروضہ کرے تو وہ بھی انسلنگ ہو جاتی ہے - میں یہ مثال کے طور پر عرض کر رہا ہوں ورنہ تفصیل تو بہت زیادہ ہے -

### [ Shri B. D. Deshmukh (Chairman) in the Chair ]

ایک اور چیز یہ کہ جیل میں کئی قسم کے لوگ آتے ہیں وہاں کچھ پراہیئت آرٹیکلس (Prohibited articles) کرنے کے لئے بھی وہاں "آل مائی" (Almighty) سپرنشٹڈنٹ ہیں - انکے خیال میں جو آئے وہی صحیح ہوتا ہے - اس لحاظ سے تخصیص کے ساتھ قانون میں رکھنا ضروری ہے - میں صرف پولیٹیکل پرزنس کے بارے میں نہیں کہتا بلکہ ایسے قیدی کو جو کسی نہ کسی وجہ سے فادر ان لا (Father-in-law) کے ہاؤز میں (کیونکہ اودھر سے سسرال کے گھر میں جانا کہہ رہے ہیں) جانا پڑتا ہے تو اسکو ریفارم کرنے کے بجائے نیفارم کرنے کے طریقے اختیار کئے جاتے ہیں - جیل کے عہدہداروں کے نقطہ نظر کے لحاظ سے جتنا زیادہ کوئی شخص پڑھا لکھا ہوتا ہے اتنا ہی زیادہ وہ انکا دشمن ہے - اس قسم کے بہت سے غلط تصویرات ہیں جو اگر قانون بنایا بھی جائے تو ایک دن میں تبدیل نہیں ہونگے - اس وجہ سے ہمیں روٹریکشن (Restriction) اور کنٹرول کرنے کی ضرورت ہے تاکہ اس پرنسپل کو کوئی

پس یوز (Misuse) نہ کیا جائے لہذا جیل کے تعلق سے جتنی اہم چیزیں  
ہیں انکو اس مبنی انکارپوریٹ (Incorporate) کرنا ضروری ہے۔ اسلئے  
بھی ہماری جانب سے بہت سی ترمیمات دیگئی ہیں۔ انکا انڈر لائٹنگ پرنسپل یہ ہے کہ  
قیدیوں کو پھر سے ایک اچھا شہری بنانے کے لیے ریکالیم کیا جائے۔ حکومت کے دو روپیں  
مشتریز (Repressive Machineries) ہیں ایک پولیس اور دوسرا ہے جیل۔  
ان دونوں کے متعلق پرانے حکمران طبقے کی طرح قانون بنانے کے تصورات میں نہ بہت  
ہوئے جو ترمیمات ادھر سے دیگئی ہیں ان پر ہیومینیٹی (Humanity)  
کی خاطر ہیومن پوائنٹ آف ویو (Human point of view) سے غور فرمائیں۔

\* శ్రీ పెండెం వాసుదేవ్ (గజ్యోత్త్రీ) — అధ్యక్ష మహాశయ,

ప్రపుడు ఈ బిల్లు మళ్ళీ జైత్తు సంస్కరణల పేరులో ఈ అసెంబ్లీ ఎదుకుకు వచ్చింది.. ఆ సంస్కరణలు రాకుపూర్వము జైత్తులో అధ్యావ్యన్న పరీశ్రీతులు ఏవైతే వున్నాయో, ఆ అధ్యావ్యన్న పరీశ్రీతులను తొలిగించి అటువంటి అధ్యావ్యన్న పరీశ్రీతులు తిరిగి రాకుండా, ఈ సంస్కరణల ద్వారా ఏమి చేయబడుతోంది ఆనేడి యిం బిల్లులోనే కమ్మలను చూస్తే, జైత్తులో ఇతరకు ఉండినే విరంకు ఈ పద్ధతులనే చట్టబద్ధంగా చేసేందుకు ప్రభావమ్మం ప్రయత్నిస్తనుదని మాత్రం యిం బిల్లు చద్వాహికి తప్పని సంగ్తిగా అర్థం అవుతుంది. ఈ జైత్తులు సంస్కరణలు చూస్తే, పుర్వం జైత్తులలో వున్న పరీశ్రీతులను మరింత అధ్యావ్యం చేసేటట్లు కనబడుతోంది. దేనినిబట్టి, యిం బిల్లును ఎంతో మంచి పద్ధతులలో తీసుకు మస్తన్నామని చేస్తే మహాశయులు జైత్తులు జీవితం అంటే ఏమిటో ఏమాత్రం అనుభవం తేదని నేను అనుకోంచూను. మనం ఈ బిల్లులోని కొఱజాలను విడిస్తిని, ఈ కొఱజాలను గుర్తించి ప్రశ్నగా ఆలోచించినట్లులుతే టీక్ టీక్ విధానం ఏదైతే వుండో, బెత్తంతో ఖైదీలను చితకక్కాచైప్ప పద్ధతి ఏదైతే వుండో, దానిని తిరిగి యిం బిల్లువ్వారా తీసుకు మస్తన్నామని తెలుస్తుంది. ఆ టీక్ టీక్ విధానాన్ని, బెత్తంతో ఖైదీలను కొఱగిసు మొదటటి సత్యాగ్రహం కాలంలోనే, ఆనాటి కాంగ్రెసు లోని మహాశయులు పెద్ద ఎత్తున వ్యక్తిగిచూరు. అందుకు వ్యక్తిగించంగా పోరాటాలు చేశారు. కొనీ, ఆ నాటి కాంగ్రెసులోని మహాశయులుగానీ, ప్రమాణిలుగానీ, ఇక్కడికి ఎం. ఎల్. ఏ.లు గా రాలేదు అనుకోండి. వారు ఇక్కడ మంత్రులుగా లేరనుకోండి. మంచి రజాకారు కాలంలో కూడా ఈ టీక్ టీక్ విధానం పోవాలని, శ్రీ రామానందిర్ఘ మౌదులుకాని అందరూ తీవ్రమైన అందోళన చేశారు. ఆనాటి పెద్ద నిరంకు ప్రభుత్వమైన సైంపాం ప్రభుత్వమికి రామానందిర్ఘ మొదటి పవర్ యిం టీక్ టీక్ విధానం పోవాలని మౌషారాండులు ఇచ్చారు. చివరికి, ఆ నిరంకు జాగీర్ధారీ ప్రభుత్వంకూడా దానిని తాత్కాలికంగా ఆపేసింది. సింధివారు జైత్తు అధికారులుగా వచ్చిన తరువాత తిరిగి ఖైదీలను బెత్తాలచే పశువును కొట్టించటుల జరిగింది. బీడ్ జైత్తులలో ఖైదీలను చెత్తాలలో కొట్టించటుల జరిగింది. అప్పుడు ఈ పద్ధతి పోవాలని పెద్ద ఎత్తున ఆందోళన జగిగింది. ఇది ప్రశ్న ప్రభుత్వమని సిగ్గు లేకుండా చెప్పుకొనే యిం కాంగ్రెసు ప్రభుత్వము టీక్ టీక్ విధానాన్ని తిరిగి తీసుకు మస్తన్నామని. సైంపాం ప్రభుత్వం అఠం సంవత్సరాలంపా జాగీర్ధారీ విధానాన్ని కాపాడడానికి, తన చుట్టూపుస్తు ప్రశ్నాన్ని కాపాడుకోటానికి ఉన్న నిరంకు చట్టులు, శాసనాలు చేసి తన ప్రభుత్వం చుట్టాడ్యా ఇనుపగోడులను కట్టు కొండి. అయిపుటికి, ఆ సైంపాం ప్రభుత్వమికి యించూడు ఈ గతి పట్టింది. ఈనాటి

అధికారంలో పున్నవారు కూడా ఎల్లాకాలం ఇదే పరిస్థితి వుంటుంది, మీమీ పరిపాలన చేస్తాం. అని అనుకోవుండో, యా ప్రభుత్వం ఇంగీతజ్ఞానం కలిగియుండే, శాసనాలు తెస్తే బొగుంటుంది. ఒక నేరం చేస్తే ఒక శిత్, తిరిగి ఇంకో పని చేస్తే మంచో శిష్, ఆ విధంగా శిక్షించిన శిష్టును అనుభ వించకపోతే మరోశిత్, యా విధంగా యా బిల్లులో ప్రతి కౌజూలోసూ ఒక్కొక్క శిత్కును చేయాలని ప్రాస్తా యా బిల్లును తీసుకు వచ్చేరు. ఒక భైదీకి పని ఇచ్చిపుపుడు, అతడు దొనిని బుధీ పూర్వకంగా చేయిజూలకపోతే ఇంకా కంినమైన శిత్ విధిస్తారు. వాస్తవానికి అతను పని చేయు లేకపోయినప్పటికీ, అతనికి అన్వస్తతగా ఉండి చేయలేకపోయినప్పటికీ, జైలు అధికారి ఆ భైదీ బుధీపూర్వకంగానే ఆ పని చేయటం లేదని తలచినపుడు ఆ భైదీ ఎక్కువ కంినశిట్ను పొందవలని పుండును. మనకు ఒకటి ధర్మశాస్త్రిం బోధిస్తోంది. అదే ఏమంటే మనకు నరకతోకం, స్వద్రులోకం అనేవి ఉన్నాయని, నరకతోకంలో ఎన్నిరకాల బొధులై తే ఉన్నాయో, అన్నిరకాల బొధులు జైత్రులోడింటాయి. జైలు అధికారులు జైత్రులో పెట్టబడినవారిని పశువులుగా భావించే రకంగా తయారైనారు. వీరిని మానవులుగా గుర్తించాలని, వారికి కనీసమాపన మర్యాదనైనా ఒవ్వాలనేది, జైలు అధికారులకు ఉంధిదు. “ఏ భైదీ అయినా తనకు అప్పగించిన పని చేయక పోతే, అతనికి ఆ పని చేయటము చేతకారా, లేక అతనికి ఆ పని చేయటానికి శక్తిలేదో, లేక అతను బుధీపూర్వంగానే ఆపని చేయటంలేదా” — అనేది నిర్ణయించే అధికారం జైలు అధికారికి సూపరిం చైంపెంటుకు అప్పగించబడింది. ఆ పనిని సంగ్రహించే విషయం యా బిల్లులో తీసుకువస్తే బొగుండిది. మంత్రిగారు జైలు అధికారులను ఏ విధంగా సంస్కరించాలని అలోచించి ఒక చట్టం తేస్తే బొగుంటుంది. మొట్టమొదట వారి ప్రవర్తనలో మార్పు తీసుకువాలి. జైలు అధికారులు ప్రవర్తనలో ఎంత తాండరగా మార్పు తీసుకువస్తే, జైత్రులో జిగే అవకత్వపకలు నిరంకు సద్గుతులు అంత లొంగరగా ఆగేందుకు వేలుంటుంది. వారు భైదీలను పొంసలలో ఎత్తాంటి మార్పు లేదు. “జైత్రుకు వచ్చే భైదీలను ఏపిధంగా కంత్రోలు చేయాలి, వారిని ఏపిధంగా క్రమ శిష్టులో పెట్టాలి” అని చెప్పి, వారిని అన్ని రకాల శిత్కులు వేసేందుకు ఈ చట్టం ద్వారా అవకాశం కల్గించడం జరుగు తోంది. ४८ కౌజూలో (४) వ భాగంలో ఒకటి చూపించారు. “ఏ భైదీలైయైన, తగు కారణము తేకండి, తన శిత్ కొంత కొలము అపి పేయబడిన, రద్దుచేయబడిన, లేక సెలవు గ్రహింపబడిన ఘరులలో దేనినైన పాలింపనివో అతడోక చెరసాల సేరములలో నొనించట్లు భావింపబడును మరీయు సూపరిం చైంపెంటు, అతని సమాధానమును పొందిసి పదప, నట్టి నేరము నీ క్రిందివాసినే శిథింపవచ్చును.” — అని ४८ కౌజూలో చూపించారు. దాని ప్రకారం, వారికి ముత్తాళు నొవీపేయటం, ఉత్తర ప్రత్యుత్తరాలను బందుపేయటం, వారికి వచ్చే పొర్సైన్సు ఇష్టుకుండో పుండుటం, సాధారణ సౌకర్యాలను అపిపేయటం, వార్తాప్రతికలు ఇవ్వటంను ఆటి పేయటం ఇప్పీ జరుగుతూయన్నమారు. జైత్రుకు వచ్చినవారిని మానవులుగా భావించి, వారిని ఉత్సుకుపును మానవులుగా తయారు చేయంచి, వారి చేడుగుణములను దూరముచేసే ఉద్దేశమతో యా సంస్కరణలను తీసుకు వచ్చారా అంటే ఆ ఉద్దేశంతో తీసుకు రాలేదు. జైలుకు వచ్చినవాడు పశుపు. ఈ భోవమే జైలు అధికారులలో ఉంది. పూర్వాడిజిపకు పూర్వం కొన్ని దేశాలలో యుద్ధంలో పట్టుబడినవారిని బానిసలంగా చూచేవారు. వారిచేత అన్ని పనులు చేయంచుకోవానికి చేపరోకి వారిని అమ్మకానుటకు కూడా వాళ్ళకు అధికారం పుండేది. అతాగో జైత్రులోకి వచ్చినవారి

మాన, ధన, ప్రాణాలను ఆ జైలు అధికారికి అప్పగించటం ఈ చట్టుం ద్వారా జరుగుతోంది. జైలు సూపరీం తైండింటుకు సర్వ్యాధికారాలు ఇవ్వటం జరుగుతోంది. కొఱ్జరెలో ఒకటి చూపించారు. రె కొఱ్జలో “ఎక్కువ విసుగుకిలిగించు, తేక కటివుగు పనికి (ప్రభుత్వయుచే నానర్చబడి, నియమములచే విధింపబడునంతకాలం వరకు) మార్పుట” అని ప్రాశారు. ఒక శ్రీదీ ఒక పనిని సరిగొ, బుధీ పూర్వకంగా చేయలేదని జైలు అధికారి అనుకొస్తుప్పుడు అతనికి రెండవ పనిని, ఎక్కువ విసుగు కలిగించే పనిని, కటివున పనిని, అంటే గాముగ తిప్పించుట, వడ్డు దంపించుట మొదలైన పనిని ఇవ్వాలన్నాట. ఆ.పట్టంలోని ఒక గౌరవశ్యాఢు = ఏండ్లు జైలులో గడ్డిపాపని అన్నారు. ఆ జైలులో వారేంచేశారు? గామగలు త్రిప్పారా? ఏం చేశారు? జైలులో కూర్చుని జపం చేశారు. ఆనాడు జైత్యకు వెళ్లివారు జైత్యులో శ్రీదీలు మానసులుగా జీవించాలనే కనిస్తు హాక్కు కోసం పోరాచారు. తచ్చాడుకూడా ఆ కనిస్తు హాక్కుకోసం పోరాడుతూనే వున్నారు. ఈ చట్టులను ఆపోరాటాలను అణచటానికి పాశ్చాను ఇంకా కటినంగా జైత్యులో ఉంచటానికి మాత్రమే తీసుకురావటం జరుగుతోంది. కొబట్టి మంత్రిగారు మొదటినుండి చివరివరకు బాగా ఆలోచించి అన్నిపిధాల ఆభ్యివృద్ధిచెందిన యాకాలంలో, పాతచట్టు స్నేచాఖర అనే ముద్రవేసి తీసుకు రాకుండా, తిరిగి భ్రీదీలకు మేలు కలిగించే విధంగా బిల్లును తీసుకురావాలని కోరుతున్నాను. ఈ బిల్లును సెలక్కు కమిటీకి పంపించాలని మంత్రిగారీని కోరుతున్నాను.

(శ్రీ) బి. కృష్ణయ్య (అమ్మ-0-జనరల్) —ఈ బిల్లును గురించి రెండు పక్కాలనుండి కూడా....

**مسٹر چیر من :-** هندی میں کہیئے ۔

شری بی کرشنیا ۔۔ میں هندی میں برابر تقریر نہیں کرسکتا ۔

కూడా న్యాయశస్త్రి పండితులు మాట్లాడిన తరువాత దీనిపై నేను మాట్లాడటం అంత మంచిదీ కాకపోయినా నాకున్నటువంటి ఆభైప్రాయాలు, నాకున్న అనుభవాలను ఈచిల్లను దృష్టిలో పెట్టుకొని చూచినప్పుడు నా అభైప్రాయాన్ని ఈ శాసనసభ ముందు వుండడు నా కర్తవ్యమని భావిస్తున్నాను. పార్పు 'ఏ' పైట్టులో వున్నటువంటి సాకర్ణులనన్నింటిని కూడా ఇక్కడ భైదీలకు కలిగించాలనే ఉద్దేశంతోటి ఈ బిల్లను ప్రేవేశ పెట్టామని మంత్రిగారు చెప్పారు. ఇక్కడ వున్న పరిస్థితులు, జైత్రులో సాగుతున్న నిర్వంధవిధానం—ఇవన్నీ జైత్రులో అనుభవించి వచ్చినటువంటి సభ్యులు శాసనసభమందు వుంచినప్పుడు కొంతమంది ప్రభుత్వ పత్రాన్నిచి విషిర్మించడం జరుగుతోంది. అది ఏమంటే భైదీలకు గ్రౌబర్డ్స్ సూట్సు లొడిగించాలా? లేక వులన్ సూట్సు లొడిగించాలా? లేక పోతే ఏమిల్లుగుడ్డలు ఇల్లవ్వాలా? అని పరిషాసం చేయటం ఇవన్నీ జరుగుతున్నాయి. కానీ వాస్తవానికి భైదీల పరిస్థితి ఏమిటి? ఎందుకని ప్రతిపత్తినంచి యాన్ని విషిర్మిలు వస్తున్నాయి? వారికి ఏ రకమైన నటువంటి సాకర్ణులు సమకూర్చలనియున్నది? అనేది లేక ప్రతిపత్తినంచి వస్తున్న విషిర్మిలను సుహృద్యావంతో లీసుకో కుండా వాటిని పరిషాస దృష్టిలో తీసుకొనడం, పరిషాసం చేయటం జరుగుతోంది. ఇవ్వాళ్ళ కొంగ్రెసు ప్రభుత్వం ఏర్పడింది. కొంగ్రెసు శాసన సభ్యులుగాని, కొంగ్రెసు పార్టీ సభ్యులుగాని తిరిగి జైత్రుకు పోవలనిన అవసరం తేదని వారు భావిస్తున్నారని అనుకొంటున్నాను. కొంగ్రెసు సభ్యులు తిరిగి జైత్రుకు వెళ్ళవలనిన అవసరంవుందా? తేదా? అనే విషయం యిష్టుడు

నేను చెప్పవలసిన అవసరం లేదు. ఇప్పుడు మద్దాసు శాసనసభలో వున్న కాంగ్రెసు శాసనసభ్యుల ప్రభుత్వానికి కొన్ని సూచనలను చేయటం జరిగింది. ఎందుకంటే జైత్యును పెంటనే సంస్కరించాలని, ఈ సంస్కరణలు ప్రతి పక్షాలకు గాని లేక ఇరులకు గాని కాకుండా ఆ సంస్కరణలు మనకోసమేనని, మందు ఏరోజైనా జైత్యులకు పోవలసిన అవసరం రావచ్చును, అందుకని జైత్యును సంస్కరించాలని మద్దాసు శాసనసభ్యులు కోరుట జరుగుతోంది. १८-లో మద్దాసులో కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం ఏర్పడిప్పుడు ఆక్రమ కాంగ్రెసుపూర్వీలో కూడ యా చర్చలు వచ్చాయి. కానీ దానిని వ్యతిరేకించుట జరిగింది. కాంగ్రెసు ప్రభుత్వం ఏర్పడింది. కాంగ్రెసువారు జైత్యుకు పోవలసిన అవసరం లేదు. ప్రతిపత్ససభ్యులు, కాంగ్రెసును వ్యతిరేకించే సభ్యులే జైత్యుకు పోతారు. కొబట్టి జైత్యు సంస్కరణలు ఆక్రమించాలని వాడించడం జరిగింది. १८-రక వచ్చేసంకలన్లో కాంగ్రెసు వారే, జైత్యుకు పోవలసి వచ్చింది. ఆక్రమ వరిస్తితులు పూర్వం మాదిరిగానే వుండేటప్పటికి १८-లోనే ఆ చట్టాన్ని ఎందుకు మార్చుకోయామా? అని వచ్చాల్తావ పడటం జరిగింది. కొబట్టి ఈ నాడు కాంగ్రెసు సభ్యులు “గ్రౌంట్ సాట్పు కావాలా? వులన్ సాట్పుకావాలా?” అని పరిషోసం తెయివలసిన అవసరం లేదు. ఎంతకాలమైనా, కాంగ్రెసు ప్రభుత్వమైనా సాఁ, ఏ ప్రభుత్వమైనా సరే శాశ్వతంగా నిలబడుతుందని చెప్పడానికి విత్త్నేదు. రేపు ఎవరు అధికారం లోకి వస్తారో, జైత్యులకుపోయి ఎవరు కూఢలు అనుభవిస్తారో చెప్పలేదు. మన చేటులారా చేసిన చట్టాలు మనమే అనుభవించవలసి వచ్చినప్పుడు మనకు తెలుస్తుంది. అటుపంటి దుర్గతి పట్టుకుండా వుండాలంటే దీనిలో కొన్ని మార్పులు తేసుకు రావలసిన అవసరం వుంది. వాటిని ప్రతిపత్తం మిముందు పుంచటం జరుగుతోంది. అఱుతే ఈ బీల్సును చూచినప్పుడు నేను అనుకొన్నాడి, ఇది ఖైదీలకు సౌకర్యాలు కాకుండా పాటిసు యాక్స్ ట్రి తరువాత జైత్యులు ఆధికారులుగా వచ్చిన సింధిలు అమలు పరిచిన నిర్వంధ విధానం, క్రొంపు జైత్యులో ప్రవేశపెట్టిన నిర్వంధవిధానం ఖైదీలను అణచిపెట్టి చెప్పచేయల్లో వుంచుకోవాలంటే ఏ విధమైనటువంటి నిర్వంధ విధానాలు అవలంచించారో వాటినిర్మించిని క్రోడ్డికరించి, చట్టవిరుద్ధంగా చేసిన ఆ పనులను ఇప్పుడు చట్ట’ సమ్మతంగా చేయడంకోసం, ఈ చట్టాన్ని తెచ్చినట్లు, స్పృమపుతోంది. లేకపోతే ఈ రకమైన రచనలంటి చట్టాన్ని తీసుకురావలసిన అవసరం ఏమిటి? ఒక్క సౌకర్యం కూడా, దీనిలో, ఖైదీలకు చూపలేదు. సైజాంకాలంలో ఆపుచేయబడ్డ కూరడా దెబ్బల విధానం పాటిసు యాక్స్ ట్రి తరువాత మళ్ళీ అమలోకి తెచ్చారు. ఆ రోజులలో తప్పని సరిగా కొంతమంది మిమాద దీనిని ఉపయోగించడం జరిగింది. ఖైదీలను అణచిపెట్టడంకోసం జైత్యులు ఆధికారులను ఏపర్చుతే మాకు హక్కులున్నాయని అడుగుతారో వారిని అణచిపెట్టడంకోసం, వారి హక్కులను నాశనం చేయడంకోసం, ఈ కూరడా దెబ్బలు కొట్టించడం జరిగింది. ఈనాడుకూడా కూరడా దెబ్బల విధానం తీసుకురావడం తేదే పరిస్థితులలో ఖైదీలను అణచిపెట్టడానికి తెచ్చారు. ‘ఇన్నావ్ కోఇన్న బనానా ప్రౌ’ అని చెబుతారు. ఒక మానవుడు తప్పని చేసినప్పుడు తిరిగి ఆతినికి మానవత్వం తీసుకురావాలంటే, ఎపర్చుతే ఆ ఖైదీమిమాద పెత్తునం చేస్తారో, ఆధికారం చెలాయిస్తారో వారిపద్ధతి మానవత్వం లేనప్పుడు, ఆ ఖైదీని ఏ విధంగా మానవునిగా తయారు చేయగలుగుతారు? జైత్యులు ఆధికారులలో నేను చూచినంపరకు మానవత్వం కనపడలేదు. ఏ కొస్త విషయానికి కూడా తిట్టడం కొట్టడం, ముఖ్యంగా సింధిలు ఇక్కడికి వచ్చినపుట్టినుండి జరుగుతోంది. అంతకు మందు ఈ రకమైన చిత్రపీంసగాని నిర్వంధ విధానం జైత్యులలో అమిలు జరుగుతున్నట్లు లేదు.

ఈ పెద్ద మనమ్ములు ప్రౌదరాజుడు సంస్కారానికి వచ్చిన తరువాత జైత్ర్యలోని నిర్వంధవిధాఘం చూస్తే, అఖి కనీసం మానవుడు చేయవలసిన పనులు కొవు. పూర్తిగా వశత్వాన్ని ఆమలు జరిపారు సింధీలు. మామూలు సమస్యలకోసం—రొట్టై చాలాట తేదనిగాని, రేసెన్స్ స్క్రెమంగా యివ్వడం తేదనిగాని, కంట్రాక్టరు కాజేస్తున్నార్నిగాని అంటే కూర్చుబెట్టి బూటుకాళ్ళతో సెత్తిమాద తేస్తేవారు. ఆ బూటులు కువుండే ఇనువ సీలలు తగిలి భైదీలు బొధువడేవారు. మిరు ఆ బొధులు అనుభవిస్తే తెలుస్తుంటి. జైత్ర్యలో జపాలుచేస్తా కూర్చుని “మా మిాద ఏ నిర్వంధం చేయలేదు, జైత్ర్యలు అధికారులు బాగా ప్రవర్తిస్తున్నారు” అనిచెప్పడం ఈ ప్రథుత్వాన్ని పడగాట్టడం కోసం కుట్టులు పన్నుతున్నారు; వాళ్ళను అణవడం కోసం యివస్తి తెండుతున్నారుని అపాస్యాలు చేయటం జరుగుతోంది. ఈ చట్టంలో ఇంకాకటుంది. భైదీ అనారోగ్యంగా వున్నట్లు నటియి నట్లు యితే శిత్క విధింబడుతుందని పుండి. అనారోగ్యంగా వున్నట్లు నటించుట ఎలా? వాస్తవానికి అనారోగ్యంగా పున్నా జబ్బువచ్చిందని ఎవరు సర్టీఫై చేస్తారు? డాక్టరువద్దకు వెళ్ళాలి; ఆయన సర్టీషై చేయాలి. కానీ డాక్టరు సర్టీషై చేయడని నేను గట్టిగా చెప్పగలను. నాకు అనుభవం పుండి. నేను ఘూర్చలే జబ్బువల్ల బొధు పడుతూంటే డాక్టరువద్దకు వెళ్ళాను. అక్కడ భైదీలంతా వరండాలో కూర్చుని వుంటే, జమీదార్ క్రైతో వచ్చి మిాకు రోగంగా వుండా? మందు కొవాలా? అని కొట్టాడు. అతనిని డాక్టరు పిలిపించుతాడు—ఇంకమందిని ఇక్కడకు పస్తే ఎల్లాగూ? నేను ఇంచికి పోవద్దా—అని అంచూడు. అక్కడనుంచి భైదీలంతా తిగిగి కొట్లులోకి పోవలసి పుంటుంది. డాక్టరు సర్టీషై చేయడు. అక్కడ డాక్టరు, సూపర్టింటెంట్ అంతా కలని భైదీలచేత పని ఎక్కువగా చేయించుకోవాలని అలోచిస్తారు. ఎక్కువ పని చేయించి ఎక్కువ పంటలు, ఎక్కువ వృత్తుల్లి చేయించి ఆ తయారైన సరుకును దొంగతనంగా మార్కెటుకు చేరవేసి అమ్మకొనుట జైత్ర్యలు అధికారులుకు పరిపాటే. అంతేగాని, భైదీలకుబ్బ వచ్చినా, మిమి వచ్చినా సర్టీషై చేయటం జరగదు. భైదీ జబ్బుగా వున్నడని గట్టిగా చెబిలే, అతను పని ఎగ గొట్టుడొనికి అతా అంటున్నాడని ఎదురు తిగిగి మాట్లాడుతున్నాడని శిత్క విధిస్తారు. దేనివల్ల ఒక ప్రక్క భైదీయొక్క ఆరోగ్యంగురించి ప్రశ్న వహించక పోవడం, రెండోప్రక్క ఎదురు తిరగాడని పని చేయటంలేదని శిత్క విధింబడం జరుగుతోంది. భైదీలకు ఇన్ని శిత్కలు యిందులో సెట్టారు. గాని అధికారులు ఏదైనా తప్ప చేస్తే దానికేమా శిత్క లేదు. వారికి దేనిలో ఏ శిత్క చూపించేదు. భైదీలలో సత్పుర్వాని కలిగి పుండాలని, మానవల్లం కలిగి ప్రవర్తించాలని లేకపోతే శిత్క విధింబడుతుందని ఇందులో ఏమియి లేదు. ఒకటి చూపించారు. జైత్ర్యలు అధికారులు భైదీ అపోరాస్తి కాజేయకూడదని వాళ్ళ అపోరంలోనుంచి దీసుకోకూడదని పుండి. కానీ తీసుకుంటే శిత్క ఏమియి లేదు. అనలు అదే బుబ్బావు కావడానికి వీల్చేదు. ఎందుకంటే కంట్రాక్టరును, జైత్ర్యలు అధికారులు అంతా కలని ఈ పని చేస్తారు. అటువంటప్పుడు అపోరంగురించి ప్రికాయతు చేయడానికి భైదీలకు వీలులేదు. ప్రికాయతు చేస్తే ఎదురు భైదీలకే శిత్క తయారైతుంది. కొబట్టి ఎంతోస్తే అంత అపోరంతోటే తృప్తిపడేపుండాలి. వాళ్ళకు వున్న యిబ్బందులు చేపు కోడానికి వీల్చే కుండా చేయటంల్లి, వాళ్ళ అపోరాస్తి కాజేస్తున్నా చేపుకోడానికి, విచారించడానికి అవకాశాలు లేవు. కాపోతే జైత్ర్యకు పోయి చూడడానికి అవకాశం పుండన్నారు. ముందుగా జైత్ర్యలరుకు ఫలాని రోజున పన్నున్నామని తెలిపితే, ఆనాడు ఏర్పాటు చేస్తారు. భైదీల మసిసుడ్డలన్నీ శుభ్రంగా ఉత్సికించి ఆడిగించడం, ఆరోజున పూర్తిగా వండించిపెట్టడం జరుగుతుంది.

ఈ విధంగానే రోజుా అక్కడ జరుగుతుందని రోజుా భైదీలను ఇలాగే చూస్తున్నారని చెబుతారు. భైదీలను అడిగినా పెడుతున్నారనే చెబుతారు. అల్లా చెప్పుకపోతే తెల్లువారేసరికి వాళ్ళకు శిత్త పడుతుంది. బేడీలు లేయడమో, గంజ్ లో పెట్టుడమో, కొరడా దెబ్బలో లేకప్పి శిత్త పడుతుందో తెలియదు. అందుకని జైలు అధికారులతో పగ పెట్టుకోకాడయనే దృష్టితో వాళ్ళు మనముందు అక్కడ జరుగుతున్న విషయాలు చెప్పుడానికి సిద్ధపడరు. భైదీల అపోరాన్నంచి కొజేస్తున్న దొంగలను పట్టుకోటూనికి అంతకన్నా అవకాశంలేదు. కొబట్టే ఈ బిల్లులో ఆ కౌజు ఏదైతే పుండో అది పెట్టుడం అనవసరం. అక్కడకు ఎప్పుడు సడితే అప్పుడు వెళ్లి జైళ్లు పరిస్థితులు విచారించడానికి ఒక విచారణ నంఘున్ని నియమించి అవన్నీ విచారించడానికి పరిశీలించడానికి, తీర్పు ఇష్టుడానికి అవకాశం కల్పిస్తే బాగుంటుంది. అటువంటి సదుపాయాలేమి లేకుండా భైదీలమాద పెత్తునం చెల్లయించే అధికారులకే అలాగటి అవకాశాలు యావ్యాడం వలన భైదీలకు ఎతాటి సౌకర్యం వుండదు. ప్రతి పత్సంమంచి విమర్శలు చాలా వచ్చాయి. ఈ విమర్శల నన్నింటినీ దృష్టితో పెట్టుకొని ఈ బిల్లును సవరించాలని కోరుతున్నాను. ఇప్పుడు వచ్చిన బిల్లు సరైన రూపంలో రాలేదు. కొబట్టే ఈ బిల్లులో చాలా ప్రధానమైన మార్పులు చేయవలసి యస్తుది. అందుకని ఈ బిల్లును ఇప్పుడు చెంటనే పూర్తి చేయకుండా సెలెక్టు కమిటీకి పంపించి తిరిగి మరొకసారి ఆలోచించి మార్పులు చేసి తానన సభలోకి తీసుకు రావాలని కోరుతూ సేను ముగిస్తున్నాను.

*Shri L. K. Shroff (Raichur) : Without offering any apologies for speaking in English, I straightaway proceed to say a few words on what I feel about this Bill.*

I have been hearing many hon. Members taking advantage of this opportunity to rip open a leaf from their own autobiographies. I find their experiences in Jail are being used to throw light upon the Bill and its consideration. But, I suppose, Sir, that whatever one's experience might have been in the past, the attitude and the frame of mind that we should bring for the consideration of this Bill should be some basic accepted principles.

There could be no two opinions about reforming a prisoner. Modern theories on this subject have been accepted by all people. Why, for that matter, if we go back even to old days, our scriptures make it very clear that the highest form of punishment for any kind of criminal offence is repentence; and repentence should be brought about not by giving bodily punishment but by bringing about a mental reformation. This is a commonly accepted principle. So, we have got to study this Bill from that point of view. And, if we find any lacuna in this, certainly it is quite open to us to bring in amendments.

The Statement of Objects and Reasons of this Bill makes one point clear, namely, that this Bill has been placed before the Assembly in order that legislation on the subject might be on a par with what is obtaining in the rest of India. So, it has got a limited object to serve. That is to say, it does not intend to proceed beyond what is obtaining in the other States of India. So there should be no surprise in finding that this is a modification in a way of the Central Act of 1900. Of course, there are certain provisions which are found in this Bill and which existed in that old Act of 1900, which do not appeal to our sense of justice, for instance, provisions regarding cellular (or solitary) confinement, whipping and such other matters. Certainly, we can bring in amendments to do away with these things.

Many criticisms that have been laid before this House on this Bill refer mostly to the details rather than to the principles. The details are generally found in the rules that will be prescribed by the Government under this Bill, which after passing will become an Act. If we find that the executive is being armed with powers, which it is not necessary or which it would be too much to do, we might try to amend the respective provisions. To say that all that is necessarily found in the Jail Manual should also be incorporated in this Bill would be too straining the provisions of the Bill. Of course, certain Members have gone to the extent of saying that this Bill has been prepared or even copied with the sole object of having a particular class of people in view or a particular section of people having certain political principles and following. I do not know why this view should be taken and having thought in that light Members have gone to the point of saying that a particular place of confinement should also be defined in this Bill ; that separate arrangements should be made for separate Confinement of such prisoners, etc. I was surprised to hear some such recommendations from people who are day in and day out speaking about classless society and all that, but who want to have separate classes in jails. Well, as I said in the beginning, itself, this opportunity has been taken advantage of by Members for giving expression to their own experiences and we have got to take them that way. Barring that, I should say that this Bill serves the purposes for which it has been made, and, therefore, with some modifications and amendments we should not find it too much to accept it.

\*شري انوار او گن مکھی (افضل پور) :۔ مسٹر اسپیکر سر۔ اس بل کے بارے میں جو کانٹرورسی ادھر اور اودھر کے آنریول میئرس کے درمیان پیدا ہو گئی ہے میں سمجھتا ہوں

کہ اس میں کچھ ایسی چیزیں ہیں جنکو سمجھکثیو اپروج ( Subjective approach ) کہتے ہیں - چونکہ بہت سے ممبرس جیل کی زندگی گزار چکرے ہیں اس لئے اس سلسلہ میں آبجکٹیو اپروج ( Objective approach ) کرنا چاہتے ہیں - اگر واقعی اس قانون میں کسی قسم کی کمزوری ہے تو ادھر کے ممبرس اور اودھر کے ممبرس دونوں کو سوچنا چاہتے ہیں - پہلا اعتراض یہ کیا گیا ہے کہ سنہ ۱۹۰۰ع کے سنٹرل یکٹ کی کاپی ہے - میں سمجھتا ہونکہ سنہ ۱۹۰۰ع کا ہو یا اوس سے بھی سوال پہلے کا اگر کچھ اچھی چیزیں اس میں ہیں تو ہمکو قبول کرنے میں تامل نہیں ہوتا چاہتے - جو چیزیں سنہ ۱۹۰۰ع میں اچھی تھیں وہ سنہ ۱۹۵۲ع میں بڑی نہیں ہو سکتیں - اور اگر بڑی چیزیں تھیں تو آج اچھی نہیں ہو سکتیں - اگر ایسی چیزیں اس میں ہیں جو موجودہ سوسائٹی کے رہن سہن کے طریقوں کے خلاف ہیں تو اونکو اڈجسٹ ( Adjust ) کیا جانا ضروری ہے - اگر سماج کے خیالات سے اسکا کوئی واسطہ نہیں ہے تو اسکو ریتروگریسو ( Retrogressive ) قانون کہا جا سکتا ہے - صرف اس بناء پر کوئی اعتراض نہیں کرنا چاہتے کہ یہ سنہ ۱۹۰۰ع کا قانون ہے یا اوسکی کاپی ہے - یہ ٹھیک نہیں ہے -

میں سمجھتا ہوں کہ پنشمنٹ کے بارے میں یہ کہا گیا ہے کہ ریٹری یوٹیو پنشمنٹ ( Retributive punishment ) نہیں بلکہ ریفار میشیو پنشمنٹ ( Reformatory punishment ) ہوتا چاہتے - یہ واقعہ ہے کہ انتقامانہ جذبے کے تحت کسی کو سزا نہیں دیجانی چاہتے - ایک شخص کو سزا ہونے کے بعد اوسکی آزادی پوری طرح سلب ہو جاتی ہے کیونکہ وہ سوسائٹی میں رہنے کے قابل نہیں رہتا - آزادی سلب ہونے کے بعد اسکے حقوق کا سوال نہیں رہتا بلکہ ہیومن پلین ( Human plane ) پر کس حد تک اسکو ٹریٹ ( Treat ) کرنا چاہتے یہ سوال رہتا ہے - لیکن یہ کہنا ہے کہ وہ آزاد ہے اور جیل کو اپنے قادر ان لا ( Father-in-law ) کا گھر سمجھ کر مہمان کے طور پر جا کر مداعات مانگنا درست نہیں ہو سکتا - یہ ضرور غور طلب ہے کہ جیل کے قواعد کی خلاف ورزی کی صورت میں اسکو کس قسم کی سزا دیوانی چاہتے - چار قسم کی سزاویں ہوتی ہیں -

1 - وہنگ	Whipping
2 - آئرننگ	Ironing
3 - اکسٹرا لیبر	Extra labour
4 - سپریٹ	Separate

رکھنا -

یہ چاروں چیزیں ہیومن ( Human ) نہیں ہیں - ایک آنریبل ممبر نے کہا کہ قیدی خلاف ورزی کرتے ہیں تو جیل کے داروغہ یا وہاں کے دوسرے افسر خود میں تحقیقات کرتے ہیں اور خود ہی سزا دیتے ہیں - یہ اعتراض صحیح نہیں ہے - کیونکہ وہ صرف ڈسپلین ( Discipline ) کی خلاف ورزی کی سزا دیتے ہیں - جو

انتظامی نوعیت کی ہوئی ہے۔ کوئی پینل کوڈ ( Penal Code ) کی خلاف ورزی کرنے تو اسکو پھر کورٹ ہی بھیجا جاتا ہے۔ یہاں جو سزاً دھاقی ہے وہ جوڈیشیل نوعیت کی نہیں ہوئی بلکہ انتظامی ہوئی ہے۔ اس بل میں آگے کے پراویزون میں بالکل صاف طور پر کہا گیا ہے کہ کوئی کریمنل ایکشن ( Criminal Acts ) کے تحت سزاً دیجائے گی۔ اور اوسے پینل کوڈ ( Penal Code ) کو بھے با جائے گا..... کورٹ کو بھے با جائے گا.....

مسٹر چیرمن :- کیا آپ اور وقت لینگے؟

شریانا راؤ گن مکھی :- ہاں میں اور وقت لوں گا۔

مسٹر چیرمن :- اب ہم برخاست کرتے ہیں۔ ساڑھے پانچ بجے ملینگے۔

The House then adjourned for recess till Half Past Five of the Clock.

The House reassembled after recess at Half Past Five of the Clock.

[Mr. Deputy Speaker in the Chair]

شریانا راؤ گن مکھی :- تو میں یہ کہہ رہا تھا کہ ڈسپلینری ایکشن ( Disciplinary action ) کے سلسلہ میں جو سزاویں دی جائیں گی اوس کے متعلق رولس بنانے کے پاورس گورنمنٹ نے اپنے ہاتھ میں رکھے ہیں۔ اس میں بھی پینل آفسس آفسس ( Penal offences ) کون کون سے ہو سکتے ہیں۔ اور پینل آفسس کو سیسٹمیشنیو آفسس ( Substantive offences ) کرکے اون کے لئے بھی کیا سزا مقرر ہوئی چاہئے اوس سے متعلق اختیارات بھی گورنمنٹ اپنے ہاتھ میں لے رہی ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ جو سزاویں دی جاتی ہیں وہ چار قسم کی ہو سکتی ہیں۔ اس بل کے تحت وہپنگ ( Whipping ) کی سزا بھی دی جا سکتی ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ وہ سزا اس بل میں رہنے کے قطعاً لائق نہیں ہے۔ اور وہ بھی اس زمانے میں ایک ایسا ان ہیومن ( In human ) فعل ہے جس کو کوئی متمدن سوسائٹی برداشت نہیں کرسکتی۔ اس لئے ممبر انچارج سے میری یہ پرارتھنا ہے کہ وہ اس چیز کو اس بل سے نکال دیں۔

*Shri B. D. Deshmukh (Bhokardan-General) :* I think the Member-in-charge is not present in the House.

شریانا راؤ گن مکھی :- نوٹ تو لیا جا رہا ہے۔ بہرحال میں کہہ رہا تھا کہ وہپنگ کی سزا قطعاً بند کی جائے اور اس کو اس بل سے نکال دیا جائے تو ٹھیک ہو گا اس قانون کے امنسٹریبو سکشنس کے ذریعہ آٹرینگ یعنی زنجیر وغیرہ پہنانا میں سمجھتا

ہوں کہ ڈینجرس ( Dangerous ) قسم کے قیدیوں کے لئے تو ٹھیک ہو سکتا ہے۔ لیکن عام حالات میں اگر کوئی قیدی جیل کے احکام کی خلاف ورزی کرے تو، اس نمونہ کی سزا نہیں دی جائی چاہئے دوسری چیز سیلوولر پنشمنٹ ( Cellular punishment ) ہے وہ بھی اس زمانے کے تقاضے کے خلاف ہے۔ ملاقات کے وقت بھی اگر کوئی دوسرا شخص نظر آئے تو جیل اوس کو سیلوولر پنشمنٹ دیگا وہ بھی ٹھیک نہیں ہے۔ کیونکہ جس طرح اودھر کے آتریبل ممبرس نے ریمارک کیا سیلس ( Cells ) جو بنائے جاتے ہیں اون میں سورج کی روشنی نہیں پہنچتی اور نہ سینیٹری ارینجمنٹ ( Sanitary arrangement ) رہتا ہے۔ لیکن اس کی بھی سزا دی جائے گی۔ زیادہ سے زیادہ اوس کو قید تھائی میں رکھا جا سکتا تھا جہاں اوس کو اوس کے دوست وغیرہ سے ملاقات کا موقع نہیں دیا جاسکتا تھا۔ ایکن انتقامی جذبہ کے تحت اون کو ڈنجنس ( Dungeons ) میں رکھنا بھیک نہیں کسی روم میں قید تھائی کی سزا دی جائے گی۔ جہاں سورج کی روشنی پہنچ سکے اور سینیٹری ارینجمنٹ ہوں۔ شاذ و نادر صورتوں میں جن قیدیوں کو علحدہ رکھنے کی ضرورت محسوس ہو رکھا جا سکتا ہے۔ لیکن ڈنجنس میں رکھنا حالات کے منافی ہے۔ اس کے بعد قیدیوں سے اکسٹرا لیبر ( Extra labour ) لینے کے متعلق کہا گیا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ ڈینجرس قسم کے قیدیوں سے اکسٹرا لیبر لیا جا سکتا ہے۔ لیکن سزا کے طور پر اکسٹرا لیبر لینا ٹھیک نہیں معلوم ہوتا۔ عدالتون سے اون قیدیوں کو جو سزا با مشقت دی جاتی ہے وہ خود کافی ہوئے ہے۔ لیکن جیل کے قواعد کی خلاف ورزی کرنے پر اون کے لئے سزا تجویز کرنا اور اون کوٹاٹ یا کمبل پھنانا موجود حالات میں ٹھیک نہیں ہے۔ جس وقت اس بل کے سلسلہ میں رولس فریم کئے جائیں گے اوس وقت ان تمام چیزوں کو اپنی درشتی میں رکھنا چاہئے۔ تاکہ قیدیوں کو اعتراض کا موقع نہ ملے۔ انسانی طریقہ پر جس طرح کا برთاؤ کیا جانا چاہئے وہ برتاب کیا جائے۔ اس کے علاوہ یہ بھی میں عرض کروں گا کہ سبسٹیٹیو آفسس ( Substantive offences ) کے سلسلہ میں رول میکنگ پاورس ( Rule making powers ) جو گورنمنٹ لے رہی ہے وہ گویا اس اسمبلی کے اختیارات کو ڈیلیگیٹ ( Delegate ) کرنے کے متعدد ہے۔ یہ اختیارات کسی سب آرڈینیٹ لیجیسلیشن کے ذریعہ کسی اکریکیبیو کو نہیں ملنی چاہئے۔ بلکہ جیل کے احکام کی خلاف ورزی یا سبسٹیٹیو آفسس کے متعلق اس قانون میں بھی سزا کا اندراج ہونا چاہئے کہ کون کون سی خلاف ورزیاں آفسس کھلائی جاسکتی ہیں اون کے متعلق کیا کیا سزا اس قانون کے تحت دی جاسکتی ہے۔ اس کا ایک خاکہ اگر اس بل میں وکھا جاتا تو مناسب تھا۔ لیکن اس طرح پاورس ڈیلیگیٹ کرنا ٹھیک نہیں ہے۔ ٹسپلن کی خلاف ورزی کی صورت میں جیل سپرینٹنٹ سزا دیگا۔ لیکن کیا گورنمنٹ اس کے متعلق نہیں سورج سکتی کہ اس طرح کی جو المنسٹریٹیو سائزیں دی جائیں گی اون کی بھی تحقیقات کیوں نہ کی جائے۔ کیوں نہ اون قیدیوں کا چالان کیا جائے جو ٹسپلن کی خلاف ورزی کرتے ہوں۔ اوس کے متعلق ثبوت پیش کر کے عدالت سے سزا دلاتی جاسکتی ہے۔ قیدیوں کو خود عدالت سے سزا ملتی ہے پھر جیل بھی سزادیتا ہے

یہ دونوں سزاٹین قیدیوں کو نہیں دی جانی چاہئیں - اون کو اس کا سبجکٹ ( Subject ) نہیں کرنا چاہئے - اس کے علاوہ جیل کے رفارس کے سلسلہ میں جو رفارمس کئے جانے چاہئیں وہ رول میکنگ پاورس کے تحت کریں تو اچھا ہوگا - جیسا کہ اوس طرف کے آڑیل ممبرس نے کہا کہ اگر کوئی شخص کوئی پرووکیشیو ( Provocative ) الفاظ استعمال کرتا ہے تو گویا جیل کے ڈسپلن کی خلاف ورزی کرتا ہے اوس کو سزا دی جاسکیگی ایک شخص جو یہ نہیں سمجھ سکتا ہو کہ کس قسم کے الفاظ افسیو ( Offensive ) یا ڈسیو ( Defensive ) قسم کے ہیں - اس ملک کا رواج کیا ہے ان تمام چیزوں کو سبجکٹیو آئیٹیو ( Subjective attitude ) کریں تو نہیک نہیں ہوگا - اس لئے محض الفاظ کی بنا پر کہ یہ الفاظ افسیو ہیں یا پرووکیشیو ہیں جیلر کو سزا دینے کا اختیار دینا گویا اوس کو غیر معمولی اختیارات دینے کے متراffد ہوگا۔ جیسا کہ ایک چیف جسٹس نے کہا

### 'Hard words break no bones'

یعنی سخت الفاظ سے کسی کی ہڈی نہیں ٹوٹتی - کسی چیز سے مارنے سے نقصان پہنچ سکتا ہو لیکن محض سخت الفاظ کو بیس بنا کر سزا دینا ٹھیک نہیں ہے - جیل کے آفسرس قیدیوں کے ساتھ جس قسم کا برتواؤ کریں گے وہ لوگ بھی اون کے ساتھ اوسی قسم کا برتواؤ کریں گے - اس لئے میں کہوں گا کہ اگر اون کی اصلاح کا مقصد ہوتا اون کے ساتھ زیادہ سے زیادہ نرمی کی جانی چاہئے - تاکہ اون کو ریفارم کیا جاسکے - کسی انتقامی جذیبہ کے تحت سزا نہیں دینا چاہئے - بلکہ اگر کوئی شخص سزا پاکر جیل میں آئے تو ہماری کوشش اوس کے متعلق یہ ہوف چاہئے کہ اوس کا ریفارمیشن ( Reformation ) ہو اور سوسائٹی میں جائے تو اپنا مقام پاسکے - جیل میں رکھنے کا مقصد یہ ہوتا ہے کہ اوس کو سوسائٹی سے کچھ عرصہ کے لئے علحدہ رکھا جائے - ہمیشہ کے لئے تو اوس کو علحدہ نہیں رکھا جا سکتا - اگر جیل میں بھی سختی کی جائے گی تو اوس کا جو روگ ہے اور جو سائکالوجیکل ڈفکٹ ( Psychological defect ) اوس میں ہے وہ دور نہیں ہوگا - میں یہ کہنے والوں میں سے نہیں ہوں کہ جیل میں ڈسپلن نہیں ہونا چاہئے - یا اوس کو منوعہ کام کرنے کی آزادی رہنی چاہئے - اوس پر قیود عائد کرتا چاہئے - جب اوس کی باہر کی آزادی سلب ہو جاتی ہے تو پھر وہاں آزادی کا سوال نہیں رہتا - لیکن اوس کے ساتھ اس طرح کا ٹریفمنٹ ( Treatment ) کیا جائے یہ دیکھنا ضروری ہے - اوس کے جو فنڈامیشن رائٹس ( Fundamental Rights ) ہیں یعنی اگر وہ سزا یا قతھ نہ ہو اور اوس کو اگر باہر سے کھانا کپڑا نہ مل سکتا ہو تو مناسب کھانا اور کپڑا دیا جانا چاہئے - یہ اوس کے المنٹری رائٹس ( Elementary Rights ) ہیں جن کو ڈینا نہیں کیا جاسکتا - اور تمام سہولتیں جو ممکن ہوں قیدیوں کو دینا چاہئے - یہ گویا اس بل کا مقصد ہونا چاہئے - مبسویڈیری جیلوں کے اعلان کرنے کا اختیار بھی لے لیا گیا ہے - بعض تعلقات میں ایک آدھ کمرہ ہوتا ہے - وہیں بالخانہ وہیں کھانے

پینے کا انتظام اور وہی مجرم کو رکھا جاتا ہے ممکن ہے کہ ڈسٹرکٹ ہیڈ کورٹ میں اچھی جیلیں ہوں لیکن تعلقہ ہیڈ کوارٹر میں ہم دیکھتے ہیں کہ ان کا نام تو جیل ہوتا ہے لیکن وہ دراصل ڈنجنس ہوتے ہیں - وہاں نہ ہوا آسکتی ہے اور نہ روشنی وہاں کی کنڈیشن بھی ان سینیٹری ( Insanity ) ہوئی ہے اور ملزموں کو وہیں رکھ کر تحقیقات کرائی جاتی ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ جب ہارا مقصد پرزنس کو ریفارم کرنا ہے تو اولاً ان کی حالت کو سدھارتا چاہئے اور ایک یونیفارم پیٹر ( Uniform pattern ) لیکر تمام جیلوں کی از سر نو تنظیم کرنا چاہئے اگر اسکے لئے اخراجات ہوتے ہیں تو اس کی پروا نہ کی جانی چاہئے لیکن کنڈیشنس کو بہتر بنانا کر جیل کو اس قابل بنانا چاہئے کہ وہاں ایک ہیون لائف ( Human life ) گزر سکے اور وہاں انڈر ٹرائلس ( Under-trials ) اور قیدیوں کو رکھا جا سکے - اس طرف گورنمنٹ کو خاص توجہ دینی چاہئے ۔

سزاوں کے بارے میں اس سے پہلے کہہ چکا ہوں - مزید یہ کہ وہنگ ( Whipping ) کی سزا ختم ہوئی چاہئے - اور اسی طرح پابہ زنجیر کرنے کی سزا بھی معمولی صورتوں میں نہ دیجائی چاہئے - نیز یہ کہ قیدیوں سے اکٹرا لیبر ( Extra labour ) لینا بھی صحیح نہیں ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اس سے انکی ہلت ( Health ) بگڑ جاتی ہے کیونکہ عام طور پر ڈاکٹر یہ مشروہ دیتے ہیں کہ وہ ہٹا کٹا آدمی ہے اس سے دس پندرہ گھنٹے کام لے سکتے ہیں - لیکن یہ صحیح نہیں ہو سکتا - پہلے سے جو قید با مشقت کی سزا بیگت رہے ہیں اس سے اور زیادہ مشقت لیں تو یہ مناسب معلوم نہیں ہوتا ۔

میں اور ایک چیز یہ کہنا چاہتا ہوں کہ اگر جیل میں کوئی قیدی افس ( Offence ) کرتا ہے تو اسکو کا گنیزیبل افس ( Cognizable offence ) قرار دیکر عدالت میں پیش کیا جائے اور اگر وہاں اوسکے کے لئے مزید سزا کی تجویز ہوتی ہے تو کوئی مضائقہ نہیں اور اس میں کوئی چیز قابل اعتراض نہ ہو گی اس کے ساتھ ساتھ اور ایک چیز یہ ہے کہ جیل ادھیکاریوں کو رول میکنگ پاؤں بہت زیادہ نہ دینا چاہئے - مجھے اس بارے میں شکایتیں سننے کا موقع ہوا کہ راشنس بھی پورے نہیں دئے جاتے اور بڈنگ وغیرہ بھی نہیں دیجاتی - اس طرح کی بے ضابطگیاں رول میکنگ کے ذریعہ ختم ہو سکتی ہیں - اس لئے یہ پاور جیل اٹھاریٹیز کو نہ ڈیا جانا چاہئے ۔

\* شری انداہا (کشٹگی) :- مسٹر اسپیکر سر - پیش شدہ بل پر کافی بحث ہو چکی ہے مگر میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ جیسے جیسے زمانہ بدلتا ہے ویسی تبدیلیوں کی ضرورت ہوتی ہے۔ ایک زمانہ تھا کہ لوگوں میں تعلیم کا فقدان تھا یا انہیں شعور نہ تھا وہ ایک سامراجی دور تھا اور اوس وقت اپنی آسائش کے معاملات میں آواز بلند کرنا بھی بجائے خود جرم تھا - لیکن اب جتنا راج قائم ہو چکا ہے اس لئے انسان ہر قسم کی سہولتیں حاصل کرنے کا متنبی ہے۔ وہ سہولتیں جنکے لئے اوسنے کافی قربانیاں دی ہیں۔

ہمارے پاس زمین کی کمی کی وجہ سے ذرائع آمدنی نہیں رہے ہیں اور چونکہ معاشی حالات بھی نہیں ہیں اس لئے حکومت بھی بوری پوری سہولتیں نہیں دے سکتی ہم یہ بھی محسوس کرتے ہیں۔ اکثر انسان اپنے حالات میں تبدیلیاں خود پیدا کرتا ہے اور تا بعد امکان اپنے نفس پر قابو رکھنے کی کوشش کرتا ہے لیکن بعض دفعہ ایسا ہوتا ہے کہ نفس اوس پر غالب آ جاتا ہے اور انسان اس مجبوری کے عالم میں وہ کام کرتا جاتا ہے (چاہے وہ اوسکی ضروریات رفع کرنے کے لئے ہی کیوں نہ ہو) جو قانون کی خلاف ورزی متصور ہوتا ہے۔ اس طرح بجالت مجبوری انسان مجرم بن جاتا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ کوئی شخص اپنے آپ جرم کر کے جیل جانا نہیں چاہتا۔ سگر وہ مجبور ہو کر جرم کا ارتکاب کرتا ہے اور جیل جاتا ہے میں اسکے لئے ایک آسان منال پیش کرتا ہوں۔ خواہ تعلیم یافتہ ہو یا غیر تعلیم یافتہ ہر شخص کی اپنی مجبوریات ہوتی ہیں اور ایک وقت ایسا آتا ہے کہ مجبوریات اوسکے کنٹرول سے باہر ہو جاتی ہیں۔ بیروزگاری ہی کو لیجئے۔ آج کل اس بھیانک بیروزگاری کی وجہ سے سنجدہ طور پر سوجھے والے لوگ بھی پریشان ہیں وہ عقل سے کام لینا چاہتے ہیں لیکن حکومت کی طرف سے کوئی سہبتوں نہیں مل رہی ہے اور نہ سوسائٹی انکی امداد کر رہی ہے۔ انک طرف بیروزگاری اور دوسری طرف بھاری ذمہ داریاں ہیں اور وہ انکو مجبور کر دیتی ہیں تو نفس کی خواہشات یا ضروریات کو رفع کرنے کے لئے گوکہ اونکا ضمیر انہیں لعنت ملامت کرتا ہے ایک عمل کریبی ہوتے ہیں تو وہ قانون کی گرفت میں آکر جرم قرار دئے جاتے ہیں۔ جرائم کے کئی اقسام ہیں اور انکے لحاظ سے کم زیادہ سزاگی بھی ہیں۔ جیل میں کسی مجرم کو بھیجنے اور انسداد جرائم کی تدبیر اختیار کرنے پر ہیں کوئی اعتراض نہیں ہے۔ لیکن ہم یہ چاہتے ہیں کہ جو شخص جیل جاتا ہے تو وہاں اوسکی رہائش کا انتظام اور اوسکے ساتھ سلوک ناقابل برداشت نہ ہونا چاہئے۔ خاص طور پر اس زمانے میں جیکہ جتنا راج قائم ہو چکا ہے تو قیدیوں کے ساتھ بھی جو سلوک ہونا چاہئے وہ ناروا نہ ہو اور انکو جائز سہولتیں بھم پہنچانے کے لئے حکومت امداد کرے۔ ساتھ ساتھ اسکو ایک ناگرک (ناراگریک ) سمجھتے ہوئے اسکے ساتھ ایسا سلوک کیا جانا چاہئے کہ وہ اپنے سایتہ اعمال اور کردار پر رینٹ (Repent ) کرنے ہوئے نفس کی زیادتیوں کو ختم کرے اور آئندہ کیلئے اچھے کام کرنے کی خاطر اپنی صلاحیتوں کو ابھارنے کی کوشش کرے۔ قیدی کو بھی ایک انسان کا رتبہ دیکر کچھ سہولتیں دینا ضروری ہے کیونکہ ایک مرتبہ جرم کرنے کے سزا بھگتی کے باوجود بھی اس میں ایک اچھا ناگرک بتتے اور اپنے گھر دار کو سناہنے کی قوت باقی رہتی ہے اسلئے جیل خانہ میں بھی اسکی غذا۔ اسکی رہائش اور دیگر چیزوں کے متعلق معمولی سہولتیں مانگی جا رہی ہیں۔ اسلئے موجودہ حکومت قیدیوں پر زیادہ توجہ دیکر انکو اچھے ناگرک بنائے۔ اگر لوگ بیمار ہوں اور پر وقت علاج نہو تو اموات ہوتی ہیں۔ اسی طرح قیدیوں کا بھی حال ہے۔ انکے روحانی علاج کی طرف زیادہ توجہ دینا چاہئے۔ انکو ایک اچھا شہری بتتے کے پورے پورے موقع سربوہ کرنے چاہئیں۔ تھائی میں وقت گزارنے کی وجہ سے

وہ خود بخود مجبور ہو جاتے ہیں اور اسکا انکی صحت پر بھی بہت اور پڑنے کا امکان ہوتا ہے - ایسی صورت میں یہ معمولی سہولتیں بھی مہیا نہ کیجائیں تو ان پر بڑی سختی ہو گی - خصوصاً اونکے عزیزوں سے ملاقات کرنے کے بارے میں سختی نہ کیجائی اگر باپ، جیل میں ہے اور اسکے لیے یا یہی کی شادی ہو رہی ہے تو وہ زندہ رہنے کے باوجود چونکہ وہ جیل میں ہے شرکت نہیں کرسکتا - انسانی ہمدردی اور انسانی قرابت کے پیش نظر اسکو ضہانت پر رہا کرکے شرکت کا موقع دینا چاہئے - انہیں اس بات کا موقع ہونا چاہئے کہ وہ اپنے گھر دار کے معاملات میں گفتگو کرسکیں اور اپنے عزیزوں سے ملاقات کرسکیں تاکہ اچھے اعہل کرنے کی انہیں ترغیب ہو اور جیل سے چھوٹنے پر وہ پھر کبھی جرائم کا ارتکاب نہ کریں - انسداد جرائم کی ایک ذمہ ناری حکومت پر ہے اس لئے قیدیوں کے نفس کی زیادتیوں کو گھٹانا اور انہیں ایک اچھا ناگرک بنانے کے لئے یہ ایک اچھا وقت ہوتا ہے جبکہ قیدی جیل میں رہتا ہے - اسلئے قیدیوں کے ساتھ بھی حکومت اچھا سلوک کرے - انکے ساتھ ایک بھائی اور ناگرک کے ساتھ جیسا بتاؤ کیا جاتا ہے ویسا برداشت کرے تاکہ آئندہ کیلئے انہیں عبرت ہو اور وہ آئندہ جرائم سے باز رہیں مغض اس لئے کہ وہ ایک برا کام کرکے وہاں چلا گیا ہے اسکے ساتھ برا سلوک نہ کیا جائے ان چیزوں کی جو کمی ہے اوسکو اس قانون کے ذریعہ رائج کیا جائے تو مناسب ہے -

\* شری ایل - این - ریڈی (وردھنا پیٹھے) : - سٹر اسپیکرسر - اب ہمارے سامنے جو پرزنس بل آیا ہے اس پر اوس طرف کے اور اس طرف کے آنریبل ممبرس نے اپنے اپنے خیالات کا اظہار کیا - خاص طور پر اوس طرف کے چند آنریبل ممبرس نے نہایت سنجدگی سے سوچ کر کم از کم اس بل کے بارے میں یہ بتلایا کہ آج کے حالات میں حقیقت میں کن کن چیزوں کی ضرورت ہے - مگر سوائے ان چند آنریبل ممبرس کے دوسرے آنریبل ممبرس نے اس بل کی تائید میں کہا اور یہ بتلایا کہ اپوزیشن کی جانب سے جو مطالبات کئے جا رہے ہیں وہ قیدیوں کے لئے لکڑیز (Luxuries ) ہیں اس لئے انکے مطالبات ناقابل عمل ہیں - یہ ان کا استدلال تھا - میں ادب یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ ان کا کنسپشن (Conception ) آج کے بدلتے ہوئے حالات کے لحاظ سے صحیح نہیں ہے وہ کنسپشن فیوڈل ڈیز (Feudal days ) کا ہو سکتا ہے -

یہ اوس زمانہ کا کنسپشن ہو سکتا ہے جبکہ طرح طرح سے لوگوں کو گناہگار بناتے اور حقیر نظروں سے دیکھتے تھے - آپ دیکھتے کہ قتل کے مقدمات میں کیسے لوگوں کو ماخوذ کیا جاتا تھا - اگر قتل کے مجرموں کے لئے سہولتیں مانگی جاتی توہیں توکھتی تھیں کہ یہ کیسے ممکن ہے - لیکن قتل کیوں ہوا اس پر غور نہیں کیا جاتا تھا - ایسا ہی اب آپ بھی غور نہیں کر رہے ہیں - جگہ گڑے کیوں ہوتے ہیں - وارداتیں کیوں عمل میں آتی ہیں انکی اصل وجہ کیا ہے اس کا پتہ چلانے کی کوشش نہیں کی جاتی - کسی کیوں جانبداد سے محروم کیا جاتا ہے تو کسی کو قاتون کی خلاف ورزی کرنے پر مجبور کیا جاتا ہے جس کی وجہ سے اکثر جرائم کا ارتکاب ہوا کرتا ہے - وہ جرم صرف اسی صورت میں

کرتا ہے جیکہ وہ مجبور ہو جائے ۔ اوسے قانونی سہولتیں حاصل کرنے سے باز رکھا جائے ۔ لیکن، یہ نہیں سوچتے ۔ بلکہ یہ بتلانے کی کوشش کرتے ہیں کہ مقتول کے بیوی پچوں کا کیا حشر ہوگا ہم بھی مقتول کے حقوق کو مانتے ہیں اور اس کے لواحقین کو ضرور حقوق ملنے چاہئیں لیکن خواہ خواہ کوئی شخص کسی کا قتل تو نہیں کرتا ۔ خصوصاً ایسی صورت میں جیکہ اوسے یہ معلوم ہو کہ اس فعل کے انجام دینے کے بعد اوسے کیا نتیجہ بھگتا پڑیگا ۔ اسی طرح چوری کی وارداتیں کیوں ہوتی ہیں ۔ آجکل بیروزگاری ہونے کی وجہ سے پیٹ بہر کھانا تک نہیں ملتا تو وہ چوری کرنے پر مجبور ہوتے ۔ ان کے لئے آج ہمارا کانسٹیویشن یہ گیارتی نہیں کرتا کہ ہم آپ کو کام دینگے ۔ یہ گیارتی نہ ہونے کی وجہ سے وہ مجبور ہو کر مختلف طریقوں سے روزی کام کرنے کی کوشش کرتے ہیں ۔ اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ جرم کے ارتکاب کے لئے کوئی نہ کوئی معاشی وجہ ضرور ہوتی ہے ۔ بہر ایسی صورت میں جیکہ کوئی شخص اپنی مرضی سے خوشی حاصل کرنے کے لئے جرم نہیں کرتا اور جیل جاتا ہے تو اوس کے ساتھ کیا سلوک کیا جانا چاہیئے وہ قابل غور ہے ۔ اگر جیل میں غیر انسانی سلوک کیا جائے تو قیدیوں کی اصلاح کیونکر ہوسکتی ہے ۔ اس پر غور کرنا چاہئیے ۔ پرانے اصولوں کے لحاظ سے جو سلوک انکے ساتھ کیا جا رہا ہے اس پر غور کر کے اس کو بدلتے کی ضرورت ہے ۔ سب لوگوں کا تجربہ ہے کہ جیلوں میں قیدیوں کے ساتھ انسان کی حیثیت سے سلوک نہیں کیا جاتا ۔ انکی آزادی سے میرا یہ مقصد نہیں ہے کہ ہم باہر رہ کر جس طرح جو چاہے کرنے ہیں وہاں وہ بھی وسایہ کریں لیکن اپنی حالت میں رہنے کے لئے بھی انہیں موقع نہیں ہے ۔ جیل انتہائیز ( Jail Authorities ) انہیں انسان ہی نہیں سمجھتے ۔ وہاں تو معاملہ " معروضہ " کرنے سے شروع ہوتا ہے ۔ جیل میں کوئی شخص یہ نہیں کہہ سکتا کہ " میری یہ خواہش ہے ۔ میرا یہ مطالبہ ہے ۔ " آگر وہ ایسا کہے تو اس کو ڈرایا جاتا ہے اور مار پیٹ کی جاتی ہے ۔ میں اس کی ایک دو مثالیں دیتا ہوں ۔ جب مہتمم صاحب یا جیلر صاحب آتے ہیں تو انہیں کمرستہ اور سر جھکا کر کھڑے ہونا پڑتا ہے ۔ کیا آج ڈیموکریٹک ایج ( Democratic age ) میں یہ چیزیں جائز سمجھی جاسکتی ہیں ؟ ایسے رولس وہاں بنے ہوئے ہیں تو وہ اس قانون کے خلاف پڑتے ہیں یا موافق پڑتے ہیں میں سمجھنے سے قاصر ہوں ۔ وہاں ایک انسان کو انسان کی حیثیت سے ٹریٹ ( Treat ) نہیں

کیا جاتا ۔ کوئی قیدی یا کوئی اندر ٹرائل ( Under-trial ) جو جیل میں رہتا ہے سوائے اپنے لشے کچھ بولنے کے ، بازو میں چاہے دوسرا قیدی کتنی ہی تکلیف میں کیوں نہ ہو اس کے متعلق کچھ نہیں بول سکتا ۔ میرا یا یہاں کے اکثر لوگوں کا یہ تجربہ ہے ۔ وہاں کے حکام یہ کہتے ہیں کہ تم دوسروں کے متعلق کچھ نہیں بول سکتے اگر بولینگے تو ہم تم کو سزا دیں گے ۔ کیا آج دنیا میں یہ ہوسکتا ہے کہ ایک بھائی کئی مشکلات میں مبتلا ہو اور اوس کے متعلق ایک لفظ بھی نہیں کہہ سکتے ۔ کیا آج کے حالات میں یہ جائز ہوسکتا ہے ؟ ٹریزی بچس بڑے فخر سے کہہ رہے تھے کہ ایک دفعہ بھی اس دل میں ایسا بتائیے ۔ انہوں نے یہ چارج لگایا کہ اوس طرف کے

لوگ قانون پڑھکر نہیں آئے - گویا اوس طرف کے لوگ ہی پڑھکر آئے ہیں - میں سمجھتا ہوں کہ خود وہ اس قانون کی تمام دفعات کو نہیں پڑھے ہیں - اگر وہ پڑھنے تو یہ گلیرنگ (Glaring Civil prisoner) چیز کبھی انکی نظر سے نہ چوکتی - اس قانون میں خود درج ہے کہ ایک سیول پرزنر (Under-trial prisoner) یا ایک اندر ٹرائیل پرزنر (Remove) اپنے پاس کی چیز دوسرے سیول پرزنر یا اندر ٹرائیل پرزنر کو دے تو قواعد جیل کی خلاف ورزی ہو گی - جب میں جیل میں تھا تو دوسرے شخص کو ایک سگربٹ تک نہیں دے سکتا تھا - اگر کسی کے پاس زیادہ کپڑے ہیں اور دوسرے کے پاس کپڑے نہیں ہیں تو کپڑے تک نہیں دے سکتے - اسی طرح اگر کسی کے پاس مکان سے کھانا آتا ہے نو بارو کے قیدی کو کھانا دینے سے منع کرتے ہیں - دفعہ ۳۶ میں یہ صاف رکھا گیا ہے کہ کوئی قیدی کسی دوسرے قیدی کو کوئی چیز نہیں دے سکتا - کیا اس زمانے میں آپ ان چیزوں کو بحال رکھنا چاہتے ہیں - میں ٹریڈر بنچس سے پوچھنا چاہتا ہوں کہ کیا کسی شخص نے جیل میں جانے کے بعد ہم ہمیشہ کے لئے اوس کے انسانی ہمدردی کے جذبہ کو کچل دینا چاہتے ہیں - آپ کے قانون میں کیا ہے آنکھ کھول کر دیکھ لیجئے - آپ ہر ایک دفعہ کو بغور ملاحظہ فرمائیں تو اس میں انسانیت کو ملیا میٹ کرنے کے لئے بہت سی چیزوں میں لینگی اور اگر ہم انکو رمو (Remove) نہیں کریں گے تو بہت ہی بے نتائج برآمد ہوں گے - آج جیل سے چھوٹے ہیں تو پھر دوسرے تیسرا دن جرم کر کے وہاں واپس چلے جاتے ہیں ایسا کیوں ہوتا ہے آپ اس پر غور نہیں کر رہے ہیں - انہیں بہتر تربیت کیوں نہیں دی جاتی - اُن کے دماغ میں یہ کیوں بیٹھادیا جاتا ہے کہ جیل میں رہتے ہیں تو دو روٹی اور دال برابر ملتی ہے - اس نقطہ نظر کو بدلنے کے لئے کوئی چیز قانون میں نہیں ہے -

دوسری چیز یہ ہے کہ قیدیوں کے حقوق کے متعلق ہمیں کئی چیزوں بر غور کرنا چاہئے مثلا یہ کہ قیدیوں سے کتنے گھنٹے کام لینا چاہئے - اگر کام لینا ہی ہے تو کس قسم کے قیدیوں سے کیا کام لیا جانا چاہئے - اور اگر کام لیتے ہیں تو کیا معاوضہ انکو دیا جانا چاہئے ہم ان لوگوں کی طرف سے معاوضہ دینے کے لئے مانگ نہیں کر رہے ہیں جو باہر کام کر رہے ہیں - لیکن جب وہ جیل میں کام کرتے ہیں تو انہیں کچھ نہ کچھ معاوضہ ملنا چاہئے تاکہ اس سے انہیں کام کرنے کی ترغیب ہو اور جیسا کہ ہوم منسٹر صاحب کہہ رہے ہیں انہیں جیل میں سہولتیں دیگئی ہیں تو انکے پاس خرچ کرنے کے لئے پیسے بھی ہونا چاہئے - نیز یہ کہ جب وہ جیل سے چھوٹے ہیں تو وہ اپنے جمع شدہ پیسے سے کام لے سکتے ہیں اسلئے باہر جو معاوضہ ملنا ہے کم از کم اسکا نصف اونکو وہاں ملنا چاہئے - مجھے معلوم ہے کہ آپ جیل میں ۹ - ۱۰ گھنٹے کام لیکر ماہانہ ایک روپیہ سے زیادہ کسی قیدی کو نہیں دیتے - کیا آپ ان چیزوں کو آج بھی رائج رکھنا چاہتے ہیں کیا یہی انسانیت ہے - اگر معقول معاوضہ دینے کے لئے کوئی گنجائش رکھتے تو ہم اس قانون کو بہتر سمجھتے - چاہے آج تک کی تربیات

اس قاپوں میں لائی گئی ہوں لیکن .. اع میں ہندوستانیوں کو کچلنے کے لئے جو اصول اختیار کئے گئے تھے وہی آج بھی اس میں مضمرا ہیں۔ کوئی نیا اصول اس میں نظر نہیں آتا۔

اسکے بعد میں قیدیوں کی تعلیم کے منعکن کہونگا۔ اگر آپ اسکو اسٹائیوٹری (Statutory) قرار دین تو سب ہی لوگ اسکو مناسب سمجھیں گے۔ بعض قیدیوں کو دو چار مہینے کی اور بعض کو ۱۰۔۲۰ سال کی اور بعض کو جس دوام کی سزا ہوتی ہے۔

آپ اپنے پر کیا یابندی عائد کر رہے ہیں۔ کیا لزوم اسکی وجہ سے عائد ہو رہا ہے اسکی کوئی صراحة نہیں ہے۔ اوبکو جو کھڑتے دئے جاتے ہیں وہ نہیں سفیشناٹ (Sufficient) نہیں ہوتے اور آپ کھڑتے ہیں کہ سفیشناٹ تمہر میں دینگے۔ اس طرح کے مبہم الفاظ رکھئے گئے ہیں اس سے کیا فائدہ ہے۔ وہاں ایک پاجامہ اور ایک کرتا دیا جاتا ہے۔ ہم ایک زمانے سے مانگ کر رہے ہیں کہ دھوکی دینی چاہئے لیکن آج تک ہماری یہ مانگ پوری نہیں ہوئی۔ نیشنل ڈریس (National dress) اسکے کیا معنے ہیں۔ کیا اسی پاجامے اور کرتے کو نیشنل ڈریس کہا جاسکتا ہے جہاں انکے حقوق کا سوال آتا ہے تو آپ کوئی صراحة نہیں کرنے بلکہ مبہم الفاظ استعمال کرتے ہیں۔ اسلئے میں ممبر انچارج آف دی بل سے خواہش کروں گا کہ وہ ان چیزوں پر غور کریں۔ جیل کے عہدہداروں کے کیا فرائض ہیں اور کن لوگوں کو جیل کا عہدہدار سمجھا جائیگا۔ یہ چیزیں اس میں نمایاں ہیں۔ جو سزائیں ناقابل برداشت سمجھی جاتی تھیں انکے خلاف بڑشیں گورنمنٹ کے زمانے سے لوگ بھوک ہڑتال کر کے اور مختلف طریقوں سے لڑتے ہیں۔ ہمارے بڑے بڑے لیڈروں نے کتابیں لکھی ہیں۔ پہنچت جی نے بھی کتابیں لکھی ہیں کہ جیلوں میں کس قسم کی اصلاح کرنی چاہئے ہم جو نعرہ مار رہے ہیں یہ کوئی نیا نعرہ نہیں ہے۔ جس وقت آپ جیلوں میں بند تھے تو آپ ہی نے مطالبہ کیا تھا کہ سیاسی قیدیوں کو اسے کلاس دیا جائے بے کلاس دیا جائے وغیرہ۔ لیکن افسوس کہ اس قانون میں یہ نہیں بتایا گیا ہے۔ سیاسی قیدیوں کو کونسے کلاس دی جائیں گے اس بل میں کہیں ذکر نہیں ہے۔ انڈیا میں بھی ایسے رویات ہیں۔ مگر اس میں اسکا ذکر نہیں ہے۔ کربنل برزنس اور ڈیٹینیوز (Detenues) کے متعلق دیکھئے کہ دوسری جگہ کیا سہولتیں ہیں۔ مدرس میں دیکھئے کہ وہاں کیا سہولتیں دیکھی ہیں وہاں ڈیٹینیوز کو روزانہ دو روپیہ با رہ آنہ بہتہ دیا جاتا ہے۔ کپڑوں کیلئے (هے) روپیہ الونس دیا جاتا ہے۔ انہیں فی ہفتہ ایک سوپ (Soap) دیا جاتا ہے۔ اور ٹوٹھ پسٹ (Tooth paste) دیا جاتا ہے۔ ہر تین مہینے کو ایک چیل دیجاتی ہے۔ یہ ساری چیزیں ہم نے لٹکر حاصل نہیں کی ہیں۔ آپ ہی لوگوں نے حاصل کی ہیں جب آپ جیل میں تو ہے۔ لیکن افسوس کہ آج یہ ساری چیزیں اس قانون میں نہیں ہیں۔ آج اس میں جو سزائیں تجویز کی گئی ہیں وہ نظام کے زمانے میں بھی عملاً نہیں تھیں۔ گو جیل مینوں میں اونکا اندر اراج تھا

لیکن عمل میں نہیں لائے جاتے تھے۔ آپ نے اس میں ثالث پتھری کا لباس تجویز کیا ہے میں بوجھتا شوں کہ آج کے زمانے میں کوئی اسکا تصور بھی کرسکتا ہے۔ میں نہ سمجھ سکا کہ آپ کا دماغ کس طرف کام کر رہا ہے۔ آپ اون باتوں کی تقلید کرنا چاہتے ہیں جو سامراجی زمانے کی باتیں تھیں۔ جسکے خلاف کئی سال تک ہم اڑ چکے ہیں۔ یہ کی سزا کی دونوں جانب سے مندست کیگئی ہے ممکن ہے کہ آریبل منسٹر اس پر مکر غور کریں۔ پینل ڈائیٹ (Penal diet) کے متعلق کلامز سب کلامز میں یہ بتایا گیا ہے :-

"penal diet, that is, restriction of diet in such manner and subject to such conditions regarding labour as may be prescribed by the Government."

یہ پینل ڈائیٹ کا بھی عجیب قصہ ہے۔ جب کوئی جیل کے قواعد کی خلاف ورزی کرے تو جیل کے عہدہدار ایک ہفتہ دو ہفتے گنجی (جسکو جیل میں کانجی کہا جاتا ہے) پلاتے ہیں۔ جسکو تلنگی میں گنجی کہا جاتا ہے۔ اسکو بانی نہ ک اور آٹا ملا کر بناتے ہیں۔ آپ جیل کی یہی اصلاح کر رہے ہیں۔ اسی طرح انسان کو انسان بنانے کی فکر ہے۔ امپوزیشن آف فٹرنس (Imposition of fetters) (Handcuff's) کے انکو پہنکر تھوڑی دور چلتا بھی شکل ہو جاتا ہے۔ اس طرح کی کڑی سزا ائین آپ نے اس قانون میں رکھی ہیں۔

شروع کا وہ مارے (نیلگانجا) :- آڈا دندھا کو ڈالتے ہیں؟

شری ایل۔ این۔ ریڈی :- جب جیل کے عہدہ دار یہ سمجھتے ہیں کہ قیدی چیل کے قواعد کی خلاف ورزی کر رہا ہے تو یہ چیزیں ڈالتے ہیں۔ بہر حال اس بل کو دیکھنے کے بعد یہ معلوم ہو گیا کہ آج جیلوں میں جو عمل اختیار کیا جا رہا ہے اوس کو لیگلائز (Legalise) کرنے کے لئے یہ قانون لایا جا رہا ہے۔ کوئی سہولت اس میں نہیں ہے اگر ہے تو بتائیں اس بل کو سامنے رکھ کر بتائیں کہ فلاں چیز اس میں نہیں ہے جو پہلے قانون میں نہیں تھی۔

سالیٹری کنفائشنٹ (Solitary confinement) :- یہ قیدی کے دماغ پر نہایت برا اثر کرنے والی چیز ہے۔ کہا جاتا ہے کہ لوگ جانتے آتے نظر آتے ہیں لیکن ایسا نہیں ہے۔ دوسرا سنگل گنج ہوتا ہے اور تیسرا ڈبل گنج ڈبل گنج کے دو دروازے ہوتے ہیں۔ ایک سرکل رہتا ہے اور اس پر بھی پٹی لکھی رہتی ہے۔ اس میں رہنے والے قیدیوں کو گھومنے کا موقع بھی نہیں دیا جاتا۔ بعض وقت تھوڑا سا موقع دیتے ہیں لیکن ہم کو اوس زمانے میں ایسا موقع نہیں دیا جاتا۔ چوتھا برج گنج ہوتا ہے۔ اس میں سے کوئی آدمی نظر نہیں آسکتا صرف دیوار نظر آتی ہے۔ اس بل میں آپ تین مہینے یا ایک مہینے کی سزا کا اختیار مہتمم کو دے رہے ہیں۔ قانون تعزیرات

کے تحت جسٹریٹ کو بھی ایک مہینے سے زیادہ مدت تک ایسی سزا دینے کا اختیار نہیں ہے۔ جسٹریٹ کو اختیار نہیں ہے کہ وہ ایک مہینے سے زیادہ سپریٹ کنفائنسٹ ( Separate confinement ) سزا دے۔ اس میں بھی وقفہ دیا جاتا

ہے ایک ہفتہ سے زیادہ ایک وقت میں نہیں وکھا جاسکتا۔ جب بینل کوڈ میں جسٹریٹ کے اختیار کو اس طرح محدود کیا گیا ہے تو آپ یہاں تین مہینے سے اور ایک مہینے کے جو اختیارات مہتمم کو دے رہے ہیں وہ غلط ہیں۔ آپ کہتے ہیں کہ دوسروں سے ملنے نہیں دیا جاتا لیکن دوسرا میں لوگ نظر آتے رہتے ہیں۔ اس لئے کہ یہ سپریٹ کنفائنسٹ ( Separate confinements ) نہیں ہوتے۔ قانون تعزیرات میں

اس کے معنی صاف ہیں آپ اس کو کیسے بدل سکتے ہیں۔ وہاں قیدیوں کو جیل مینوں بھی نہیں دیا جاتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ صرف عہدہ داروں کے استعمال کے لئے ہے۔

ڈپٹی مینیسٹر فاؤر ہوم ( شری. شری نی�ا سر را و اے خلیکار ) :- یہاں پر رخوا ہو گا ہے، آپ دوڑ سکتے ہیں ।

شری ایل۔ این۔ ریڈی :- قیدیوں کو کیا تکلیف ہے میں بتا رہا ہوں۔ ممبروں کے لئے نہیں کہہ رہا ہوں۔ قیدیوں میں سے کتنے لوگوں کو جیل مینوں دیا جاتا ہے؟ کس عہدہ دار نے دیا ہے کیا یہ بتایا جاسکتا ہے۔ جیل کے حکام تو فرعون بنے رہتے ہیں۔ وہ مطلق العنان ہوتے ہیں۔ ان پر کسی کا کنٹرول نہیں ہوتا۔ وہ سمجھتے ہیں کہ قیدیوں کی جان و مال کے ہم مالک ہیں۔ وہاں بال رکھنے کی اجازت نہیں ہوتی۔ ہیر کشگ ( Hair cutting ) کی اجازت نہیں دی جاتی بلکہ سر منڈھوانا پڑتا ہے۔ بال رکھنے تو سزا دیجاتی ہے اور جیرا سر منڈھوانا یا جاتا ہے۔ جیل کے عہدہ داروں نے کئی لوگوں کے ساتھ ایسا سلوک کیا ہے۔

ایک شخص میرے بازو کے سل ( Cell ) میں تھا اور میرے جیسے بال رکھتا تھا۔ اسکو جیرا لیجا کر سرمنڈھوا کر بھیجا گیا۔ اس طرح کی حرکات من مانے کرنے ہیں۔ کسی کو مارنا پیشنا تو معمولی چیز ہے۔ اس طریقہ کی ظلم و زیادتی وہاں کرتے ہیں ایسے لوگوں کو آپ سزاوں کا اختیار دینے کے لئے کہہ رہے ہیں۔ ہم اب برشن گورنمنٹ کے زمانہ میں نہیں ہیں جو اس قسم کی سزاویں دی جائیں۔ ہم اپنے راج میں ہیں لیکن اس کے باوجود یہ اس بل کی حالت ہے۔ ان کو انسان بنانے کے لئے آپ کیا کر رہے ہیں۔ لکڑیز ( Luxuries ) تو کیا کم از کم انسان بنانے کے لئے موقع نہیں دیا جا رہا ہے تاکہ باہر آنے پر وہ دوسرے انسانوں میں مل جلکر وہ سکیں یہ نظریہ اس میں کہیں بھی نظر نہیں آتا۔ اس لئے میں ممبر انچارج آف دی بل سے خواہش کرتا ہوں کہ وہ اس پر سنجیدگی سے غور کریں۔ اس میں کئی چیزوں کا اضافہ کرنا ہے۔ ویس وغیرہ وغیرہ۔ اس لئے اس بل کو ہرلی بولی ( Hurly-burly ) پا س کرنے کی بجائے سلکٹ کمیٹی کو ریفر کیا جائے تاکہ ایک انسان کی حیثیت سے ہر فرض کیسے وکھنا چاہئیے اس پر غور کرنے کے ایک مزوزوں بل لا یا جاسکے۔

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—अध्यक्ष महोदय, अभी जो यहां बहुत जोर शोर से तकरीर की गयी वह मैंने सुनी है। अब तकरीरों के बारें में मुझे यही कहना है कि कुछ थोड़े हृदत्क, बहुत ही थोड़े हृदत्क, कुछ सुझाव यहां पर पेश किये गये जो वाक़ी अच्छे थे। लेकिन आम तौर पर कोई खास सुझाव नहीं दिये गये। वही पुराना राग आलापा गया। अब तरह से वही पुरानी बातें बार बार दोहराना और अुसके बारें में कहते रहना अपोजिशन मेंबर्स को शोभा नहीं देता है। ऑनरेबल मेंबर्स ने जो बातें यहां पर जेल के बारें में कहीं, मालूम होता है कि वह अनुका पुराना तजरुबा है हालिया तजरुबा नहीं है। कुछ हालिया तजरुबा भी बयान किया जाता तो ठीक होता। मैं समझता भी था कि कुछ हालिया तजरुबा बयान किया जायेगा और आजकल जेल में जो अच्छी बातें की जारही हैं अनुकी तरफ भी अिशारा किया जायेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हालिया तजरुबा अनुहैं मिलाई नहीं तो वे कहांसे बयान करेंगे? आज कल जेलों में क्या किया जा रहा है वह ऑनरेबल मेंबर्स को मालूम हो अिस ख्याल से मैंने अेकबार आर. टी. डी. बस का अितेजाम किया था, और ऑनरेबल मेंबर्स को दावत दी थी कि वे वहां पर आकर देखें की जेलों में आजकल क्या किया जा रहा है। अुस समय ५०, ६० अम. अेल. अेज. वहां गये। लेकिन अनुमें कौन कौन ये यह मुझे याद नहीं है।

شروع میں بار کے میں جانے سے کیوں روکا گیا؟ منسٹر صاحب  
کی تشریح کریں -

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर :—जरा धीरज से सुनिये। मैं सब बातें आपके सामने बयान करनेवाला हूँ। वहां पर मैंने सबको दावत दी थी, और आर. टी. डी. बस का भी अितेजाम किया गया था। लेकिन वहां पर देखने के लिये बहुत ही कम समय मिला औसा मेरा ख्याल है। अितने कम समय में वह बातें नहीं देखी जा सकतीं जो आज कल जेलों में की जा रही हैं। यह अतेराज किया गया कि हमें कैदियों से मिलन के लिये मौका नहीं दिया गया। औसा हो सकता है। क्योंकि जेल के भी कवायद होते हैं। और हर चीज के लिये कोओ लिमीटेशन्स भी हुवा करते हैं। आपको जो वहां पर भेजा गया था वह किसी से बोलने के लिये, या और किसी काम के लिये नहीं बल्कि जेल के हालात क्या हैं यह मालूम करने के लिये भेजा गया था। अगर अिस तरह से कैदी के साथ बोलना जेल के कवायद के तहत नहीं आता हो तो यकीनन बोलने की मनावी की गयी होगी। और अुसी बजह से रोका गया होगा।

जेलों में देखने के लिये जो वक्त दिया गया था वह काफी नहीं हुवा औसा भी कहा गया। यह सही है। ज्यादा तक्सील से देखने के लिये ज्यादा समय की जरूरत है यह मैं भी मानता हूँ।

شروع میں رامेंद्ररा रिठی :—بات کرنے کी اجازت نہیں دی گئی۔ وہاں جانے والوں میں میں بھی تھا کوئی قیدی مجھ سے بول, رہا تھا تو ناظم صاحب نے وہاں آکر روک دیا۔ اور معلوم ہوا کہ بعائد میں اسے سزا بھی دی گئی۔

مسٹر ڈپ्टी اسپیکر :—جب तक एक तقرीर करने वाले स्पीकर ने जाइन दूसरे स्पीकर तक त्रैयों ने कहा है।

شروع میں رامेंद्ररा रिठی :—कیا آنریل مینسٹر کل یا پ्रैस जानेके موقع दिनके?

شی. شرینیواس راوا اے خلیکار:—میں سامنہ تھا हूँ अेक یا دो घंटے सے भी यह काम नहीं हो سकेगा। अबुस کے سہی تफसیलात मालूम کرنے हैं तो कमसे कम दो یا तीन महिने वहां पर रहने की जरूरत है। तभी कुछ सही तौरपर मालूम हो सकता है।

شی. راجनدرا ریدی:—آئے والا ہفتہ اور اتوار یعنی دو دن دیجئے۔

شی. شرینیواس راوا اے خلیکار:—अितना वक्त काफी नहीं होगा, कुछ महिनोंकी जरूरत है। आप यदि सही नुक्तेनजरसे किसी बात को देखेंगे तो आप थोड़े ही समय में काफी बातें देख सकेंगे, लेकिन यदि आपका दृष्टिकोण ठीक नहीं है तो आपको १ साल भी पूरा नहीं होगा। आप यदि अेक दूषित दृष्टि से ही देखना चाहिए तो आपकी दृष्टि कभी भी साफ नहीं होगी। आपके देखने के और बातें समझने के ढंग में तबदीली होनी चाहिये। जबतक आप किसी बात की तरफ सही ढंग से देखना नहीं सीखते हैं तबतक यिसकी कोओ अमीद नहीं है कि आप यिसे ठीक समझ भी सकेंगे या नहीं। अिपार्शल तरीके से बातों की तरफ देखने की दृष्टि पहले आनी चाहिये तभी आप को सही बातें मालूम हो सकती हैं। आप यदि यिस बात की तरफ अिपार्शल ढंग से देखेंगे तो आपको मालूम होगा कि आज जेलों में कितनी तरह की सहुलियतें दी जाती हैं। आप यदि वहां जायेंगे तो वहां रहना चाहेंगे अितनी अच्छी अच्छी सहुलियतें अन्हें आज वहां फराहम की जा रही हैं।

شی. ایم۔ جیسا (سربور):—تو پھر نکست سشن (Next session) ( ) وہیں بلائیں۔

شی. اے۔ گروا ریدی (سدی پیٹھ):—وہاں ملاقات کے لئے جب لوگ آتے ہیں تو موجودہ حالات میں کتنے گھنٹے اونھیں باہر رہنا پڑتا ہے؟

شی. شرینیواس راوا اے خلیکار:—मैं सब बातें तफसील से आपके सामने रखने वाला हूँ, आप जरा सबूर कीजिये। फस्ट रीडिंग के शूल में ही मैंने कहा था कि यिस बिल का खास मकसद यही है कि सब स्टेटों के जेल संबंधी कानून में अंकसानियत लाओ जाय। मैं मानता हूँ कि अबुसमें बहुत सारी चीजें नहीं होंगी। दफा ६० के तहत गवर्नर्मेंट को यह ऐखत्यार दिया गया है कि क्या सहुलियतें जेलों में होनी चाहिये यिसके बारें में समय समय पर गवर्नर्मेंट नियम बना सकती है। और वह सब नियम जेल मैन्युअल में और नोटिफिकेशन के द्वारा लोगों को मालूम कराये जाते हैं। मैं यह नहीं समझता कि यिस तरह का अतेराज क्यों किया जा रहा है कि अिन सब बातों को बिल में ही लाना चाहिये। हम कोओ अलग बात नहीं कररहे हैं। दूसरे स्टेटों में भी यिसी तरह का कानून है और वहां भी गवर्नर्मेंट को ही यह ऐखत्यार दिया गया है कि वह यिसके बारें में नियम बनाये।

شی. اے۔ گروا ریدی:—ایسی کرمبل مثالی (Criminal mentality) کو دور کرنے کے لئے آپ جیل میں ان کے ساتھ کیا کر رہے ہیں؟

शی. شرینیواس راوا اے خلیکار:—जेल मैन्युअल कोओ चीज ही नहीं हैं, असੀ बात नहीं है। जेल मैन्युअल यह अेक खासी बड़ी किताब है और सब बातों के बारें में अबुसमें कवायद दिये हुए हैं। और आज वह पूरी किताब हाबुस के देबल पर रख दी गयी है अबुस आप देख सकते हैं। जो चीजें

जेल मैन्युअल में रखी गयी हैं वह सब चीजें जिस बिल में आनी चाहिये जिस तरह की जो स्वाधिश की जा रही है वह सही नहीं है। जिस बिल का मनशा यह नहीं है कि असे अंक जेल मैन्युअल की शक्ति दी जाय। मैं कहता हूँ कि कुछ बातें जरूर जिस कानून में आनी चाहिये और वह बराबर आयेंगी लेकिन सभी बातें जिस कानून में लाने का हमारा मनशा नहीं यह मैने पहले ही कहा है। हमारा मक्सद सिर्फ अितनाही है कि जिसके बारे में सब स्टेटों में अक्सानियत हो जिसलिये यह बिल लाया गया है। लेकिन यह कहना कि यह कानून तो १९०० के कानूनसे भी बत्तर है, यह अंक निजामी कानून है, और अंग्रेजों के जमाने का कानून है, यह पुराना है, और बिलकुल बेकार है, वगैरा यह सही नुकतेनजर नहीं है।

यह भी कहा गया कि जो फॉडामेंटल राजिट्स कॉन्स्ट्र्यूशन ने दिये वह सब जेलों में भी दिये जाने चाहिये, अितनाही नहीं बल्कि जिससे भी बढ़कर ज्यादा अधिकार वहाँ के लोगों को दिये जाने चाहिये। लेकिन जिन्होंने यह सुझाव रखा अनुहोने यह नहीं सोचा कि जेल में सिर्फ पोलिटिकल कैदी ही नहीं होते हैं। वहाँ पर कभी तरह के लोग आया करते हैं। जेलोंमें कुछ लोग तो अंसे आते हैं कि जिनकी क्रिमिनल मेंटलिटी होती है। अनुकी मेंटलिटी ही क्राइम करने कि होती है। कुछ तो अंसे बेशरम रहते हैं कि छूटने के बाद जेल में कहकर जाते हैं कि हमारा लोटा थाली अच्छी तरह रखिये, आज के आठवें दसवें दिन हम फिर यहीं आनेवाले हैं, जेलखाना तो हमारा घर ही है। आडे डंडेके बारें में भी बहुतकुछ कहा गया। लेकिन कुछ कैदी अंसे होते हैं कि आडे डंडेके बादभी फरार हो जाते हैं। क्या आपका यह कहना है कि नरसिंहा डाकू, या आदीलाबाद का शास्त्री या हुसेन जिस तरह के जो मशहूर डाकू हैं अनुहोने भी फॉडामेंटल राजिट के नाम पर सब तरह की सहुलियतें देनी चाहिये? और अनुको भी सबके साथ लाना चाहिये? क्या यह आप जैसे ऑनरेबल मैर्स्ट की जहनियत हो सकती है?

شروعیہ:—**گرو ریڈی:**—کیا آنریل مسٹر جانٹھیں کہ آپ جو تھیوری ( Theory ) فرمائے ہیں اس کو ریجکٹ ( Reject ) کیا جا چکا ہے؟ لیست تھیری میں اسکو غلط نام کیا گیا ہے۔

**श्री. श्रीनिवासराव अंबेलीकर:**—जरा सबसे सुनिये तो सही। मैं सब बातें बताने वाला हूँ। यह बात सही है कि कुछ लोग माशी पस्ती के कारण भी जेलों में आ जाते हैं। लेकिन जिस तरह से जेल में आनेवालों की तादाद कम होती है। हैंबियुअल क्राइम करनेवाले जो लोग होते हैं अनुका पेशा ही जरायस करने का होता है। और वही लोग हर बक्त जेलों में आया करते हैं। अंसे जो लोग हैं अनुहोने कड़ी से कड़ी सजा देने में कोई पशोपेश नहीं होना चाहिये।

कुछ डाकू तो बड़े होशियार होते हैं। अनुका यह रेग्युलर पेशा होता है। जब मैं प्रैक्टिस करता था तब मैंने सुना था कि अंक डाकू ऐसा है कि जो पीठ से दीवाल चढ़ सकता है और अुसको सीढ़ी आदि की कुछ जरूरत नहीं होती। अंक दफा अंक कलेक्टर दौरे पर गये थे तब अनुहोने अंसा भीका आया था कि अंक डाकू का कैस अनुके सामने आया। अुसे रिहा करने के बाद पूछा गया कि तुम चोरी कैसे करते हो, तो अुसने कहा कि अगर आप नाराज न हो तो आज ही आपके घर में चोरी करके बताता हूँ। और बाद में जितना पुलिस का पहरा रहते हुवे भी अुसने अनुकी कलम-

चुराकर बताओ। अिस परसे यही बात दिखती है कि कुछ लोगों की जहनियत ही कानिम करने का होती है और अनुका तो यह पेशा ही रहता है। अिनकी सुधारणा करनी है तो कुछ सस्ती करनी ही पड़ेगी। ऐसे लोगों के लिये कुछ कायदे करना जरूरी होता है। मेरा मतलब यह नहीं है कि ऐसे कायदे बनाने के बाद कुछ अच्छे लोगों को भी अुसका कप्ट नहीं होता है। लेकिन अुसके लिये क्या किया जाय, खराब के साथ अच्छे लोगों पर भी वह कवानीन कभी कभी अिस्तेमाल होते हैं। जेलों में जो हार्ड क्रिमिनल्स होते हैं अनुके लिये सस्त कवायद रखनेकी जरूरत होती है। यदि एक आदमी दूसरे १०० आदमियों को तकलीफ देता है तो अुसे सजा मिलनी ही चाहिये। और ऐसे हालात मे अुसे बाकी लोगों से अलग रखना पड़ता है। दूसरे लोगों को सेफगार्ड करन के लिये अिस तरह के कवायद होना लाजमी है। दूसरे स्टेटों मे भी अिस तरह के कवायद आज मौजूद हैं। हमारे ही यहां अिस तरह के कवायद हैं और वही बात नहीं है। अब मैं आपके सामने यह रखना चाहता हूँ कि अन लोगों के कायदे के लिये वहां पर क्या किया जा रहा है।

जेल में आज जो रिफार्म्स किये जा रहे हैं वह मैं आपके सामने संक्षिप्त मैं रखना चाहता हूँ।

जिस तरह स्कूल, कॉलेजेस और बोर्डिंगजू में रिक्रीओशन के लिये अितेजाम होता है अुसी तरह का अितजाम आज जेलों में भी किया गया है। अनुके लिये आबुट डोअर और अिन डोअर गेम्स (out door and indoor games) का अितेजाम किया गया है। आबुट डोअर गेम्स में ब्हालिबॉल, बॉर्टमिटन और अिनडोअर गेम्स में टेबल टेनिस का अितेजाम किया गया है। अनुके लिये जेलों में रेडिओ सेट्स भी लगाये गये हैं, और अिस तरह से बाहर के आम लोग रेडिओ का अिस्तेमाल कर सकते हैं अुसी तरह से वहां कैदीभों रेडिओ सुन सकते हैं और जानकारी हासिल कर सकते हैं कि दुनिया में क्या हो रहा है।

स्काइटिंग का भी अितेजाम किया गया है। वहां बराबर रोज पी. टी. ड्रील वर्गेरा भी होती है। अनुका एक अच्छा खासा बैन्ड भी है, जैसा मिलिट्री या पुलिस में होता है। अनुको अच्छा शहरी बनाने के लिये वहां पर तालिम का भी अितेजाम किया गया है। वहां पर रोज मुर्दार्स आते हैं और अॅडलट एज्युकेशन ( Adult Education ) का भी अितेजाम किया गया है। हैदराबाद सेंट्रल जेल में ५०० से ज्यादा लोगों ने हिंदी की प्रथमा और मध्यमा की परीक्षाओं दी हैं। अनुकी तरफ से एक दीपक नामका मॅगजिन भी निकाला जाता है। अनुके लिये अलग और अच्छी लायब्ररी भी है। सबको पढने के लिये अखबार भी दिये जाते हैं। कॉनविक्ट्स ( Convicts ) पोलिटिकल नॉन कॉनविक्ट्स ( Political non-convicts ) और नॉन पोलिटिकल प्रिजनर्स ( non-political Prisoners ) अिन सभीको अखबार और दूसरी सहुलियों दी जाती हैं। अिसमें कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। विदाबुट डिसक्रिमिनेशन ( without discrimination ) सबको यह चीजें दी जाती हैं। एज्युकेशन डिपार्टमेंट की तरफ से भी वहां पर पढाओ का प्रबंध किया गया है, और वहां पर रोजाना मुदर्स जाते हैं और लोगों को पढ़ाते हैं। वहांपर नैशनल सौंग भी गाये जाते हैं और अिस तरह के सौंग सिखाये जाते हैं।

यह भी कहा गया कि अनुसे ९ धन्नटे काम लिया जाता है। यह तो सही है कि काम तो लिया

जाता है। लेकिन साथ ही साथ रिक्रीयेशन भी काफी मिलता है जिसलिये वे अुस काम को महसूस नहीं करते। क्लासिफिकेशन के बारें में कहा गया। डिटिन्युज, अंडर ट्रायल्स और कनविक्ट्स यिन सबके अ. बी. सी. इस तरहसे क्लासेस रहते हैं। यह क्लासेस अदालत की तरफसे दिये जाते हैं या कभी जेल में आने के बाद यह क्लासेस दिये जाते हैं।

شري۔ اے۔ گرواریڈی:—نظر بند جو کئے جاتے ہیں ان کے متعلق کیا ہے؟

شri. شرینिवासराव अखेलीकर:—डिटिन्युज के बारेंमें मैं कहूँगा कि अनुको भी सभी सहुलियतें दीजाती हैं। अनुको अंटरव्यूज करने का मौका दिया जाता है। अनुके मुलाकात के लिये बाहरसे लोग आते हैं तो अनुको बैठने के लिये अंतेजाम होता है। अनुको मिलने के लिये अलग और अच्छी जगह बनाओ गयी है। अंडर ट्रायल्स और कॉनविक्ट के बारें में जिस तरह से कुछ कवायद रहते हैं अुसी तरह से डिटिन्युज के बारें में भी कुछ कवायद मुक्र होते हैं। डिटिन्युज को भी अ. बी. और सी. क्लासेस दिये जाते हैं।

شري۔ اے۔ راجندراریڈی:—اے بل میں کیوں نہیں لایا گیا؟

شri. شرینिवासराव अखेलीकर:—यह अंतराज किया गया कि बिल में यह सब बारें क्यों नहीं लाओ गयी, और गवर्नर्मेंट को वयों अखेत्यार दिया जा रहा है। सभी जगह जिस तरह का जो सेक्षण है अुस के तहत गवर्नर्मेंट को रुल बनाने का अखेत्यार दिया गया है। हम कोओ अलग अखेत्यार नहीं दे रहे हैं। और यह बिल जैसा कि मैंने पहले ही कहा कि अंकसानियत लाने के लिये ही लाया जा रहा है, तो जो प्रॉविजन्स ( Provisions ) दूसरे स्टेटों में हैं वैसे ही यहां लाने की जरूरत है। जिसमें गवर्नर्मेंट को जो पॉवर्स डेलिगेट किये गये हैं अुसके बारें में आपका अंतराज है लेकिन यह सही नहीं है।

شري۔ اے۔ گرواریڈی:—یہ مطلب نہیں ہے۔ گورنمنٹ نے رول بنانے का جو اختیار لے لیا ہے اس پر یہاں ڈسکشن ہونا چاہئے۔ یہاں اسکا خاکہ آنا چاہئے۔

شri. شرینिवासराव अखेलीकर:—کیسने मना किया है? आप यदि जिसके लिये अमेंडमेंट्स लाना चाहते हैं तो बराबर ला सकते हैं। सब जगह के बिल में जिस तरह का सेक्षण मौजूद है और गवर्नर्मेंट को पॉवर्स डेलिगेट किये गये हैं जिसलिये वैसा ही प्रोविजन हमने भी रखा है। दूसरी जगह से अलग हम नहीं ला सकते हैं क्योंकि यह बिल ही अंकसानियत लाने के लिये लाया गया है।.....

شري۔ اے۔ راجندراریڈی:—پھر ملاقات کرنے وقت درمیان میں آہنی پرده کیوں رکھا جاتا ہے؟

مسٹر ڈپٹی اسپیکر:—اگر ہر جملے پر تنقید کرنے جائیں تو تقریر مکمل نہ ہو سکیگی۔ اس طرح انٹرپریٹ ( Interrupt ) نہ کیجئے۔

شri. شرینिवासराव अखेलीकर:—सब अंतराजात का ही मैं यहां जवाब देते बैठूँ तो फिर मुश्किल है। आप मुझे बोलने तो کीजिये। भोजन के बारें में भी जेल में काफी अच्छा अंतेजाम

किया गया है। विजिटरियन्स को आलू और नॉन विजिटरियन्स को मटन हफते में अेक बार दिया जाता है। कपड़ों के बारें में यह कहा गया कि अनुहं तीन जोड़ कपड़ा नहीं दिया जाता है। जबतक आप खुद वहां जाकर देखने की तकलीफ न करें तबतक यह बातें मालूम नहीं हो सकती हैं कि वहां पर क्या दिया जाता है और क्या नहीं। अनुहं बराबर तीन जोड़ कपड़ा दिया जाता है।

जेलों में अलग किसम की अिडस्ट्रीज भी आज चलाई जाती हैं। और मुख्तलिफ अिडस्ट्रीज के लिये अेक अिडस्ट्रीयल कमिटी भी बनाई गयी है। वह जिस बात पर सोचेगी कि क्या अिडस्ट्रीज जेल में चालू की जा सकती है। अिसके लिये कुछ लोगों को लखनऊ भी भेजा गया था, और जेलों में वेजेस सिस्टम ( wages system ) शुरू करने के बारें में भी सोचा जा रहा है। आज जेलों में कैरिंग, कारपेट तथार करना, चरखे पर सूत कातना, नवार बनाना आदि कभी तरह के काम सिखाये जाते हैं। पहले सिर्फ नवार बनाने का ही काम जेल में किया जाता था। जिन सबका मकसद यही है कि अनुहं अच्छे और अमन पसंद शहरी बनाया जा सके और वे स्वावलंबी होकर बाहर आने के बाद कुछ काम धंधा कर सकें। कारपेटी और ब्लैकस्मिथ का भी काम आज अिसी लिये जेलों में सिखाया जा रहा है।

यह भी अतेराज किया गया कि जब निजाम के जमाने में ११,००० कैदी जेल में रहते थे तब २१ लाख रुपये खर्च होते थे और आज कैदी बहुत ही कम हैं लेकिन अनुपर २६ लाख रुपये खर्च होते हैं। हां यकिनन खर्च होते हैं, और जो खर्च किये जा रहे हैं वह भी कम ही हैं औसा भेरा स्थाल है क्योंकि अब जेल वह पुराने जमाने के जेल नहीं रहे बल्कि वह तालीम के सेंटर बनने वाले हैं। आज जेल में २०० मशीनें कपड़ा सीने की लाभी गयी हैं। और वहां पर कपड़े सीने का काम होता है। सरकारी लोगों के ड्रेसेस वगैरा भी वहां सीये जाते हैं, और अिस लिये खर्च आपको ज्यादा दीख पड़ता है। लेकिन यह जो खर्च किया जा रहा है वह कैदियों की भलाई के लिये ही किया जा रहा है जिससे वे कुछ सीख सकें। खर्च करने का हमारा कोभी और मनशा नहीं है।

अुसी तरह जेल में अेक अॅप्रिकल्चरल कॉलनी भी बनाई गयी है। वहां पर कैदी अेक साथ मिलकर खेती करते हैं, और दूसरे लोगों की तरह जिंदगी बसर करते हैं। अॅनरेबल मैंबर यदि जाकर यह कॉलनी देखें तो अनुको औसा मालूम होगा कि यह जेल ही नहीं है। वहां पर चावल गेहूं आदि सब तरह का अनाज बोया जाता है। वहां पर यह स्थाल भी नहीं होता है कि यह लोग जेल में रहते हैं। वहां पर अतेमाद की फिजा अिन लोगों में पैदा की जाती है। जब यह बाहर काम करने के लिये जाते हैं तो बिलकुल अकेले जाते हैं और अनुके ऊपर कोभी पहरा नहीं होता है, और वे बराबर बापस आजाते हैं। अनुको औसा लगता ही नहीं कि हम यहां कैदी हैं। वहां पर अेक अिस तरह का बैटमासफियर पैदा किया जाता है कि अनुहं वह जेल लगता ही नहीं है और वे अेक शहरी की तरह अपनी जिंदगी वहां बसर करते हैं।

चिल्ड्रेन्स होम ( Children's Home ) रेसक्यू होम ( Rescue Home ) आदि का भी अितेजाम किया गया है जहां बच्चों के रखने का प्रबंध किया गया है। अिन बच्चों को अलग रख कर सुधारने की कोशिश वहां पर की जाती है ताकि जो बच्चे जरायम करते हैं वे आगे चलकर हुआँ क्रिमिनल न बनें अिसलिये अनुहं अलग रखना पड़ता है।

अितनी सब बातें करने पर भी यह कहना कि यह निजाम के जमाने से वत्तर कानून लाया जा रहा है और अंग्रेजों के जमाने का यह कानून है, सरासर गल्त है। मैं यह पूछना चाहता हूँ कि क्या आपकी डेमोक्रसी पर श्रद्धा है? क्या आप इस तरह से डेमोक्रसी के बारें में लोगों के मन में प्रेम अुत्पन्न कर सकेंगे? आज हमारी हुकूमत है लेकिन हमने कोओ ठंका नहीं लिया है। आप भी कभी इस जगह पर आसकते हैं। लेकिन आप यदि इस तरह से बातें करेंगे तो लोगों की भी डेमोक्रसी पर कैसे श्रद्धा बैठेगी और आप भी यहां आयेंगे तो किस तरह से काम कर सकेंगे?

लेकिन जहां डेमोक्रसी को सेबोटेज ( Sabotage ) किया जाता है, जहां अुसको काटने की कोशिश की जाती है, अुसके बारे में लोगों को नफरत करने के लिये सिखाया जाता है, तो अनिके बारे में तारीख लिखनेवाले बतायेंगे कि ये लोग डेमोक्रसी से कितनी मोहब्बत रखनेवाले थे, और डेमोक्रसी के बारे में अनुके क्या स्थियालात थे। और हकीकत में अनुकी डेमोक्रसी पर श्रद्धा थी या नहीं। लेकिन यह कहना कि कोओ चीज इसमें मौजूद ही नहीं है यह कहां का असूल ही सकता है? में मानता हूँ कि चंद चीजें इसमें मुकम्मिल नहीं हैं। लेकिन किसने यह दावा किया है कि हमने यह मुकम्मिल कानून पेश किया है? इस कानून में मुमकिन है कुछ नकायरा मौजूद हों। अमेंडमेंट के जरिये इसलाह करने की कोशिश की जा सकती है। लेकिन यह कहना कि कोओ भी अच्छी चीज इसमें नहीं हुआ है, डेमोक्रसी के आने के बाद जेलोंमें इसलाह नहीं हुआ है, और अंग्रेजों के जमाने की तरह या अुससे बदतर सुलूख किया जाता है, कहां तक सही हो सकता है?

شري ڪے - وينكٽ رام راؤ : - بعض تبديلیاں ہورہی ہیں اس کو ہم مانتے ہیں۔

شri. श्रीनिवासराव अखेलीकर : - अब मेरे कहने के बाद मान रहे हैं लेकिन पहले तो आप कह रहे थे .....

شري ڪے - وينكٽ رام راؤ : - کچھ تبديلیاں ہوئی ہیں لیکن اس میں یہ پراویزنس کیوں رکھئے گئے ہیں؟

شri گرو ریڈی : - اس بن کی وجہ سے تبديلیوں कو پیچھے ڈھकिला जारहा ہے۔ کینٹنگ اور فٹرنس کے پراویزنس کیوں رکھئے گئے ہیں - اس وجہ سے آپ نے جو سہولتیں دی ہیں اون پر کیا اثر ہونے والا ہے -

شri. श्रीनिवासराव अखेलीकर : - मैं मानता हूँ कि चंद नकायस इसमें मौजूद हैं। अनुके बारे में अधरके और अधरके में बरों को अमेंडमेंट्स पेश करने का अेलियार है। और रीजेनरेल अमेंडमेंट्स पेश हों तो अनुको मान लेने में मुझे कोओ युजर नहीं होगा। लेकिन आज दो रोज से जो बहस हो रही है अुसमें मैं सुन रहा हूँ कि जानवरों का सा सुलूख हो रहा है, अंग्रेजों के जमाने से भी बदतर सुलूख हो रहा है, यह कौन से अिन्साफ की बात है? यहां डेमोक्रसी जारी हुआ है। मुमकिन है कि चंद लोगों के लिये सभी चीजें बुरी मालूम होती हों। लेकिन डेमोक्रसी के खिलाफ हर बक्त बातें करना, असली चीजों पर पर्दा डालकर लोगों में इसके खिलाफ नफरत पैदा करने की कोशिश जो की जा रही है इसमें कौनसा सेन्स ऑफ रिस्पॉन्सिविलिटी है यह मैं पूछना चाहता हूँ।

ऐसके बाद सालीटरी कन्फ्रिनमेंट वगैरा चीजों के बारेमें अतराजात किये गये। मैंने अिक्टदा में ही कहा था कि चंद चीजों पर गौर करना होगा और अनुको गौर करने के बाद कम किया जा सकता ह। हायुस को ऐस नुक्तेनिग्गह से देखना है कि जो लोग सोसाइटी को टारपेडो लगानेवाले हैं, जो सैबोटेज करनेवाले हैं, हार्ड क्रिमिनल्स हैं अनुको कैसे रोका जाय। सभी के लिये एक ही तरीका अेल्टियार किया जाय तो वह सही बात नहीं हो सकती। यह कहा गया है कि जेल के अंदर क्यों सजा दी जाती है। सारी चीजें मैजिस्ट्रेट के सामने लाई जायें तो ऐसा नहीं हो सकता। हर अेडमिनिस्ट्रेशन में डिसिप्लिन होना लाजमी है और अुसकी खिलाफवर्जी होती है तो छोटी छोटी चीजों के लिये अदालत में नहीं ले जाया जाता। ऐसके तहत जो सजाओं होती हैं वह खास किसी की सजाओं होती हैं। ऐसमें दफा ४६ में जो चीजें हैं वहां पर जब डिसिप्लिन की गलती होगी तो अुसकी अिस्लाह करने के लिये फार्मल वार्निंग, चेंज आँफ लेबर, हार्ड लेबर, लॉस आँफ प्रिविलेज, सबस्टीट्यूशन आँफ गनी आँर अदालत क्लोदज् वगैरा चीजें रखी गई हैं।

### (Interruptions)

### (Pause)

श्री. श्रीनिवासराव अखेलीकर:—मैंने ऐसा नहीं कहा है कि ऐसमें सब का सब अच्छा होगा। कुछ चीजें हो सकती हैं कि जिनपर गौर किया जाय। अगर मैं यह कहूँ कि ये चीजें आज भी रायज नहीं हैं जैसे कि गनी आँर अदालत क्लोदज्, तो मैं झूठ कह रहा हूँ ऐसा मत समझिये। फेट्स का सवाल भी वैसा ही है। अेक शख्स जो सात मर्टबा सजा भुगत चुका है अुसको डंडा डालकर भी वह भाग जाता है। अैसे लोगों के लिये कोओ प्रोबीजन होना चाहिये या नहीं ऐस पर हायुस को गौर करना चाहिये। जो लोग डंडे डालनेपर भी भाग जाते हैं या मुसलसिल जरायम करते रहते हैं अनुके लिये क्या किया जाना चाहिये ऐस पर हायुस को गौर करना होगा। जिन सजाओं को अेक हिस्सा जो सख्ती पर मायल है वह अुन्हीं लोगों के लिये है जो अेक तादाद में वहां पर आते हैं और जरायम पेश हैं। ऐसमें जो दूसरी छोटी छोटी सजाओं हैं वह डिसिप्लिन के खातिर हैं। अैसी सजाओं के लिये अदालत में ले जाना सही असूल नहीं है।

अब यह सवाल रहा कि जो खल्स हैं अनुका वहांके सुपरिटेंडेंट मनमाना अिस्टेमाल करसकते हैं। मैं मानता हूँ कि यह अेक अतराज हो सकता है। यह जेलों में ही क्या बाहर भी होता है। जिनके हाथ में अधिकार होते हैं अनुके जरिये अनुके मिस्यूज ( Misuse ) होने का सवाल हर जगह रहता है। लेकिन यह कहना कि हर शख्स अुसको वैसाही अिस्टेमाल करेगा यह सही नहीं। मैं समझता हूँ कि ऐस हायुसके लोग जिम्मेदार लोग होते हैं। कोओ अेडमिनिस्ट्रेशन में हो या बाहर हो लोगों को जिम्मेदार शाहरी बनाना डेमॉक्रसी के लिये अनुमें मोहब्बत पैदा करना और ऐसके लिये खुद जिम्मेदार बनना ऐस हायुस के मेंबरों का और जो लोग अपने को जिम्मेदार समझते हैं अनुका फर्ज हो जाता है। वरना मिस्यूज का सवाल हर जगह रहेगा और किसी को कोओ अेल्टियार ही न दिया जासक्ना।

‘अेक आँनरेबल मेंबर ने कहा कि जेल के सुपरिटेंडेंट राजप्रमुख हैं। आज के मानोंमें वह सचमुच राजप्रमुख हैं। जितने अेल्टियारात राजप्रमुखको हैं अनुने ही जेलके सुपरिटेंडेंट को वहां है ऐस माने

में वह जरूर राजप्रमुख हैं औसा कहा जा सकता है। अिससे ज्यादा वक्त हाबुस का लेना में जरूरी नहीं समझता लेकिन यह कहना चाहता है कि जो बिल लाया गया है वह दूसरे स्टेटों के साथ अेकसा नियत रखता है जिसके जो कवायद बनाये गये हैं वहक श्री जगह दूसरे स्टेटों से भी आगे हैं, किसी स्टेट के हम पीछे नहीं हैं। बहुत सी सहूलतें हमने दी हैं लेकिन अगर और भी कोजी बात हो सकती है तो हाबुस असका मुख्तदर है। लेकिन यह कहना कि सौ साल पहले का यह कानून है और अिसमें अुसी पुराने जमाने की बातें हैं तो वह सही नहीं है। अिस नुक्तेनजर से मैं समझता हूँ कि ऑनरेबल मेंबर अिसका फस्ट रीडिंग पास कर देंगे।

شروع عبد الرحمن(ملک پیٹھے):— س्ट्रीट्रीप्रिस्टर - فوस्ट रिडिंग के मूशन को वोथ प्रक्रिये से पहले मैं ये जाना चाहता हूँ कि किया आनीप्रिल मन्स्ट्री ये उपचार सुझेते हीं कि इस सायीद के ओर अस सायीद के एम - एल - एइर को हैदराबाद और स्किन्डराबाद की जिलों के मामले का मौका फ्राहम किया जाये? वह वहां जाकर حالات का مطالعہ करक्तर हैं - इस के बाद अन्हीं अपनी त्रिमायत पेश करने या नह करने और किस दृष्टिकोण से पेश करना है ऐसे तरीके करने में सहृत हो गए - और इस तरीके के मन्स्ट्री का مقصد यही बहर तरीके पर चाहता है -

श्री. श्रीनिवासराव ओखेलीकर :— किसका क्या मकसद है वह मुझे मालूम नहीं है। मगर ऑनरेबल मेंबरों को तरमीमात देने का मौका दिया गया है। पहले भी मैंने हमेशा दिया है और हर वक्त देने के लिये आमादा हूँ। लेकिन बिल का फस्ट रीडिंग पास करने से और तरमीमात पर गौर करने से जिसका कोजी संबंध नहीं है।

श्री एस - रामेंद्ररायड़ी :— आनीप्रिल मन्स्ट्री एफ डी बी को मूलम हो गए कि एक हफ्ते पहले मैं और श्री दहरा बहक्षम ने जिले के मामले के लिये अन के पास दरखास्त दी थी जिस पर जवाब मलाके महत्व के पास दरखास्त दो - महत्व मामले के पास दरखास्त दिये हैं तो वह कहते हैं कि हम को अंतिम अवधि नहीं हैं - और अब असमीली के फ्लोर पर आनीप्रिल मन्स्ट्री एफ डी बी इस तरीके कहते हैं - आप क्ल इस का अन्तिम अवधि है जैसे कि तियां तियां हैं -

श्री. श्रीनिवासराव ओखेलीकर :— स्पीकर सर, ऑनरेबल मेंबर अेक ही बात याद रखते हैं लेकिन वे भूल जाते हैं कि यहां पर मद्रास या आंध्र के लोग आये थे तो अनके कहने पर बिला दरखास्त सिर्फ फोन पर जेल के सुपरिंटेंडेंट से बात करके अनको अंदर जाने का मौका दिया गया और अेकबार ही नहीं बल्कि दो भर्तबा दिया गया है। अगर हर वक्त आप चाहें कि बिला दरखास्त किये और कवायद को नजरखांदाज कर के अिसका फायदा अठाया जाय तो वह कैसे सही हो सकता है? अेक वक्त अर्जन्सी के तहत अनको और अनके दोस्तों को मौका दिया गया। लेकिन हर वक्त औसा मौका दिया जाना कैसे मुनासिब होगा यिस पर गौर किया जाना चाहिये।

*Mr. Deputy Speaker :* The question is : "That L. A. Bill No. XIX of 1954,—the Hyderabad prisons, Bill 1954, be read a first time."

The motion was adopted.

*Shri Srinivas Rao Ekhelikar :* Sir, I beg to move : "That L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill 1954, be read a second time.

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکوہ:- مسٹر اسیکرسر۔ میں اس بل کو سلکٹ کمیٹی سے رپر  
کرنیکرے بارے میں ایک امنڈمنٹ کا نوٹس دیا ہوں جس سے میں مووکرنا چاہتا ہوں۔

I beg to move : "That L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill 1954, be referred to a Select Committee consisting of the following Members of the Assembly and to report thereon before 20th September, 1954 :

1. Shri A. Laxmi Narsimha Reddy.
2. „ A. Raj Reddy.
3. „ K. Ananth Reddy.
4. „ Ankush Rao Ghare.
5. „ Govind Rao Morey.
6. „ V. B. Raju.
7. „ Murlidhar Rao Kamtikar.
8. Smt. Ashatayee Waghmare.
9. Shri Sripat Rao Niwasekar.

*Mr. Deputy Speaker :* Amendment moved.

شری بی۔ ڈی۔ دیشمکوہ:- جو موشن ہاؤز کے سامنے آیا ہے اس کے بارے میں میں سمجھ رہاتا کہ آنریبل مور کچھ اسکی وضاحت کریں گے۔ اگر وہ مزید سوچنا چاہتے ہیں اور وضاحت کے ساتھ اپنے خیالات ظاہر کرنا چاہتے ہیں تو مناسب ہے۔ آج جو مباحثہ ہوئے ہیں اون سے ظاہر ہو چکا ہے کہ ہم نے جیل کے اندر بہت سی ترمیمات کی ہیں۔ وہ جو عمل ہے اون کا اوس کو قانونی شکل دینا لازم ہے ہمیں معلوم نہ ہو سکے گا کہ کیا ترمیمات کرنے والے ہیں جب تک کہ قواعد نہ بنائے جائیں۔ اس ایکٹ میں کافی ترمیمات کی ضرورت ہے۔ اس جانب سے کافی ترمیمات دئے گئے ہیں انکی روشنی میں غور کرنا ہو گا۔ تاوقیکہ اس طرف کے اور اوس طرف کے آنریبل ممبرس بیٹھکر اس پر غور نہ کریں مقصد ہوا نہیں ہو گا۔ اس لئے آنریبل مور میرے اس موشن کے بارے میں سوچیں تو مناسب ہو گا۔

‘ श्री. श्रीनिवासराव अंबेलीकर :—मिस्टर स्पीकर सर, मैं यिस मोशन की कोअी जरूरत नहीं समझता। क्योंकि यिसके लिये दूसरे तरीके हैं, सेकंड रीडिंग है, अमेंडमेंट्स हैं और मैंने अपने भाषण में भी कहा है कि कोअी रीजनेबल अमेंडमेंट्स आते हैं तो अनुहंस मानने में मुझे अुजर नहीं होगा। यिसके बावजूद भी मोशन के जरिये से यिसका यिसरार करना सही नहीं है। अँसी सूरत में मैं समझता हूँ कि यिस मोशन को वापस लिया जाय।’

شروعی اے۔ گرواریڈی :— جس طرح ہم سلکٹ کمیٹی میں یٹھکر ایک دوسرے کو سمجھا سکتے ہیں اور جس طرح اپنے خیالات کا اظہار کر سکتے ہیں امنڈمنٹ میں وہ چیزیں ناممکن ہیں اس لئے میں رکوست ( Request ) کروں گا کہ اس موشن کے بارے میں غور کیا جائے۔

*Shri K. Venkatrama Rao.* I want so say a few words. The Amendment was not discussed.

*Mr. Deputy Speaker :* But the hon. Member has moved it, and the Minister has replied to it. Does the hon. Member want it to be put to vote?

*Shri B. D. Deshmukh :* As the hon. Minister has just now explained in his reply and I hope he will consider the amendments to be tabled on behalf of the Opposition Members. In view of that, I beg leave of the House to withdraw my amendment.

The amendment was, by leave of the House, withdrawn.

*Mr. Deputy Speaker :* The question is : “That L. A. Bill No. XIX of 1954, the Hyderabad Prisons Bill, 1954, be read a second time”.

The motion was adopted.

شروعی بی۔ ڈی۔ دیشمکھ :— جیسا کہ میں نے خواہش کی تھی کہ مور صاحب کو میرے امنڈمنٹ پر غور کرنے کا موقع دیا جائے۔ اس بل کو آج ملتوی کیا جائے تو مناسب ہے۔

श्री. श्रीनिवासराव अंबेलीकर :—मुझे अुजर नहीं है।

مسٹر ڈیٹی اسپیکر :— اس بل کو کل لینگرے۔

**L. A. Bill No. XXI of 1954, the Cotton Ginning and Pressing Factories (Hyderabad Amendment) Bill, 1954**

*The Deputy Minister for Public Works & Labour : (Shri M. S. Rajalingam ):* Sir, I beg to move :

“That L. A. Bill No. XXI of 1954, the Cotton Ginning and

Pressing Factories (Hyderabad Amendment) Bill, 1954, be read a first time".

*Mr. Deputy Speaker* : Motion moved.

*Shri M. S. Rajalingam* : Sir, this bill seeks to amend the Cotton Ginning and Pressing Factories Act, 1925, in its application to the Hyderabad State.

As many of the hon. Members are aware, the factories were regulated by the Hyderabad Factories Act, 1337 F. Section 63 and clauses 1 and 2 of the licence regulated the admixture of cotton. When the Hyderabad Factories Act, of 1357 F. came into force, we could not avail of section 63. Subsequently, the Indian Factories Act has come into force from 1st April 1951 and later on in the light of the Part B States Laws Bill, the Indian Cotton Ginning and Pressing Factories Act was made applicable to the whole of Hyderabad. As the Act is now being administered by the Labour Department, it has become incumbent that the Government should have certain facilities to regulate the ginning and pressing processes.

The Cotton Importers' Association, New York, through the Cotton Buyers' Association, Bombay, complained to the Indian Central Cotton Committee that the quality of Indian Cotton supplied to manufacturing concerns in America since the close of the World War II was not upto expectations. Such complaints affected the reputation and fair name of India. The complaints related to the presence of machine oil deposits, spots resulting from the spilling of fresh lubricant oil, increasing quantity of extraneous matters such as oil wiping rags, pieces of burlap, large seed clusters and bamboo sticks in the bales of cotton. Another serious cause of complaint was the excess moisture to the extent that cotton in some bales appeared to have been thoroughly in the excess of mixture resulting in hard cakes. The source of trouble was within the Ginning and Pressing Factories and in the interests of maintaining India's reputation abroad and in order to retain good business relationship with foreign buyers of Indian cotton it has become incumbent that effective measures should be adopted to remove the cause of the above complaints. It has therefore become necessary to amend the Cotton Ginning and Pressing Factories Act to prohibit admixture and excessive moistening of cotton.

In Bombay and C. P., similar provisions have been made by amending the Central Act in its application to those States. This Bill is intended to achieve similar object.

As I have said the Indian Cotton Committee has recommended such provisions to be made in the Act in order to see that we are well-placed in our relations with foreign trade.

From another point of view also, this legislation has become necessary, i.e., the necessity to regulate the rates. Merchants from Bhir, Aurangabad, Nanded and Parbhani have been complaining that they were having unhealthy competition in trade owing to the non-regulation of the charges for ginning and pressing. They desired that the charges leviable there should be on par with those charged at Poorna and Hingoli. From this view point also, it has become necessary for the Government to consider about the regulation of charges in ginning and pressing.

In view of all these, we have made certain additions in the Indian Act, in its application to the Hyderabad State. The main amendment that we proposed to the Indian Act, in this Bill is that we have made taking of licences incumbent. These licences we used to give hitherto under section 63 of the Hyderabad Factories Act, 1337 F., and which later on we could not regulate owing to the changes I have mentioned already. We have also provided in this Bill, the formation of a rate fixing committee for each local area, for the control of rates chargeable for ginning and pressing cotton. Such Committee shall consist of the Collector of the District who shall be the Chairman, and two representatives of cotton ginning and cotton pressing factories, and one non-official possessing special or technical knowledge of cotton ginning and pressing or of cotton trade to be nominated by the Director, Commerce and Industries of the State, and the Chief Inspector of Factories and Boilers of the State, and the other officer as he may nominate. Because the Collector happens to be the chairman, it should not be understood that the committee is going to be under some other department than the Labour Department. So far as the Government is concerned, it has made itself very clear on this point that this Act will be administered by the Labour Department and the Chief Inspector of Boilers will be the main person responsible for its administration.

The Chief Inspector of Boilers happens to be the main head to regulate these and other administrative matters to be mentioned in the Rules to be made under the provisions of this Bill.

We have now made an admixture of cotton an offence and we have gone to the extent of imposing a fine of Rs. 1,500 for such offences. We have also given certain facilities for Inspectors or Gazetted Officers to inspect and to see that such things do not happen. We have also in a way tried to regulate the maintenance of registers and other things.

There are the main features of the Bill and I think the purpose for which it has been introduced has been clearly explained. I hope hon. Members will readily accept and pass this legislation.

\* شری بی - ڈی - دیشمکھہ :- ستر اسپیکر سر - اس ہاؤز کے سامنے جب کبھی کوئی قانون آتا ہے اور اوس کی فرست ریڈنگ کے موقع پر مباحثت میں حصہ لینے کے لئے اپوزیشن کا کوئی ممبر انہتہ ہے تو اوس جانب کے لوگ یہ خیال کرتے ہیں کہ اوس بل کی مخالفت ہو گی - لیکن میں اس موقع پر اس بل کی مخالفت کے لئے نہیں کھڑا ہوا ہوں - بلکہ اوس کی تائید کرنے اور ایک حد تک موور آف دی بل کے منشا کو ول کم (Welcome) کرنے کے لئے کھڑا ہوا ہوں - ہماری اور خصوصاً اندیا کی جو گذول (Good will ) یا ساکھے یعنی القوامی تجارت میں ہے اوس کے معیار کو بلند کرنا ضروری ہو جاتا ہے - لیکن ہم یہ دیکھ رہے تھے کہ تجارت پیشہ طبقہ - مل اونرس یا جیننس پرنسپل فیکٹریز کے مالک جس ذمہ داری کے ساتھ تجارت کرنا اور دوسرے مالک میں اپنے گذول کو برقرار رکھنا چاہئے نہیں رکھ رہے ہیں اور غیر ذمہ دارانہ طریقہ پر عمل کر رہے ہیں - حکومت نے اس چیز کو دیر سے محسوس کیا - میرا اس بل کے بارے میں یہ خیال ہے کہ ایک خاص کمپنی کی جانب سے شکایت ہونے کی بنا پر حکومت جاگ اٹھی - چنانچہ دوسرے مالک میں ہارا جو بورڈ ہوتا ہے وہاں بعض کمپنیوں کی شکایتیں آتی ہیں - اس لئے حکومت نے اس بل کے ذریعہ ایک ضروری چیز کی تکمیل کی ہے۔ فرست ریڈنگ کے موقع پر میں آریبل موور آف دی بل اور ہاؤز کے سامنے یہ چیز رکھنا چاہتا ہوں کہ یہ شکایت باہر کی کسی کمپنی سے ہوئی ہو خواہ وہ امر یعنی کمپنی ہو یا انگلش کمپنی ہو یا جاپانی کمپنی ہو اوس کو رفع کرنے کے لئے جو اقدام کیا گیا وہ اچھا ہے لیکن خود ہمارے یہاں کے زراعت پیشہ لوگوں سے تجارت پیشہ طبقہ اچھا سلوک نہیں کرتا - ہمارے یہاں کے کسان جب اپنا خام مال مارکٹ میں لاتے ہیں اون کی قیمت براابر ادا نہیں کی جاتی حالانکہ اس سلسلہ میں مارکٹ کمیٹیز ایکٹ موجود ہے - اوس کی نگرانی کے لئے زراعت

کے عہدہدار مقرر ہیں لیکن اس کے باوجود ہمارے کسانوں کی صحیح زندگی اور رہبری نہیں کی جاتی - وہاں سونے کے مال کو مٹی کے مول پر لیا جاتا ہے - مثال کے طور پر میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ حکومت کی جانب سے زراعت کا محکمہ قائم ہے اوس کو یہ احکام دئے گئے ہیں کہ کائن کی ایک خاص قسم کی فرائیٰ جو حکومت کی روی کمنڈڈ ہے ( Recommended ) اوس کی خاص قیمت کسانوں کو دلائی جائے - لیکن کسانوں کو وہ قیمت نہیں دلائی جاتی - خصوصاً جالنہ - سیلو اور ما نوتوہ وغیرہ کی مارکٹس میں ایسا عمل ہوتا ہے - وہاں کی جیننگ اور پرسنگ فیکٹریز کے جو اونرス ہوتے ہیں وہی اڑھتیہ بھی ہوتے ہیں وہی دلال بھی ہوتے ہیں اور وہی کائن بھی خریدتے ہیں - اس لئے کسانوں کو اون کے مال کی جو اصل قیمت ملتی چاہئے نہیں ملتی - یا اوس کا جو نرخ مقرر ملنا چاہئے وہ نہیں ملتا - مثلا جالنہ کی مارکٹ میں گاؤرانی - یا بارہ نمبر کی سرکی یا ۵۶ نمبر یا ۹۳ نمبر کی سرکی کائن ہوتی ہے وہ اچھی قسم کی کپاس ہوتی ہے لیکن وہاں بڑی قسم کی کپاس کو خاط ملطک کر کے آدھے بھاؤ پر لینے کی کوشش کی جاتی ہے - باوجود اس کے کہ زراعت کے محکمہ کو اس کی نگرانی کے احکام ہیں لیکن کسانوں کی شکایت دور نہیں ہوتی - وہاں کسان محض کارخانہ داروں کے رحم و کرم پر ہیں - بجائے اس کے کہ ( ۲۵ ) روپیہ فی پله زیادہ نرخ ادا کرنے کے پانچ دس روپیہ اضافہ کر کے لئے ہیں - یہی وہ لوگ ہیں جو گٹھے باندھ کر مال باہر بھیجنے وقت اچھی قسم کی کپاس میں بڑی فرائیٰ ملادیتی ہیں جس کی وجہ سے باہر کی مارکٹ میں ہماری ساکھی متأثر ہو جاتی ہے - اور دوسری طرف کسانوں کو بھی جو قیمت دینا چاہئے وہ نہیں دیتے - میں سمجھتا ہوں کہ ہاؤز کے وہ آریبل نمبرس جنہیں کپاس کی تجارت کا تھوڑا بہت تجربہ ہے - با جنہیں جیننگ اور پرسنگ فیکٹریز کے معانئہ کا موقع ملا ہے اون کو اس کا تجربہ ہو گا کہ کس طرح خالص گاؤرانی یا بارہ نمبر کی سرکی میں دوسری سرکیاں ملا کر بیچا جاتا ہے - اس امر کے باوجود خود محکمہ زراعت اچھی قسم کی سرکی حاصل کرنے کی کوشش کرتا ہے لیکن اس کو بھی اچھی قسم کی کپاس نہیں ملتی - کیوں کہ اون ہی لوگوں سے خریدنا پڑتا ہے جو اس قسم کی خراب سرکی اون میں ملا کر بیچتے ہیں - جب کسان اچھی قسم کی کپاس لیکر آتے ہیں تو اون سے کوئی نہ کوئی بہانہ کر کے کہتے ہیں کہ تمہاری کپاس میں خامیاں ہیں - اس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ جو نرخ ملنا چاہئے نہیں ملتا - اس سلسلہ میں جو ریگولیشن لا یا گیا ہے وہ ثہیک ہے بعض وقت کپاس کے گٹھے خراب ہو جاتے ہیں - پانی میں بھیگتے رہتے ہیں - بعض وقت تو کپاس سے لدی ہوئی بندیاں دو دو روز کے عرصہ تک بھیگتی رہتی ہیں - اون کے بچاؤ کا کوئی سامان نہیں ہوتا - نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ وہاں کے اڑھتیہ سستی قیمت پر خرید لیتے ہیں - خاص طور پر جالنہ میں یہ دھندا چل رہا ہے - میں ان بل کے سلسلہ میں حکومت کی توجہ جس خاص چیز کی طرف مبذول کروانا چاہتا ہوں ، وہی ہے کہ کسانوں کو اون کے مال کی قیمت برا بر دینے کے متعلق ریگولیشن بنانے

چاہئیں - ورنہ مال میں ملاوٹ ہونے کا امکان ہے - جس کی وجہ سے ایسا ہو سکتا ہے کہ جو مال باہر پہنچنا چاہئے نہیں پہنچتا - اس بل کے متعلق رولس بنائے وقت حکومت یہ سوچ سکتی ہے کہ کس ڈپارٹمنٹ کی جانب سے اس قسم کا پراویزن بنایا جائے تاکہ اون کا پروٹیکشن ( Protection ) ہو سکے - اس کے متعلق سخت سے سخت تدابیر اختیار کی جانی چاہئیں - اور جن کارخانہ داروں کی جانب سے بدنیوانیاں ہوئی ہیں اون کو سزا دی جانی چاہئے - اس لئے اس بل کی اس حد تک تائید کرتے ہوئے یہ عرض کروں گا کہ ہو سکتا ہے کہ اس جانب کے چند ممبروں کو اس بل سے اختلاف ہو لیکن اون کی جانب سے جو ترمیمات آئیں گی انہیں منظور کرنے میں آزبیل موفر آف دی بل کو کوئی تامل نہیں ہوگا۔

شروع کے - وینکٹ رام راؤ :- یہ بل جو ہوم منسٹری سے لیبر منسٹری کو منتقل ہو کر ہمارے سامنے آ رہا ہے اوس کے اصولوں سے کسی کو اختلاف نہیں ہو سکتا - اس بل میں منٹر ایکٹ کے بعض دفعات کا اضافہ کر کے جہاں کہیں بھی بل میں اوس کی ضرورت ہو وہ چیزیں رکھی گئی ہیں - اس میں ایک ویٹ فکسٹنگ کمیٹی بھی رکھی گئی ہے - لیکن یہ کمیٹی کتنے دنوں تک کام کریگی اس کی کوئی صراحة نہیں ہے - جب کبھی ہم کوئی کمیٹی بناتے ہیں تو اوس کے متعلق ہمارا مطمح نظر یہ رہنا چاہئے کہ یہ کمیٹی اتنی مدت تک اپنا کام ختم کر لیگی - یہ نہیں کہ وہ کمیٹی غیر محدود مدت تک کام کری رہے - اس بل میں اس کے متعلق صراحة نہیں شائد ڈرافٹ کرتے وقت اس کو پیش نظر نہیں رکھا گیا یا کیا اس کا پتہ نہیں چل رہا ہے - اس میں نامینیشن کا سلسہ بھی آ رہا ہے - اس میں ایک لیگن پریزیشن ہی ہے کہ جہاں کوئی ورائٹی پر سکرائیڈ ہوئے اوس کے متعلق اگر یہ سرٹیفائی کیا جائے گا کہ اس میں اس قدر نمی ہے اور وہ سرٹیفیکیٹ پراسیکیوشن کی جانب سے پرائیوس کیا جائے تو اوس کارخانہ دار کو پندرہ سو روپیہ جرمانہ یا بصورت عدم ادائی قید سزا دی جائے گی - لیکن کرمنالوجی کے جو بعض پرنسپل ہوتے ہیں اون کو اس بل میں نظر انداز کیا جائے تو اس قدر نمی ہے شک نہیں کہ تجارت پیشہ طبقہ میں بعض بلاک شیپ ( Black shape ) بھی ہوتے ہیں اور یہ میں مانتا ہوں کہ اون پر کنٹرول کرنے کے لئے ہم یہ بل لا رہ ہیں لیکن اس ہمانے سے بعض اسٹابلشمنٹ پرنسپل کو الٹ پلٹ کرنے کی کوشش نہیں کرنا چاہئے - کرمنالوجی کا صاف اور سیدھا اصول یہ ہے کہ ہر شخص یہ گناہ ہوتا ہے تاوقیکہ اوس کے خلاف کوئی الزام ثابت نہ کیا جائے - یہاں پراسیکیوشن کے لئے سرسی طور پر ثابت کرنے کے لئے ایک سہولت بخش پرنسپل رکھا گیا - وہ یہ کہ معمولی طور پر کسی اکسپرٹ کی اوپینیں لے لی جائے گی اور وہ شامل مثل کردی جائے گی - اوس کی بنا پر کوئی شخص پندرہ سو روپیہ جرمانہ کا مستوجب ہو جائے گا - یہ نہیں رہنا چاہئے تو میں یہ کہوں گا کہ اس اصول کو جو مسلمہ اصولوں کو الٹنے والا پراویزن ہے وہ اس میں رکھا گیا ہے - اس میں ترمیم کی سخت ضرورت ہے - اس سائلہ میں یہ چند سرسی

آبزرویشننس (Observations) ہیں امید ہے کہ منسٹر صاحب اس کا تشني بخش جواب دیں گے - اس کے ساتھ ساتھ جیسا کہ اس جانب کے بعض آنریل ممبرس نے بتایا کہ پاس کے گھومنہ میں جو خرابیاں ہوتی ہیں وہ انٹر نیشنل مارکٹ میں ہمارے ملک کی بدناسی کا باعث ہو رہی ہیں - لیکن اس سلسلہ میں یہ بھی معلوم ہوا ہے کہ اوس کو پرسنگ اینڈ جیننگ فیکٹریز میں جو مشینری ہے وہ اتنی پرانی ہو گئی ہے کہ اوس کو ری پلیس (replace) کرنے کی ضرورت ہے - اس کو ری پلیس کرنے کے سلسلہ میں لیبر ڈپارٹمنٹ کی جانب سے جو کوشش کی جانی چاہئے یا جو وارننگ (Warning) اون کے مالکوں کو دی جانی چاہئے نہیں دی گئی یعنی وجہ ہے کہ وہی پرانی مشینری وہاں کام کر رہی ہے - جس کی وجہ سے بتولہ یا کائن سینڈ اچھی طرح صاف نہیں ہوتا - اوس کے علاوہ خراب مشینری کی وجہ سے کائن پر تیل کے دھبہ وغیرہ آجائے ہیں اور وہ جمائے کائن کے کائن کا کیک بن جاتی ہے - اگر آنریل مور آف دی پل اون مشینری کو ری پلیس کرنے کی جانب توجہ کریں تو ہماری کپاس پدناٹی سے بچ سکتی ہے - لیکن اس خصوصی میں اس بل میں ہم کوئی چیز نہیں پا رہے ہیں - ان چند آبزرویشننس کے تشني بخش جوابات کی امید کرتے ہوئے میں اپنی تقریر حتم کرتا ہوں -

\* شری جی - گوپال راؤ (ہاکھال) : - جو بل ایوان کے سامنے لا یا جارہا ہے وہ کائن جیننگ اینڈ پرسنگ فیکٹریز کے مالکوں کے سلسلہ میں لا یا جارہا ہے - اس میں شک نہیں کہ انٹر نیشنل پلین پر ہندوستان کی تجارتی ساکھوں کو برقار رکھنے کے لئے ضروری تدبیر اختیار کرنا ضروری ہے - لیکن اس سلسلہ میں محض قانون بنانے سے کہ اگر فیکٹریز کے مالک فلاں فلاں غلطی کریں تو سزا دی جائے گی اصل مقصد ہورا نہیں ہو سکتا - میں مانتا ہوں کہ فیکٹریز کے اونریں یہ تمام چیزیں کرنے والے ہیں یا کر رہے ہیں - خاص اپنے فائدے کے لئے بعض لوگ ناجائز طور پر یہ چیزیں کرتے ہیں لیکن بعض ایسے لوگ بھی ہیں جو اچھی طرح کام کرنا چاہتے ہیں لیکن اپنی معاشی مشکلات کی وجہ سے اپنی کوئی فیکٹری نہیں رکھ سکتے - باہر کے مالک سے ہماری جو تجارت ہے اس کے موضوع پر بحث کرنا ہمارے اس ایوان کے اسکوپ (Scope) سے باہر ہے - اس پر پارلیمنٹ میں بحث ہو سکتی ہے - کائن پر آئیں کا جو دھبہ آتا ہے - یا اوس میں جو دوسرا میٹریل ملایا جاتا ہے اس کی وجہ کیا ہے - ہو سکتا ہے چند مالکان فیکٹری اپنے فائدے کے لئے کچھ خراب قسم کا میٹریل اوس میں ملاتے ہوں - لیکن ہر مالک تو اس طرح نہیں کر سکتا - اس کی ایک وجہ یہ ہے پہچاس سال پہلے جو مشینری لائی گئی تھی وہی اب تک کام کر رہی ہے - اون کے مالکوں کے پاس اتنی استطاعت نہیں کہ وہ دوسری مشینری خرید سکیں - اگرچہ اس بل پر بحث کرتے وقت اون کو اب قسم کی امداد دینے کا سوال پیدا نہیں ہو سکتا لیکن گورنمنٹ کے سامنے یہ مسئلہ بھی ضرور رہنا چاہئے کہ اون لوگوں کو کوکس طرح مدد دی جاسکتی ہے - میرا خیال ہے کہ گورنمنٹ اس مسئلہ کی طرف توجہ نہیں کر رہی ہے - ہمارے پاس جو آئی - فی - یہ

موجود ہے اوس کی جانب سے ایسے ہی لوگوں کو قرضہ دیا گیا ہے جو دیوالیہ نکال چکے ہیں اگر اون کی معاشی حالت کو درست کرنے کے لئے بھی کوئی برداشت نہیں لایا جاتا تو اختراض نہیں ہو سکتا تھا۔ لیکن اس بل کے دیکھنے سے یہ واضح ہوتا ہے کہ باہر کی مارکٹ میں ہماری کاشن کی ساکھی گرنے کی وجہ سے اس بل کو لا یا جا رہا ہے اور اس میں یہ رکھا جا رہا ہے کہ اگر کوئی شخص خراب میٹریل کی ملاوٹ کرے تو پندرہ سو یا پانچ سو روپیہ جرمانہ کیا جائے گا۔ لیکن میں کہوں گا کہ محض قانون بنا دینے سے یہ چیز دور نہیں ہو سکتی۔ بلکہ جیسا کہ ایک آریل ممبر نے فرمایا کاشتکاروں کا پروٹیکشن کرنا ضروری ہے۔ اور اون کے ساتھ ساتھ چھوٹے چھوٹے سرمایہ داروں کو جن کے پاس نئی مشنری کو ری پلیس کرنے کی استطاعت نہیں ہے مدد دینا چاہئے۔ ہماری کپاس کی تجارت کا حلہ بہت ہی محدود ہے صرف جاپان۔ امریکہ یا انگلینڈ ہی کو ہارا مال بھیجا جاتا ہے۔ اور وہ بھی خاص خاص شرطوں کے تحت۔ آزادانہ تجارت نہیں ہو سکتی۔ اس لئے ضرورت اس اس کی ہے کہ اون لوگوں کی معاشی مشکلات کو دور کرنے کے لئے گورنمنٹ موزوں اقدام کرے۔ اور آئی۔ آئی۔ یہ سے یا کسی دوسرے فنڈ سے اون کی مدد کرے۔ تاکہ وہ اپنے کاروبار کو ٹھیک طریقہ پر چلا سکیں۔ اور ہندوستان کا نام باہر بکھر کشون میں برقرار رہ سکے۔ میں اس بل کی مخالفت نہیں کر رہا ہوں بلکہ یہ سائیڈ ویبی پیش نظر رکھنا چاہئے۔ اتنا عرض کرتے ہوئے میں اپنی تنبریختم کرتا ہوں۔

**श्री. रूद्धमाजी धोंडीबा पाटील (आष्टी) :**—अध्यक्ष महोदय, यह जो बिल आज यहां पर लाया गया है वह काश्तकारों के लिये ज्यादा फायदे का होनेवाला है। ज्यादा तर काश्तकारों पर असिका असर होता है। पहले जमाने में कपास की पैदावार काश्तकार करता था और अुसका कपड़ा भी काश्तकारही बनाता था, जैसे कि महात्मा गांधीजी ने हमें चरखा चलाने के लिये कहा वैसे ही अुस जमाने में काश्तकार यह सब काम करता था और अुससे अुसे रोजी मिलती थी। कपास के बीज निकालने का काम भी काश्तकार अपने घर में करता था, लेकिन बाद में पैदावाले लोग आगये और अुन्होने बाहर से मशनरी मंगवाकर जिनिंग और प्रेसिंग की फॉक्टरीज शूरू कीं और काश्तकारों का यहां का धंधा मर गया। नतीजा असिका यह हुआ कि काश्तकार बेरोजगार होगये। जिस तरहसे अच्छे धी में विजिटेबल धी की मिलावट के बारें में बंबई सरकार ने कायदा बनाया है अुसी तरह से असिका कानून में भी करना चाहिये। आज कपास में ये बड़े बड़े लोग बहुत मिलावट करते हैं और अेक तरह का अच्छा कपास मिलता ही नहीं भितनाही नहीं बल्कि कपास लगाने के लिये जो अच्छे और अेक तरह के बीज मिलने चाहिये वह भी नहीं मिलते हैं। अुसमें भी मिलावट रहती है। जिसके कारण कपास भी अच्छी और अेक किसम की नहीं मिलती है। हातसे करधे से निकाला हुवा बींज आज कहीं भी नहीं मिलता है। नमुना अेक बींज का बताते हैं और जब बींज खरीदने के लिये जाते हैं तो दूसरे ही तरह का बींज दिया जाता है। अस पर पाबंदी रखने के लिये और कप.सकी जो मिलावट होती है जिसकी वजह से बांहर देश में हमारे मालका कदर कम होती जा रही है, अुसको रोकने के लिये यह बिल लाया गया है। यह बहुत अच्छा हुवा। कपास की कंडी जातियां हैं। और हरअेक कसम का अच्छा कपासही बाहर जायें और असमें मिलावट न हो, अस लिये अस तरह का कानून

लाने की बहुत जरूरत थी, और जो बींज मिलता है वह भी अच्छा मिलना चाहिये। फॉक्टरियों में सच्चा घंडा करनेवाले लोग तो बहुत ही कम होते हैं। अस लिये अंस का नून लाने की बहुत जरूरत थी। मैं यह कहना चाहता हूँ कि गव्हर्नरमेंट को काश्तकारों के फायदे के लिये भी सोचना चाहिये। काश्तकार को आज जो मिल से बींज मिलता है, असमें मिलावट नहीं होनी चाहिये, असके लिये अनुके पास फसल अच्छी नहीं आती है। जरीला, या दुसरा अच्छा बींज बताकर असमें दूसरा को अंगी बींज मिलाया जाता है और बेचा जाता है। कपास की जब गाठ बांधी जाती है तब असमें हल्का कपास मिलाकर गांठ बनाए जाती है। अससे अन्हें ज्यादा पैसा मिलता है और ज्यादा फायदा होता है। भांडवलदारी पेशे के जो लोग हैं अनुके अपर अस कानून से पाबंदी होगी। अनुके अपर ज्यादा टैक्स विठाया जाना चाहिये, यह मेरा सजेशन है। आंतरेबल मुब्हर ऑफ दी बिल ने यह बहुत ही अच्छा बिल हाअस के सामने लाया है। अन्हें असके लिये मुबारिक बाद देते हुअे मैं अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

**श्री. भगवानराव गांजवे (नांदेड) :**—अध्यक्ष महोदय, अस बिल में जो फॉक्टरी ओनर्स या कारखानदार लोग हैं, अन्हें ही गुनाहगार माना गया है, लेकिन मैं यह कहना चाहता हूँ कि कारखानदार लोग मिक्शर करनेवाले नहीं होते हैं। ग्राइंडिंग मिल ( Grinding Mill ) वाले जो लोग होते हैं वे किसी भी तरह का मिक्शर नहीं करते हैं। अस लिये यह मिक्शर करने की जिम्मेदारी कारखानदार पर आयद नहीं हो सकती। जो कपास खरेदी करने वाले लोग होते हैं वे ही ज्यादा भाव मिलने के लिये अच्छे कपास में खराब प्रकार का कपास मिलाकर फिर जिनींग के लिये या प्रेसिंग के लिये लाते हैं। अनिफीर ब्वालिटी ( Inferior quality ) का कपास सुपीरियर ब्वालिटी ( Superior quality ) में मिलाकर ही कारखाने में लाया जाता है। असके लिये कारखानदार कैसे जिम्मेदार हो सकता है?

شري بـ۔ ڈيـ۔ ديشمکهـ:۔ جانہ مارکٹ میں تولال وہی لوگ ہیں۔ اڑھتیہ بھی وہی لوگ ہیں اور کپاس بھی وہی لوگ خریدتے ہیں۔

**श्री. भगवानराव गांजवे :**—यह आपकी गलत फ़हमी है। मैं भी ऐक कपास का बेपारी हूँ और अस का बेपार करता हूँ। मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

شري بـ۔ ڈيـ۔ ديشمکهـ:۔ تو آپ معمولی تجارت कرتे ہونگے۔

**श्री. भगवानराव गांजवे :**—मामूली तिजारत नहीं करता हूँ। मेरी काफी तिजारत है। कारखानदार असके लिये कैसे जिम्मेदार हो सकते हैं, यह मेरी سमझ में नहीं आया। बेपारी ही अनिफीरियर ब्वालिटी मिलाते हैं, कारखानदारों को असके लिये जिम्मेदार नहीं समझा जा सकत। यह मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

### Announcement by the Chair

*Mr. Deputy Speaker:* There are some announcements to be made.

The first is that Amendments to L. A. Bill No. XXVI of 1954, the Hindu Women's Rights to Property (Extension to Agricultural Lands) Bill 1954, to be given by 12 noon tomorrow the 7th September, 1954.

The second announcement is that the Business Advisory Committee at its meeting to-day decided as follows :—

1. The House will meet on 8th September, 1954 at 9 a.m. instead of 2-30 p.m. and will work till 12-30 p.m.
2. There will be no meeting on 10th and 11th September and the House will meet at 2-30 p.m. on 13th September.
3. The Private Members' Business day scheduled for 11th September has been postponed to 20th September and 21st Sept. will also be a Private Members' Business day.

*The House then adjourned till Half Past Two of the Clock on Tuesday, the 7th September, 1954.*

